RNI-MPHIN/2005/14721
Po.-Malwa Division/244/2013-2016
Despatch Date - 02 April, 2016

अंक - 10 (मासिक) वर्ष - 11 अप्रैल, 2016 मूल्य 30/-

अपनों के लिए-अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

नारी शक्ति को समर्पित विशेषांक

रितू डागा

मीरा बंग

ममता बिन्नानी

विदुषी सरला बिडला सम्मान से अलंकृत

आज में आगे... जमाना है पीछे

सिंहस्थ महापर्व पर आपके स्वागत के लिये तैयार उज्जयिनी

प्रिय मित्रो

यह मेरा सौभाग्य है कि मैं मध्यप्रदेश के साढ़े सात करोड़ नागरिकों की ओर से आपको सिंहस्थ 2016 के अवसर पर आमंत्रित कर रहा हूँ। श्रद्धा एवं विश्वास का यह महापर्व मध्यप्रदेश के उज्जैन में 22 अप्रैल से 21 मई 2016 तक आयोजित होगा। सिंहस्थ जीवन का वह एकमात्र अवसर है जहाँ स्वयंभू महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन, मोक्षदायी क्षिप्रा में स्नान तथा अद्‌भुत आध्यात्मिक संगम का आनंद सब कुछ एक साथ संभव हो पाता है।

सिंहस्थ में अनेक देशों तथा पूरे भारत से श्रद्धालु आते हैं। आपके लिए यह अविस्मरणीय अनुभव होगा।

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

सिंहस्थ कुंभ महापर्व 2016 विक्रम संवत् 2073

आस्था एवं अध्यात्म का सबसे विशाल एवं अद्‌भुत उत्सव जहाँ सम्पूर्ण विश्व आमंत्रित है।

सिंहस्थ

कुंभ महापर्व उज्जैन

22 अप्रैल - 21 मई, 2016

क्षिप्रा के तट पर अमृत का मेला

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

विस्तृत जानकारी के लिए वेबसाइट देखें : www.simhasthujjain.in www.mp-tourism.com/simhastha-kumbh

D-77975 आकल्पन : म.प्र. माध्यम/2015

अपनों के लिए अपनी पत्रिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स

RNI-MPHIN/2005/14721

अंक-10 ▸▸ अप्रैल, 2016 ▸▸ वर्ष-11

प्रेरणास्रोत
स्व. श्री बंशीलाल बाहेती
स्व. श्री मदनलाल पलौड़

प्रबंध सम्पादक एवं निदेशक
श्रीमती सरिता बाहेती

सम्पादक
पुष्कर बाहेती

संरक्षक
पद्मश्री बंशीलाल राठी (चैन्नई)
श्री जोधराज लड्ढा (कोलकाता)
श्री बनवारीलाल जाजू (इन्दौर)
श्री नेमीचन्द तोषनीवाल (कोलकाता)

अतिथि सम्पादक
किरण मूंदड़ा (नागपुर)

परामर्शदाता
दिनेश माहेश्वरी (भूतड़ा)
घनश्याम करनानी (कोलकाता)

कला निदेशक
अक्षय आमेरिया

विधि सलाहकार
राजेन्द्र ईनाणी, एडव्होकेट (बागली)

सम्पादकीय सलाहकार
गोविन्द मालू (इन्दौर)
बाबूलाल जाजू (भीलवाड़ा)
बंशीलाल भूतड़ा 'किरण' (इन्दौर)

कार्यालय-
90, विद्या नगर (टेड़ी खजूर दरगाह के पीछे),
साँवेर रोड, उज्जैन-456010 (म.प्र.)
Phone : 0734-2526561, 2526761
Mobile : 094250-91161
e-mail : smt4news@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती सरिता बाहेती द्वारा ऋषि ऑफसेट, श्री माहेश्वरी भवन, गोलामण्डी, उज्जैन (म.प्र.) से मुद्रित एवं प्रकाशित।

▸ श्री माहेश्वरी टाईम्स में प्रकाशित सभी लेखों के विचारों पर सम्पादक/प्रकाशक की सहमति हो, यह आवश्यक नहीं है।
▸ सभी प्रसंगों का न्यायक्षेत्र उज्जैन (म.प्र.) होगा।

Sri Maheshwari Times
- PNB A/c. No. : 0459002100043471
  IFSC- PUNB0045900
- ICICI A/c. No. : 030005001198
  IFSC- ICIC0000300

Tariff of Membership
Rs. 800/- for Three years
Rs. 3100/- for Life Time (12 Years)

गर्व है हमें ...

'सोलर ग्रुप' ने 'आकाश' में भरी ऊँची उड़ान

माहेश्वरी कम्पनी ने ''मेक-इन-इंडिया'' में लिखा इतिहास का स्वर्णिम पृष्ठ
बनी रक्षा क्षेत्र की मिसाईल ईंधन सप्लाय करने वाली देश की प्रथम कंपनी

नागपुर। अभी तक मिसाइलों के ईंधन ''प्रोपेलेंट'' का आयात किया जाता रहा है। आपको यह जानकर खुशी होगी कि अब इसका निर्माण भारत में ही होगा। इसके साथ ही आपको अपने आपको ''माहेश्वरी'' कहने में और भी अधिक गर्व होगा, क्योंकि देश को रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की यह सौगात देने वाला भी माहेश्वरी समाज का ही उद्योग है, ''सोलर ग्रुप'', जिसके संस्थापक हैं, सत्यनारायण नुवाल। श्री माहेश्वरी टाईम्स भी श्री नुवाल को उनके योगदानों के लिए ''माहेश्वरी ऑफ द ईयर-2015'' से सम्मानित कर चुकी है।

विस्फोटक उद्यमी सत्यनारायण नुवाल की कंपनी को ऑर्डर मिला है, 300 आकाश मिसाईल में प्रोपेलेंट सप्लाय का। श्री नुवाल का ''सोलर ग्रुप'' देश का प्रथम उद्योग होगा, जो रक्षा विभाग को मिसाईल का ईंधन सप्लाय करने जा रहा है। श्री नुवाल ने इस मामले में भी देश को आत्मनिर्भर बनाने का सपना देखा था। उनके इस सपने को प्रधानमंत्री की ''मेक-इन-इंडिया'' की सोच ने और भी पंख लगा दिया। इसके लिये उनकी कम्पनी सोलर इंडस्ट्रीज इंडिया लि. द्वारा सहायक उद्योग ''इकोनॉमिक एक्सप्लोसिव्ज लि.'' की स्थापना की गई। कम्पोजिट प्रोपेलेंट का निर्माण आसान नहीं होता। यह एकल इंजीनियरिंग क्षेत्र के बलबूते की चीज नहीं है, बल्कि यह अपने-आप में एक कला भी है। अतः कम्पनी ने इसके लिये विभिन्न विशेषज्ञों के परामर्श से विस्फोटक पदार्थों की फीलिंग व प्रेसिंग के लिये देश में अपनी तरह का प्रथम ''एचएमएक्स'' प्लांट स्थापित किया। अब उद्योग न सिर्फ आकाश मिसाईल, बल्कि पिनाका व एयरबम के लिये भी विस्फोटक बनाने के लिये इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार कर चुका है। यहां पर इनके परीक्षण के लिये भी उच्चस्तरीय व्यवस्था की गई है। उल्लेखनीय है कि सोलर ग्रुप देश का सबसे बड़ा व विश्व का टॉप 10 में से एक विस्फोटक निर्माता है। उद्योग को गत दिनों ''300 आकाश'' मिसाईल के प्रोपेलेंट सप्लाय का ऑर्डर मिला है और रक्षा विभाग से और भी ऑर्डर मिलने की संभावना है। अभी तक उनकी कंपनी उद्योगों को विस्फोटक सप्लाय कर रही थी।

नारी पुज्यन्ते...

यह वाक्य प्रायः आप सुनते हैं। नारी के सम्मान के संदर्भ में। वेद वाक्य का सामान्य अर्थ भी हमारे मानस में अमिट सा अंकित हो गया है। बावजूद यदि हम नारी संवेदना को लेकर अभी-भी कोई स्पंदन महसूस नहीं करते, तो इसके पीछे का एक बड़ा सच समाज में नारी की भूमिका का मौजूदा स्वरूप भी है। पूज्य से भोग्या हो चुकी नारी के स्वरूप को मौजूदा वातावरण में और अधिक धक्का लगा है, जबकि तथाकथित समानता और स्वतंत्रता के नाम पर नारी की स्वच्छंदता आलोचना के घेरे में है। नारी स्वतंत्रता के नारे ने आज की नारी को कोई संबल नहीं दिया बल्कि वह और अधिक शोषण तथा हनन का शिकार हुई है। इस समय को वे महिलाएं भली प्रकार जानती हैं, जो इस छद्म स्वतंत्रता की शिकार हुई हैं। अब उनके सामने जीवन 'संघर्ष' बन कर रह गया है।

जरूरत इस बात की है कि नारी की छवि को पुनः स्थापित करने के लिए हमें उन महिला व्यक्तित्वों को समाज के बीच उभारना होगा, जिन्होंने समाज के सामने अपने व्यक्तित्व से ऐसी मिसाल रखी, जिसे समाज सलाम करता है। श्री माहेश्वरी टाइम्स का यह अंक उन्हीं महिलाओं को समर्पित है। इस अंक में आप समाज की ऐसी महिलाओं से परिचित होंगे, जिनका विराट व्यक्तित्व पुरुष प्रधानता को बौना साबित करने को काफी है। निश्चित तौर से उन्होंने अपने अंदर छिपी इस शक्ति को उभारा जिसे वेद ने पूज्य कहा है। उस क्षमता और सामर्थ्य का सदुपयोग किया है, जो ईश्वर ने उन्हें प्रदान की है। उन्होंने यह साबित किया कि नारी केवल पुरुष के समकक्ष ही नहीं उससे आगे है, तभी वह पूज्य है। वह अनंत और असीम संभावनाओं से भरी हुई है। बशर्ते उन्हें सही दिशा और लक्ष्य मिले।

यही कारण है कि नारी को लेकर समाज हमेशा फिक्रमंद रहा। इसी प्रयास में नारी के चारों तरफ लक्ष्मण रेखाएं खींची गईं और यह भी प्रचारित किया गया कि यदि नारी ने इन्हें लांघा तो रावण घात लगाए बैठा है। रावण का डर दिखाकर महिला को जब-जब कैद किया गया, तब-तब उसने लक्ष्मण रेखा लांघी है। जब-जब उसे विश्वास की स्वतंत्रता का संबल दिया गया, तब-तब उसने अपनी ऊर्जा से वह कर दिखाया, जिसकी कल्पना भी नहीं की जा सकती थी। आज नए समाज में नारी और समाज के बीच का आपसी विश्वास कायम रखने की सबसे बड़ी चुनौती है। खासकर उन महिलाओं को जो कुछ करना चाहती हैं। जब तक समाज उनके प्रति आश्वस्त नहीं होगा, तब तक अविश्वास का वातावरण नहीं बदलेगा। यह काम मीरा बंग, रितु डागा या ममता बियानी जैसी अनेक विभूतियां कर रही हैं। उनके कृतित्व को श्री माहेश्वरी टाईम्स परिवार "विदुषी सरला बिड़ला सम्मान" प्रदान कर स्तुति करने जा रहा है। अंक में इनके अलावा समाज की और नारी प्रतिभाओं से आप परिचित होंगे। इन्होंने अपने दम पर समाज के सामने मिसाल कायम की है। उनके प्रति समाज कृतज्ञता की मुद्रा में दिखाई देता है। यहीं आकर नारी पूज्य हो जाती है, प्रेरणीय बन जाती है। इन सभी को हमारा प्रणाम। इस अंक में अन्य स्थायी स्तंभ और पठनीय सामग्री हमेशा की तरह उपलब्ध है। अंक के बारे में अपनी राय से हमें अवगत कराना ना भूलें।

22 अप्रैल से 21 मई तक उज्जैन में सिंहस्थ का आयोजन हो रहा है। सभी माहेश्वरी बंधुओं को सिंहस्थ में आने का आमंत्रण है। यहाँ हम आप सभी के स्वागत और सेवा के लिए तत्पर हैं।

जय महेश।

सरिता बाहेती
सम्पादक

खुद से जुदा है नारी

समाजसेवा के क्षेत्र में गोंदिया की श्रीमती किरण मूंदड़ा एक बहुमुखी व्यक्तित्व हैं। आप कई संस्थाओं से जुड़ी हुई हैं। नागपुर निवासी स्व. श्री नंदकिशोर सारड़ा की पुत्री किरण का विवाह समाज सेवी गोंदिया निवासी स्व. श्री रामेश्वर मुंधडा के सुपुत्र एडवोकेट विट्ठल कुमार के साथ 1986 में विवाह हुआ। आप त्रिनयन माहेश्वरी महिला संगठन की उपाध्यक्ष, श्री बड़ी मारवाड़ माहेश्वरी महिला मंडल की प्रचार मंत्री, माहेश्वरी महिला समिति (नागपुर नगर) तथा राजस्थानी महिला मंडल की कार्यकारी सदस्या हैं। माहेश्वरी महिला समिति- गोंदिया तथा त्रिनयन माहेश्वरी महिला संगठन, नागपुर की सचिव रह चुकी हैं। इसके अतिरिक्त आप इंटरनेशनल कॉउंसिल ऑफ़ ह्यूमन राइट्स नागपुर की सदस्य, 'लक्ष्य' सामाजिक संस्था और यतिराजदेवी मांगीलाल सारड़ा वानप्रस्थ वृद्धाश्रम की संस्थापक सदस्य हैं। नवभारत और दैनिक भास्कर जैसे दैनिक हिंदी अखबारों से भी आप सक्रिय रूप से जुडी हुई हैं। कविताएँ, लेख और लघु नाटिकाएं लिखने में रूचि रखने वाली किरण मूंदड़ा की वाणी की मधुरता और आत्मविश्वास से भरे शब्द श्रोताओं के मन को छूते हैं, परिणामस्वरूप आप एक कुशल मंच संचालिका हैं। इन व्यस्तताओं के बावजूद वे अपने पारिवारिक दायित्वों को भी सफलतापूर्वक निभा रही हैं।

बहुत पुरानी बात है, एक गाँव में एक लकड़हारा अपने सात बेटों के साथ रहता था। वे आठों रोज सुबह लकड़ी काटने जंगल जाते, लकड़ियां लाकर राजा के पास देते और बदले में अनाज ले लेते। खुद की सुविधा के लिए वे सब अपने हिस्से में चने ही लेते और घर पर भी सब के अलग चूल्हे बने हुए थे, उसी पर अपने चने भुंझ कर खा लेते और पानी पीकर सो जाते। उनकी रोज की यही दिनचर्या थी।

किसी ने लकड़हारे को सुझाया कि एक बेटे की शादी कर दो। घर में स्त्री का होना बहुत आवश्यक है। बहरहाल बड़े बेटे की शादी करवा दी गई। घर में बहू को छोड़ कर सब अपने काम से निकल गए। बहू ने घर का जायजा लिया, ८ चूल्हे, चने का कचरा, पूरा घर गंदे कपड़ों और कचरे से भरा हुआ था। उसने एक किनारे का चूल्हा छोड़कर बाकि सब फोड़ दिए। तिनके जोड़ कर झाड़ू बनाई, पूरे घर को साफ किया। पड़ोसी से उधारी में आटा और दाल ली। गरम भोजन बनाया। घर के बाहर पानी और मिट्टी से लिपाई की। भोजन बनने के बाद गरम चूल्हे पर पानी रख दिया। जंगल से लकड़ी लाकर राजा को देकर चने लेते हुए ये आठों लकड़हारे घर पहुँचे। साफ सुथरा घर देख कर बहुत खुश हुए, तभी बहू ने कहा, "आप सब थके हो, गरम पानी से हाथ मुँह धोकर भोजन करने आ जाओ।" हाथ मुँह धोकर खुशी-खुशी घर में आये तो देखा सब के चूल्हे नदारद है, सिर्फ एक चूल्हा बचा है, वो भी जिस की शादी हुई उसका था। सब की खुशी काफूर। सब आपस में कानाफूसी करने लगे कि आते ही हमारे चूल्हे तोड़ दिए, अब आगे पता नहीं क्या होगा?

जैसे ही गरमागरम दाल रोटी खाई, वे तो सब भूल गए। बहुत दिनों बाद इस तरह का खाना मिला। सब को तृप्त करा कर बहू ने पूछा, "क्या आप सब को चने ही मिलते है?" सभी ने कहा, "जो अनाज चाहो वो मिलता है, पर हम सिर्फ चने भुंजना जानते हैं, तो वही लाते हैं।

फिर तो समझदार बहू ने सब को अलग-अलग अनाज बताये और देखते-देखते ही दिन फिर गए, जो टूटा-फूटा मकान कचरे का ढेर लगता था, वो घर लगने लगा। कहना न होगा कि घर में लक्ष्मी की भी कृपा होने लगी।

ये तो एक किस्सा है लेकिन हमारे आस-पास ऐसे कई किस्से होते हैं, कोई सकारात्मक तो कोई इसके विपरीत। कहते हैं न ईश्वर बहुत अच्छे मूड़ में था, तब उसने नारी की रचना की। अपनी इस सर्वोत्तम कृति को ईश्वर ने कई विशेषताओं से नवाजा। सहनशील बनाया धरती जैसा, तो ये चंचल है पवन के समान, चाँद की तरह खूबसूरत और शांत है, तो सूर्य की तरह तेजस्वी भी, फूलों सी नाजुक है, तो उसका हृदय सागर सा विशाल...। साथ ही उसे लज्जा शील, दया - करुणा की मूरत बनाया और इस तरह अपने आप मे विशेष बनी नारी की अस्मिता।

ईश्वर की अनुपम कृति नारी आज इन गुणों में से कुछ की तो प्रतिमा बन गई है किन्तु कुछ को तो कभी कभी अपने अस्तित्व का हिस्सा मानने से भी नकारती नज़र आती है। प्राचीन समय के समाज में पुरुष और नारी के क्षेत्र अलग अलग थे। मगर आज पुरुष के कंधे से कन्धा मिलाकर चल रही नारी अपना नैसर्गिक अस्तित्व खोने लगी है। सृष्टि के रचयिता ने कुछ तो सोचा होगा स्त्री और पुरुष को अलग अलग गुणात्मक योग्यता से पूर्ण करने से पहले....। स्त्री और पुरुष समाज और परिवार की धुरी हैं। किन्तु अपने आप में अपूर्ण। फिर भी मैं तो नारी को तुलनात्मक रूप से ज्यादा सक्षम मानती हूँ, क्योंकि पुरुष प्रधान कार्यों को भी आज वो निपुणता से सम्पादित कर रही है, किन्तु पुरुष ऐसा न कर पाएं है, न शायद कभी कर पाएंगे। कारण वही है - नैसर्गिक गुण..।

पुरुष की दुनिया स्त्री के चारों ओर घूमती रहती है, चाहे वो किसी भी रूप में हो, माँ, बहन, पत्नी, बेटी, या दोस्त। स्त्री अकेले बच्चों का पालन पोषण करने में सक्षम होती है, किंतु क्या आप किसी पिता से ये अपेक्षा कर सकते हैं कि वो बच्चे को माँ की तरह संभाल पाएगा। शायद पूरी तरह नहीं। ममत्व का मर्म बस माँ के पास है, पिता सबकुछ दे कर भी वो मर्म नही दे सकता। और सिक्के का दूसरा पहलू यह भी है कि शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक रूप से पुरुष जितने सशक्त होते हैं, उतनी स्त्री नहीं। इन दोनों गुणों के परस्पर संयोजन से बनता है परिवार और परिवार से समाज और संस्कृति को आधार मिलता है। नारी को अपने नैसर्गिक गुणों पर आधारित कार्यों को प्राथमिकता देते हुए अन्य कार्य करने चाहिए। संस्कृति और परिवार को सहेजने और संवारने का उत्तरदायित्व उस पर पुरुष की अपेक्षा ज्यादा है, क्योंकि वही सक्षम है। फिर... अपने आप में सर्वश्रेष्ठ नारी क्यों कोशिश कर रही है, "पुरुष बनने की" ...??

किरण मूंदड़ा
अतिथि सम्पादक

श्री आसावरी माताजी

श्री आसावरी माताजी माहेश्वरी जाति की आसावा खाँप की कुलदेवी हैं। स्थानीय निवासी भी इनके प्रति आगाध श्रद्धा रखते हैं।

श्री आसावरी माताजी का मंदिर राजस्थान के नागोर जिले में ग्राम शंखवास से 10 कि. मी. दूर स्थित आसावरी ग्राम में है। मान्यताओं के अनुसार माताजी की प्रतिमा अत्यन्त प्राचीन है। वैसे इसके बारे में विस्तृत जानकारी नहीं है।

पूजन-उत्सव

मन्दिर में नित्य तीन समय पूजन होती है। श्रद्धालु अपनी परम्परानुसार माताजी को भोग लगाते हैं। नवरात्रि के दौरान यहाँ विशिष्ट आयोजन होते हैं।

कहाँ ठहरें

छोटा स्थान होने के बावजूद सर्व सुविधायुक्त माहेश्वरी भवन एवं कलंत्री भवन दो स्थानों के साथ अतिरिक्त स्थानीय निवासियों के लम्बे-चौड़े आवास भी हैं। दोनों भवनों में वर्तमान में निजी सेकण्डरी स्तरीय विद्यालय संचालित हो रहे हैं।

प्रमुख शहरों से दूरी

मारवाड़ मूण्डवा	-	22 कि.मी.
मेड़ता सिटी	-	40 कि.मी.
नागौर	-	40 कि.मी.
खींवसर	-	40 कि.मी.
जोधपुर	-	105 कि.मी.
अजमेर	-	155 कि.मी.
जयपुर	-	360 कि.मी.

कैसे पहुंचें

अजमेर से मेड़ता रोड़ (75 कि.मी.) आकर सीधे शंखवास (40 कि.मी.) सड़क मार्ग से भी पहुँचा जा सकता है।

माहेश्वरी समाज देगा सिंहस्थ में अपनी सेवा

आवास, भोजन सहित निभाऐगा मार्गदर्शक की भूमिका

श्री माहेश्वरी टाईम्स भी सेवा के लिये तैयार

इस महाकुंभ के दौरान दत्त अखाड़ा जोन में भूखी माता मंदिर के समीप प्लाट नं. 224/4 पर "श्री माहेश्वरी टाईम्स" द्वारा भी सेवा शिविर लगाया जा रहा है। इसके द्वारा सूचना केंद्र का संचालन करते हुए समाजजनों को उनके द्वारा चाही गई हर जानकारी त्वरित रूप से उपलब्ध करवायी जाएगी। संपादक पुष्कर बाहेती ने उक्त जानकारी देते हुए बताया कि इस शिविर में आवास व्यवस्था प्रदान करने का प्रयास भी किया जा रहा है। किसी भी प्रकार की जानकारी एवं सहयोग के लिए मो. 08823-88832 तथा 09993-270298 पर सम्पर्क किया जा सकता है।

उज्जैन। भगवान महाकालेश्वर की नगरी में सिंहस्थ महाकुंभ 2016 के आयोजन की तैयारियाँ अंतिम दौर में है। आगामी 22 अप्रैल से 21 मई तक इसका आयोजन होगा। इसमें आने वाले समाजजनों की सेवा के लिये माहेश्वरी समाज के विभिन्न संगठनों ने व्यापक रूप से तैयारी की है।

इस आयोजन में देश-विदेश से करोड़ों श्रद्धालु शामिल होंगे। इनमें बड़ी संख्या में माहेश्वरी समाज भी होंगे। जो देश के विभिन्न भागों से इस महाकुंभ का पुण्य लाभ लेने यहां आएंगे। हर क्षेत्र से आने वाले इन समाजजनों को कोई परेशानी न आए, इसके लिये सिंहस्थ के दौरान तीन स्थानों पर समाज संगठनों द्वारा अपने सेवा केंद्र चलाऐं जाएंगे। यहां समाजजनों को आवास के साथ ही निःशुल्क चाय-नाश्ता व भोजन आदि की सम्पूर्ण व्यवस्था रहेगी।

माहेश्वरी मेवाड़ा थोक पंचायत

इसके अंतर्गत माहेश्वरी मेवाड़ा थोक पंचायत अध्यक्ष लक्ष्मीनारायण मूंदड़ा व सचिव अरुण भूतड़ा ने बताया कि पंचायत द्वारा सुरेश डागा व नृसिंह देवपुरा के संयोजन में शहरी क्षेत्र में ठहरने वाले समाजजनों के लिये माहेश्वरी भवन गोलामंडी में आवास व भोजन आदि की व्यवस्था की जा रही है। पंचायत द्वारा ही भूखी माता मंदिर के समीप सिंहस्थ क्षेत्र में आवंटित प्लाट क्रं. 202/2 पर भी समाजजनों के सहयोग, आवास व निःशुल्क भोजन आदि की व्यवस्था रहेगी। विस्तृत जानकारी हेतु श्याम भूतड़ा (मो. 94251-95747) से सम्पर्क कर सकते हैं।

पश्चिमांचल माहेश्वरी सभा

इसी प्रकार दत्त अखाड़ा जोन में बड़नगर रोड पर तिरुपति मंदिर के समीप प्लाट क्रं. 202/1 पर पश्चिमांचल माहेश्वरी सभा द्वारा ओमप्रकाश पलोड़ के संयोजन व महेश तोतला के नेतृत्व में शिविर लगाया जा रहा है। यहां भी समाजजनों के लिये निःशुल्क भोजन, आवास आदि की व्यवस्था अधिकतम 3 दिन के लिए रहेगी। इसके लिए डिपाजिट राशि रुपये 1000/- (वापसी योग्य) जमा करानी होगी। सभी समाजजनों को फोटो आई.डी. प्रूफ लाना अनिवार्य होगा। दिनभर हेतु क्लॉक रूम सुविधा मिलेगी। ताला आपका स्वयं का होगा। आवास हेतु पूर्व में सम्पर्क करना जरूरी है। पहले आएं पहले पाएं के आधार पर इनका पंजीयन होगा। नाश्ता प्रातः 8 से 10 बजे, भोजन प्रातः 11 से दोप. 3 बजे एवं सायं 6 से रात्रि 10 बजे तक रहेगा। अधिक जानकारी के लिए ओमप्रकाश पलोड़ (मो. 99770-03248) तथा रामचन्द्र तोतला (मो. 98275-66663, 98260-13164) से सम्पर्क किया जा सकता है।

महिला दिवस पर फल बिस्किट वितरण

वरंगल। स्थानीय वरंगल में अन्तर्राराष्ट्रीय महिला दिवस पर चन्द्रकांत मेटरनिटी हॉस्पिटल में माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा करीब 150 महिला मरीजों को फल व बिस्किट वितरीत किये गये। मंडल अध्यक्ष सुनीता मालाणी, मंत्री, मृदुबल दरक, इंद्रा दरक सोनी, संतोष दरक, कोषाध्यक्ष सरिता सोमाणी, ज्योति सोनी, अन्नू मूंदड़ा, प्रेमलता मूंदड़ा, राजस्थानी महिला मंडल अध्यक्ष श्रीमती चंदादेवी सोनी आदि ने तन मन धन से सहयोग देकर कार्यक्रम को सफल बनाया।

"जमाना 'वफादार' नहीं तो फिर क्या हुआ 'धोखेबाज' भी तो हमेशा 'अपने' ही होते हैं।"

फिरौती न देने पर बालक अभय मोदानी की हत्या

हैदराबाद। समाज सदस्य प्लास्टिक व्यापारी राजकुमार मोदानी के जुड़वा पुत्रों में से एक कक्षा 10 वीं के छात्र अभय की अपहरण के बाद हत्या कर दी गई। प्राप्त जानकारी के अनुसार अपहर्ताओं ने उसकी रिहाई के लिये 10 करोड़ रुपये की फिरौती मांगी थी। इतनी बड़ी राशि की व्यवस्था न होने न होने पर अपहर्ताओं ने उसकी हत्या कर दी। बालक का शव सिकंदराबाद रेलवे स्टेशन के निकट स्थित अलफा होटल के पास कार्टल बॉक्स से बरामद हुआ। पुलिस ने हत्यारों का सुराग देने वाले को 1 लाख रुपये का ईनाम देने की घोषणा की है। इस घटना से सम्पूर्ण समाज में शोक व रोष की लहर छा गई।

सभी ने जताया रोष

इस निर्मम हत्या के विरोध में शहर के गणमान्य लोगों ने कैंडल मार्च निकाला। इस दौरान स्मृति सभा भी आयोजित की गई। बेगम बाजार स्थित सनातन धर्मसभा परिसर में भारी संख्या में शहर के लोगों में हाथों में मोमबत्तियाँ लेकर मौन जुलूस निकाला। सनातन धर्म से आरंभ हुआ कैंडल मार्च बेगम बाग छतरी, डाकघर, किराना बाजार, मछली मार्केट सहित अन्य स्थलों से होते हुए बेगम बाजार स्थित माहेश्वरी भवन में स्मृति सभा में परिवर्तित हुआ। इस दौरान समाज के साथ ही विभिन्न संगठनों ने भी इस घटना की निंदा करते हुए हत्यारों की शीघ्र गिरफ्तारी की मांग की। इनका प्रभाव यह हुआ कि शीघ्र ही हत्यारे पकड़ में आ गये। समाज इन्हें कठोर दण्ड देने की माँग कर रहा है।

मांगलिक भवन का हुआ लोकार्पण

हरदा। श्री माहेश्वरी मांगलिक भवन बायपास रोड हरदा का लोकार्पण गत 13 मार्च को गरिमामय कार्यक्रम के साथ हुआ। मुख्य अतिथि रामकुमार भूतड़ा महामंत्री अभा माहे. महासभा थे। अध्यक्षता उपसभापति मध्यांचल रामगोपाल मूंदड़ा ने की। विशेष अतिथि रामअवतार जाजू इंदौर अध्यक्ष माहेश्वरी बोर्ड एवं प्रकाश बाहेती मुख्य चुनाव अधिकारी अभा माहे. महासभा थे। चंद्रमोन नागौरी-ग्वालियर, गोपालकृष्ण गोयदानी-भोपाल, वैद्यराज रमेश माहेश्वरी-भोपाल, श्याम होलानी-कांटाफोड़, ईश्वर बाहेती आदि विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। यह भवन 24000 वर्गफूट में निर्मित है। जिसमें 23 वातानुकूलित कमरे, 2 वातानुकूलित हॉल, 15000 वर्गफीट का गार्डन, 8000 वर्गफूट की बेसमेंट पार्किंग व लिफ्ट की व्यवस्था है। अध्यक्ष ओमप्रकाश राठी ने बताया कि रमेश सादानी, दिनेश राठी, अजय तापड़िया, जयकृष्ण चांडक, प्रशांत बांगड, अमित राठी ने पूरा समय देकर समय रहते इस संकल्प को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। लोकार्पण समारोह में खंडवा, पिपरिया, इटारसी, बनखेड़ी, खिरकिया, कन्नौद, सिवनी बानापुरा, बाबई, सोहागपुर, कांटाफोड़, सतवास, लोहारदा आदि स्थानों के प्रतिनिधियों के साथ-साथ हरदा के कई गणमान्य समाजजनों ने भी भागीदारी की।

स्पोर्ट्स कार्निवाल का हुआ आयोजन

चैन्नई। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी युवा संगठन के आह्वान पर तमिलनाडु केरल पांडिचेरी प्रादेशिक माहेश्वरी युवा संगठन द्वारा श्री माहेश्वरी स्पोर्ट्स क्लब, चैन्नई के आतिथ्य व श्री माहेश्वरी युवा मंडल, चैन्नई के सह आतिथ्य में श्री माहेश्वरी स्पोर्ट्स क्लब चैन्नई के 50 वर्ष पूर्ण होने पर अंतर्राष्ट्रीय स्पोर्ट्स कार्निवाल एबीएमव्हायएस खेल महोत्सव का आयोजन 13 से 16 मार्च तक हुआ। इसमें देशभर से करीब 350 खिलाड़ियों समेत करीब 500 लोगों की उपस्थिति थीं। इस में क्रिकेट, बेडमिंटन, टेबल-टेनिस, चेस एवं कैरम आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। 13 मार्च सायं 7.15 बजे चैन्नई के वैष्णव कॉलेज ग्राउंड में कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि के रूप में वेक्टस इंडस्ट्रीज के एमडी अतुल लड्ढा व विशिष्ट अतिथि महासभा के पूर्व महासभा के पूर्व सभापति बंशीलाल राठी की उपस्थिति में हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत में राष्ट्रीय युवा संगठन, प्रदेश संगठन, श्री माहेश्वरी स्पोर्ट्स क्लब एवं श्री माहेश्वरी युवा मंडल, चैन्नई के सभी सदस्यों ने बैंड के साथ पूरे ग्राउंड का मार्च पास्ट किया। मंचासीन अतिथियों समेत राष्ट्रीय अध्यक्ष कमल भूतड़ा, महामंत्री राजकुमार काल्या, खेल मंत्री हरिकिशन सारड़ा, निवर्तमान महामंत्री नारायण मालपानी, कोषाध्यक्ष दत्तप्रसाद तोतला, दक्षिणांचल उपाध्यक्ष प्रवीण सोमानी, संगठन मंत्री विवेक मोहता, स्पोर्ट्स क्लब अध्यक्ष अनुराग माहेश्वरी, राष्ट्रीय खेल संयोजक चंद्रप्रकाश टावरी ने मिलकर दीप प्रज्ज्वलित कर शुरुआत की।

> "ये पैसा भी अजीब चीज है
> जिसके पास नहीं है
> उसकी कोई इज्जत नहीं
> और जिसके पास है
> उसे किसी की इज्जत नहीं।"

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का किया आयोजन

बीड। महाराष्ट्र प्रदेश माहेश्वरी महिला संगठन के तत्वावधान एवं बीड जिला माहेश्वरी महिला संगठन के संयोजन में 5 व 6 मार्च को महिला दिवस के अवसर पर सिंधू से बिंदू का मिलन ''नारी समागम 2016'' एवं तृतीय कार्यकारिणी की बैठक के साथ मराठवाडा अधिवेशन सम्पन्न हुआ। उद्घाटन अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष सुशीला काबरा उपस्थित थी। अतिथियों का स्वागत माथे पर बोर, हाथ पर मेहंदी और कुंकुम तिलक से किया गया। जिलों द्वारा राष्ट्रीय समस्याओं का सचित्र बैनर प्रेजेंटेशन एवं समस्या निवारण की शाब्दिक समीक्षा के साथ उनका मंच व सभागृह पर अभिवादन, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ का स्लोगन, रंगोली व रोचक नाटिका आदि की प्रस्तुति दी गई। आत्मनिर्भर महिलाओं व केवल बेटियों वाली माताओं आदि का सम्मान किया गया। आभार प्रदेशाध्यक्ष पुष्पा तोष्णीवाल ने माना।

राघव बने सीए

उज्जैन। समाज के वरिष्ठ घनश्याम व चंद्रकांता सोमानी के पौत्र व प्रदीप-दीपाली सोमानी के सुपुत्र राघव सोमानी ने सी.ए.की परीक्षा उत्तीर्ण की। इस उपलब्धि पर समस्त स्नेहीजनों ने हर्ष व्यक्त किया।

> "दो हाथों से हम
> पचास लोगों को नहीं मार सकते
> पर दो हाथ जोड़कर
> हम करोड़ों लोगों का
> दिल जीत सकते हैं।"

अजमेरा हॉस्पिटल

स्त्री प्रसूति, निसंतानता, शिशु एवं नेत्र विभाग

यू.आई.टी. के पास, अजमेर रोड, सुभाष नगर, भीलवाड़ा (राज.)
फोन- 01482-265100, मो. 95495-98620, 96675-37990

डॉ. आशीष अजमेरा
M.B.B.S., M.S.
स्त्री-प्रसूति,
निसंतानता रोग विशेषज्ञ

डॉ. शीतल अजमेरा
M.B.B.S., D.N.B.,
F.V.R.S., F.A.E.H.
नेत्र एवं रेटिना विशेषज्ञ

डॉ. अतुल हेड़ा
M.B.B.S., MD
नवजात एवं शिशु रोग विशेषज्ञ

उपलब्ध सुविधाएँ

- प्रसव पूर्व जाँच व उपचार।
- नार्मल व सिजेरियन डिलेवरी की 24 घंटे आपातकालीन सेवाएँ।
- सफेद पानी, नलों में दर्द, अत्यधिक रक्त स्राव का उपचार।
- अनियमित महावारी का बिना ऑपरेशन के ईलाज।
- अण्डाशय में सूजन, रसोली की जाँच व ईलाज।
- शरीर का बाहर निकलने का ऑपरेशन से, बिना बच्चेदारी निकाले ईलाज।
- बच्चेदानी के मुँह के कैंसर की जाँच, ईलाज व टीका।

उपलब्ध सुविधाएँ

- नेत्र रोग व रेटिना का उपचार।
- शुगर व बीपी बढ़ने पर आँखों में असर की जाँच व ईलाज।
- पर्दे की जगह से हटने की जाँच व ईलाज।
- आँख में लोहे का कण, कचरा व घाव का ईलाज।
- बढ़ती उम्र के साथ होने वाली आँखों की बीमारी की जाँच व उपचार।
- बिगड़ा हुआ मोतियाबिन्द का उपचार।
- समय पूर्व जन्मे बच्चे की आँखों की जाँच व उपचार।
- लेजर द्वारा आँखों का इलाज।
- आँखों की इंजियोग्राफी।
- आँखों की बीमारियों की जाँच व ऑपरेशन।

फोटोथेरेपी E.N.T. वार्मर टीकाकरण भर्ती की सुविधा।
कॉटेज वार्ड की सुविधा। एम्बुलेंस की सुविधा।
ICU गहन चिकित्सा इकाई। मेडिकल स्टोर व लेबोरेट्री की सुविधा।
सभी प्रकार के जनरल ऑपरेशन की सुविधा।
बच्चों की समस्त बीमारियों की जाँच व ईलाज।

श्री माहेश्वरी टाईम्स के स्वामित्व के बारे में जानकारी देखे नियम-4

प्रकाशक का नाम	श्री माहेश्वरी टाईम्स (मासिक)
भाषा	हिंदी
प्रकाशन की अवधि	अंग्रेजी महीने की 28 तारीख
प्रकाशक का नाम	सरिता बाहेती
मुद्रक का नाम	सरिता बाहेती
संपादक का नाम	पुष्कर बाहेती
क्या भारत का नागरिक है?	हाँ
मुद्रक	ऋषि ऑफसेट माहेश्वरी भवन, गोलामंडी, उज्जैन (म.प्र.)
प्रकाशन का स्थान	माहेश्वरी भवन, गोलामंडी, उज्जैन (म.प्र.)
उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचारपत्र के स्वामी हो	सरिता बाहेती

तथा पंजी के एक प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार हो।

मैं सरिता बाहेती एतद् द्वारा घोषित करती हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये विवरण सत्य हैं।

उज्जैन

मूंदड़ा ने व्यवसायियों को दिया मार्गदर्शन

अहमदाबाद। दक्षिण गुजरात चेंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज की संस्था जीएफआरआरसी के तत्वावधान में आयोजित सेमिनार में जीएफआरआरसी के अध्यक्ष गिरधर गोपाल मूंदड़ा ने व्यवसायियों को मार्गदर्शन दिया। एक्सपोर्ट वीवर संवाद कार्यक्रम में श्री मूंदड़ा ने कहा कि मंदी से निकलने के लिए हमें माइंड सेट बदलना हेगा व न्यू टेक्नोलॉजी के माध्यम से जीरो डिफेक्ट उत्पाद तैयार करें तो ही हम एक्स्पोर्ट के क्षेत्र में आगे बढ़सकते हैं। इस अवसर पर प्रदेश अध्यक्ष मदनमोहन पेडीवाल व समाज के कई गणमान्यजन भी उपस्थित थे।

श्रद्धा शिक्षारत्न से सम्मानित

राजसमंद। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर चार्टर्ड एकाउंटेंट परीक्षा में प्रांतीय स्तर पर दसवां स्थान प्राप्त करने वाली नाथद्वारा निवासी श्रद्धा सोमानी को अंतर्राष्ट्रीय माहेश्वरी कपल क्लब राजस्थान द्वारा "माहेश्वरी शिक्षा रत्न अवार्ड 2016" से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता क्लब की राष्ट्रीय सचिव अनिता-डॉ. अशोक सोडाणी ने की। मुख्य अतिथि क्लब के प्रांतीय अध्यक्ष सुमन-सुरेश सोनी थे। समाज सदस्य मधु-वासुदेव सोमानी की सुपुत्री श्रद्धा ने पूर्व में भी राजसमंद जिले में प्रथम स्थान प्राप्त किया था, जिसके लिये जिला प्रशासन द्वारा उन्हें सम्मानित किया जा चुका है।

माहेश्वरी पुनः बने अध्यक्ष

शाजापुर। समाज सदस्य कृष्णवल्लभ चांडक के निवास पर गत 20 मार्च को माहेश्वरी समाज की बैठक आयोजित की गई। इसमें सर्वसम्मति से पूर्व अध्यक्ष कमल माहेश्वरी पुनः अध्यक्ष चुने गये। सर्वानुमति से ही सचिव दिनेश माहेश्वरी, कोषाध्यक्ष अमृतलाल जी, उपाध्यक्ष कृष्णवल्लभ चांडक (माहेश्वरी) तथा नंदकिशोर सोनी चुने गये। शीघ्र ही कार्यकारिणी का गठन किया जाएगा।

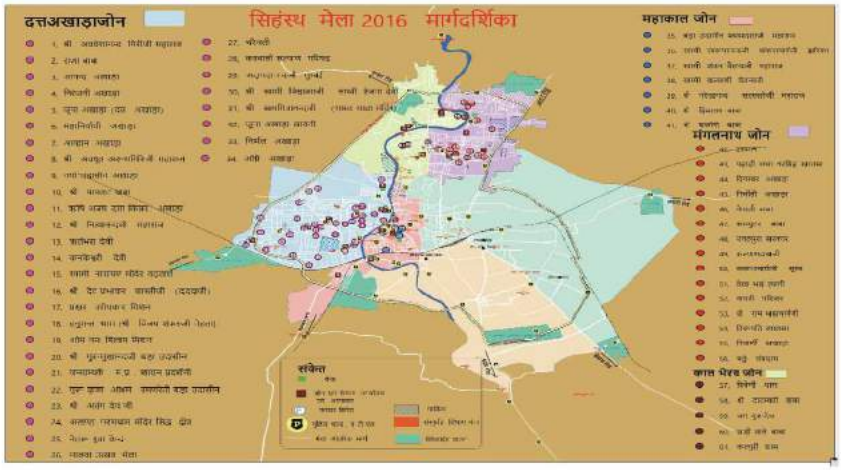

सर्जिकल शिविर का हुआ आयोजन

सीकर। माहेश्वरी युवा मंच द्वारा गत 20 मार्च को माहेश्वरी भवन में विशाल सर्जिकल शिविर लगाया गया। मंच सचिव सत्य सोमानी ने बताया कि शिविर में डॉ.पी.सी. गर्ग और उनकी टीम ने सेवा दी। इसमें विभिन्न तरह की सर्जरी संबंधी निःशुल्क परामर्श दिया गया व रियायती दरों पर ऑपरेशन हेतु रोगियों का चयन किया गया। शिविर संयोजक पवन बियानी और मंच अध्यक्ष दिनेश काबरा ने आभार व्यक्त किया।

जनप्रतिनिधि का किया सम्मान

वरंगल। ग्रेटर म्युनिसिपल कारपोरेशन के चुनाव में टीआरएस के निर्वाचित पार्षद (कॉरपोरेटर) ननपुनेनी नरेंदर का माहेश्वरी समाज वरंगल एवं प्रगतिशील मारवाड़ी समाज द्वारा उनके आवास पर सम्मान किया गया। इस कार्यक्रम में समाज के अध्यक्ष प्रहलाद सोनी, मंत्री संपत कुमार लाहोटी, उपाध्यक्ष रामकिशोर मणियार, गोपीकिशन लाहोटी, राजेश कुमार सोनी, आ. प्रा.म. महासभा दक्षिण आँचल के उपाध्यक्ष रमेशचंद बंग, सह मंत्री नवलकिशोर मणियार, गिरधर सोमाणी, युवा मंच के अध्यक्ष संदीप मूंदड़ा सहित कार्यकारणी के कई सदस्य उपस्थित थे।

"आशावादी व्यक्ति हर आपदा में एक 'अवसर' देखता है
लेकिन निराशावादी व्यक्ति हर अवसर में एक 'आपदा' देखता है।"

शरद बागड़ी अचीवर्स अवार्ड से हुए सम्मानित

नागपुर। रोटरी डिस्ट्रिक्ट गर्वनर द्वारा अचीवर्स अवार्ड फॉर आउटस्टैंडिंग सर्विस टू सोसयटी' से ख्यात समाजसेवी शरद बागड़ी को सम्मानित किया गया। रोटरी क्लब ऑफ नागपुर ईलाइट के इस वार्षिक कार्यक्रम में रोटरी इंटरनेशनल डिस्ट्रिक्ट 3030 के डिस्ट्रिक्ट गवर्नर डॉ. निखिल किबे, फर्स्ट लेडी आरती किबे असिंस्टेट गवर्नर मनोहर गोल्हर के हाथों से यह अवार्ड प्रदान किया गया। उल्लेखनीय यह है कि शरद बागड़ी शहर की विभिन्न सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हैं तथा सामाजिक कार्यों के लिए सभी संस्थाओं से पुरस्कृत किये गए हैं।

विवाह बाद राधिका ने किया बीएचएमएस

औरंगाबाद। अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी सभा के "बेटी ब्यावो और बहू को पढ़ाओ" के संदेश का सही प्रयोग औरंगाबाद के दरक परिवार ने किया। यहां के संतोष रामबिलास दरक के पुत्र रितेश दरक का विवाह औरंगाबाद निवासी राठी परिवार की सुपुत्री राधिका राठी से 2013 में हुआ था। ससुराल के प्रोत्साहन से उन्होंने बीएचएमएस अंतिम वर्ष की परीक्षा इसी वर्ष 61 प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण की।

माहेश्वरी मण्डल द्वारा होली का हुआ स्नेह मिलन

मुर्तीजापुर। स्थानीय माहेश्वरी मंडल द्वारा होली मिलन कार्यक्रम मंडल अध्यक्ष सविता डागा ने निवास 'गीताधाम' पर आयोजित किया गया। आरती के पश्चात सभी ने दांडिया एवं फूलों की होली खेलकर खुशियाँ बटोरी। इस उपलक्ष में रंगों पर आधारित प्रतियोगिताऐं आयोजित की गयी थी। सविता डागा द्वारा की गई भगवन की सजावट भी कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण रही। नाश्ता एवं ठंडाई से होली मिलन का समापन किया गया।

नववर्ष का किया स्वागत

मुर्तीजापुर। स्थानीय माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा बियाणी जी में नववर्ष के उपलक्ष में स्नेहभोज का आयोजन किया गया था। इसमें सभी सदस्यों ने सपरिवार हिस्सा लिया। महिला मंडल सदस्यों द्वारा बनाये गये दाल-बाटी-चूरमे का भगवान को भोग लगाकर कार्यक्रम की शुरुआत की गई। हर वर्ष इसी तरह के आयोजन की महिला मंडल सदस्यों ने इच्छा भी व्यक्त की। सभी सदस्यों के सहयोग से कार्यक्रम सफल हुआ।

माहेश्वरी क्लब ने ग्रहण की पद की शपथ

वाराणसी। माहेश्वरी क्लब का 38वाँ दायित्व ग्रहण समारोह गत 28 फ़रवरी को पाणिनी कन्या विद्यालय के प्रांगण में मुख्य अतिथि एस.के. कश्यप- डी.आर.एम. उत्तर पूर्व रेलवे तथा विशिष्ट अतिथि ए.के. अग्रवाल- विंग कमांडर एयर फोर्स के सान्निध्य में संपन्न हुआ। सत्र 2015 के अध्यक्ष रवि सारडा ने सभी सहयोगी संगठनों और सहयोगी युवा कार्यकर्ताओ का आभार व्यक्त किया। नवीन सत्र 2016 के अध्यक्ष मनोज दुजारी के नेतृत्व में मंत्री आनंद झँवर, कोषाध्यक्ष मनोज धूत एवं अन्य पदाधिकारियों को पद की शपथ दिलाई गयी। इस अवसर पर क्लब द्वारा प्रथम बार EACH ONE - TEACH ONE की थीम पर वार्षिक कैलेंडर का विमोचन अतिथियों के कर कमलों से कराया गया। अतिथियों का स्वागत गौरव राठी ने किया। कार्यक्रम का संचालन रितेश खटोड़ ने किया। कैलेंडर के सफल प्रकाशन हेतु प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी शुभकामनाएँ भेजीं।

"सत्य को सदैव सूली पर लटकाए जाते देखा और असत्य को हमेशा सिंहासन पाते देखा।"

परवाल बने कन्फडरेशन उपाध्यक्ष

जयपुर। पूर्वोत्तर राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के प्रदेश अध्यक्ष एवं बैंक ऑफ राजस्थान रिटायर्ड स्टॉफ सोसायटी के महामंत्री राधेश्याम परवाल ऑल इण्डिया बैंक पेंशनर्स एंड रिटायरीज कन्फडरेशन की हाल ही गठित राजस्थान स्टेट यूनिट के उपाध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं। उक्त जानकारी देते हुए प्रदेश मंत्री राजेंद्रकुमार मंत्री ने बताया कि इस उपलब्धि पर संगठन के समस्त पदाधिकारियों में हर्ष व्याप्त है।

महेश सर्कल का किया भूमिपूजन

नीमच। गत 28 फरवरी को स्थानीय माहेश्वरी समाज द्वारा महेश सर्कल का भूमि पूजन किया गया। महेश सर्कल बनने के बाद समाज भवन का पता भी महेश मार्ग हो जायेगा। नीमच के विधायक दिलीपसिंह परिहार एवं नगर पालिका अध्यक्ष राकेश जैन ने भूमि पूजन किया। इस अवसर पर समाज अध्यक्ष ओमप्रकाश मंत्री, सचिव रमेशचन्द्र सोनी, जिलाध्यक्ष दिनेश लड्ढा, माणकचन्द बिड़ला, संजय बाहेती, महेश लाठी आदि कई गणमान्य जन उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन चंचल बाहेती ने किया। आभार समाज सचिव रमेशचन्द्र सोनी ने माना।

केला बने व्यापार मंडल अध्यक्ष

जैसलमेर। वस्त्र व्यापार मण्डल की आम सभा में मनोहरलाल केला वस्त्र व्यापार मण्डल के अध्यक्ष चुने गए। उनके साथ ही भीखूलाल करवा को कोषाध्यक्ष व ओम प्रकाश राठी को उपाध्यक्ष चुने गए।

> मेहनत की फसल
> आप ही काटेंगे,
> सदैव ऐसा नहीं होता
> हम आम खाते हैं,
> पर हमने पेड़ नहीं लगाये थे।

हनुमत रामायण कथा का हुआ आयोजन

भीलवाड़ा। श्री बालाजी मंदिर महिला मण्डल शास्त्रीनगर के छटे वार्षिकोत्सव के अवसर पर भीलवाड़ा में पहली बार श्री हनुमत रामायण कथा का आयोजन माहेश्वरी भवन शास्त्रीनगर में हुआ। उक्त जानकारी देते हुए मंजू मोदानी, उमा करनानी व आशा कासट ने बताया कि इस अवसर पर 27 फरवरी को संगीतमय सुन्दरकाण्ड व 28 फरवरी को भजन संध्या का आयोजन किया गया। इस अवसर पर हजारों भक्तों ने कथा का रसपान किया। इस कार्यक्रम में शास्त्रीनगर माहेश्वरी सभा, युवा संगठन, महिला संगठन व महेश मित्र मण्डली का विशेष सहयोग रहा।

सामूहिक रूप से हुआ हल्दी-कुंकु का आयोजन

मुर्तीजापुर। स्थानीय माहेश्वरी महिला मंडल व वरिष्ठ महिला मंडल ने संयुक्त रूप से माहेश्वरी समाज की महिलाओं के लिये कृष्णा सिकची के निवास पर सविता डागा की अध्यक्षता में हल्दी-कुंकु कार्यक्रम आयोजन किया गया। इसमें समाज की कई महिलाओं ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। इस उपलक्ष में वन मिनट स्पर्धाओं का भी आयोजन किया गया था। मजेदार उखाणो ने कार्यक्रम में चार चाँद लगाये। तिलगुड व वाण वितरण से कार्यक्रम का समापन हुआ।

माहेश्वरी महिलाएं बनी विजेता

अलीराजपुर। गत 8 मार्च को महिला दिवस के अवसर पर असाडा राजपूत समाज की महिलाओं के द्वारा अंताक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें 6 टीमों ने हिस्सा लिया, जो क्रमशः असाड राजपूत समाज, माहेश्वरी समाज, राठोड़ समाज, ब्राह्मण समाज, गुप्ता समाज, जैन समाज थी। प्रत्येक टीम में 8 सदस्यों द्वारा अंताक्षरी प्रतियोगिता में हिस्सा लिया गया। सभी टीमों को हराकर माहेश्वरी समाज अलीराजपुर की महिलाएं अंताक्षरी प्रतियोगिताएं में विजेता बनी। इस टीम में विनीता नगंवाडिया, रीना बाहेती, मोनिका नगंवाडीया, मोनिका कोठारी, सुमन थेपड़िया, अंतिम बाहेती, दुर्गा बाहेती, एवं शिखा थेपड़िया की सहभागिता रही ।

एम.डी.एस. स्कूल ने मनाया 20वाँ स्थापना दिवस

उदयपुर। शहर के प्रतिष्ठित स्कूल एम.डी.एस. (मोहन देवी सोमानी) ने अपना 20वाँ स्थापना दिवस मनाया। स्कूल निर्देशक डॉ. शैलेन्द्र सोमानी ने बताया कि इस अवसर पर संस्थापक डॉ. रमेश सोमानी, अध्यक्ष रामेश्वर मंडोवरा, रोशनलाल गट्टानी आदि ने इनफॉर्मेशन बुलेटिन का विमोचन भी किया।

चीतों को बचाने के लिए उठाई आवाज

भीलवाड़ा। पीपुल फॉर एनिमल्स के प्रदेश प्रभारी बाबूलाल जाजू ने बताया कि प्रदेश के जंगलों में वन विभाग द्वारा पिछले एक वर्ष में वन्य जीवों के लिए पेयजल व्यवस्था नहीं किये जाने से 150 के लगभग चीतों को अपनी जान गंवानी पड़ी है तथा कई चीतों तो जंगलों से कस्बों में पानी की तलाश में आते वक्त सड़क दुर्घटना से वाहनों की चपेट में आकर मारे जा चुके हैं। श्री जाजू ने कहा कि सरकार इंसानों के लिए ट्रेन से तथा टैंकरों से पानी पहुँचाकर प्यास बुझा रही है, वहीं पैंथर सहित अन्य वन्य जीव भोजन-पानी की तलाश में दर-दर भटकर बेमौत मारे जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि तेज पड़ती गर्मी के चलते पानी की समस्या और बढ़ने वाली है। सरकार की लापरवाही से वन्यजीवों की जान संकट में है। श्री जाजू ने मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर प्रदेश के जंगलों के टंकी में नियमित रूप से पानी से भरवाने की गुहार की है।

> "जीतने वाले कहते हैं कि मुझे कुछ करना है और हारने वाले बोलते हैं कि कुछ होना चाहिए"

बागड़ी ने किया मशीन का उद्घाटन

नागपुर। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में नागफेम जेसिस दवारा लक्ष्मीनगर स्थित पुलिस ट्रैनिंग सेंटर में 'स्वच्छ भारत व बेटी बचाओ, पढ़ाओ' अभियान के तहत वहाँ प्रशिक्षण ले रही 1300 महिला प्रशिक्षु पुलिस कर्मियों के लिए कार्यक्रम रखा गया। मुख्य अतिथि वरिष्ठ समाजसेवी शरद गोपीदास बागड़ी थे। जेसिस की पूर्व अध्यक्ष धारणी सेलारकर ने श्री बागड़ी का परिचय देकर स्वागत किया। इस अवसर पर महिला प्रशिक्षणार्थियों के लिये सेनिटरी नेपकिन डिस्ट्रोयर मशीन का उद्घाटन श्री बागड़ी व भारती बागड़ी के हाथों हुआ। प्रकल्प अधिकारी शुभांगी बोरकर ने शरद बागड़ी को मोमेन्टो भेंटकर आभार प्रकट किया।

महिला अधिकारों पर हुई विचार गोष्ठी

जयपुर। जिला माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा 29 फरवरी को महेश अस्पताल के सभागार में 'महिला अधिकारों' पर एक विचार गोष्ठी आयोजित हुई। गोष्ठी की प्रमुख वक्ता सुमन शर्मा अध्यक्ष राजस्थान राज्य महिला आयोग ने उद्बोधन में बताया कि महिलाएं पुलिस में नहीं जाना चाहे तो महिला आयोग को भी सूचना दे सकती हैं। आयोग तुरंत कार्रवाही करता है। मुख्य वक्ता राज्य महिला आयोग की पूर्व अध्यक्ष प्रो. लाड कुमार जैन ने ग्रामीण क्षेत्रों पर चिंता जताई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महेश मेडिकल रिलीफ सोसायटी (महेश अस्पताल) के अध्यक्ष श्याम सुन्दर डागा थे। अध्यक्षता जयपुर जिला माहेश्वरी महिला मंडल की अध्यक्ष उमा परवाल ने की। श्रीमती परवाल ने सभी अतिथियों, उपस्थित महिलाओं एवं विभिन्न संगठनों के गणमान्य पदाधिकारियों का स्वागत किया। महेश अस्पताल के सचिव शंकरलाल राठी ने अस्पताल में उपलब्ध सुविधाओं के सम्बन्ध में जानकारी देते हुए बताया कि 'पन्नाधाय योजना' के अंतर्गत अस्पताल में जन्म लेने वाली प्रत्येक कन्या के नाम से रुपये 2100 /- का फिक्स डिपॉजिट ब्राण्ड बैंक से जारी कर दिया जाता है, जिसकी राशि वयस्क होने पर उसको ब्याज सहित मिल जायगी । संगठन की ओर से श्रीमती शर्मा एवं श्रीमती जैन का स्मृति चिन्ह भेंटकर सम्मान किया गया।

31वीं वार्षिक बैठक में हुए भूतड़ा समिति के चुनाव

जोधपुर। अखिल भारतीय भूतड़ा समिति की आम बैठक व पारितोषिक वितरण समारोह गत दिनों जालोरी गेट के अंदर स्थित माहेश्वरी भवन में मुख्य अतिथि रामकुमार भूतड़ा-महामंत्री अभा माहेश्वरी महासभा, विशिष्ट अतिथि राजू भूतड़ा सीनियर वाणिज्य प्रबंधक रेलवे एवं समाजसेवी नवल किशोर भूतड़ा के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। सर्वप्रथम कुलदेवी खिंवज मातेश्वरी की पूजा तथा संस्थापक मोहनलाल मोदी का माला पहनाकर अभिनंदन किया गया। समारोह में प्रतिभावान 55 छात्र-छात्राओं को शैक्षणिक व प्रतियोगिता पुरस्कार कमला देवी धर्मपत्नी स्व. श्री रामदयाल भूतड़ा जोधपुर की तरफ से प्रदान किये गये। सीनियर सैकेंडरी स्कूल में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाली वीना-ओमप्रकाश भूतड़ा जैसलमेर को धनराज भूतड़ा द्वारा गोल्ड मेडल प्रदान किया गया। समारोह में समाज के वरिष्ठों को साफा व शाल पहनाकर श्री श्रीफल एवं गीता प्रदान कर सम्मानित किया गया। पिछले वर्ष जिन परिवार में पुत्री जन्म हुआ उनको भी सम्मानित किया गया। मंच संचालन एमडी भूतड़ा एवं राजेंद्र भूतड़ा द्वारा किया गया। अध्यक्ष डॉ. महावीर प्रसाद ने आभार व्यक्त किया। इसी के साथ समाज के पदाधिकारियों के त्रेवार्षिक चुनाव भूतड़ा समिति के संरक्षक एवं चुनाव अधिकारी मोहनलाल भूतड़ा के निर्देशन में सम्पन्न हुए। इसमें देवीकिशन भूतड़ा सर्वसम्मति से अध्यक्ष नियुक्त किये गये। उपाध्यक्ष भंवरलाल भूतड़ा, सचिव दूसरी बार निर्विरोध सुरेशचंद्र भूतड़ा, कोषाध्यक्ष राकेश भूतड़ा चुने गये। नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को पद की शपथ भी दिलवाई गई।

बरखा को उत्कृष्ट ड्रेस डिज़ाइनर पुरस्कार

शेवगाँव। अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर राष्ट्रवादी महिला कांग्रेस द्वारा आयोजित सम्मान समारोह में बरखा सचिन बाहेती को उत्कृष्ट ड्रेस डिज़ाइनर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उल्लेखनीय है कि श्रीमती बाहेती शहरों से प्रशिक्षण प्राप्त कर बुटीक चलाने के साथ ब्यूटी पार्लर प्रशिक्षण भी वर्ष 2011 से प्रदान कर रही हैं।

प्रगति मंडल ने किया वनभोज

डांडेली। श्री माहेश्वरी प्रगति मंडल द्वारा शहर से करीब 12 किमी दूर जंगल में वन भोज का आयोजन किया गया। करीब 75 सदस्यों ने इसमें भाग लिया। कार्यक्रम में विभिन्न खेल व सर्वश्रेष्ठ कपल, अंताक्षरी आदि मनोरंजक कार्यक्रम आयोजित किए गये। कार्यक्रम में मन्नूलाल कोठारी, अर्चना बाहेती व भावना राठी का विशेष सहयोग रहा।

एसोसिएट चेयरमेन बने गोपाल राठी

रतलाम। सी. ए. गोपाल राठी का चार्टेड अकाउंटेड एसोसिएट चेयरमेन बनने पर स्थानीय माहेश्वरी समाज ने सम्मान किया। अध्यक्ष माधव काकानी, उपाध्यक्ष डॉ. बी.एल. तापड़िया, प्राध्यापक डॉ. सतीश लड्ढा, सचिव नरेंद्र बाहेती, द्वारकाधीश (पप्पू भैय्या) भंसाली, ओमप्रकाश झंवर, संतोष कुमार काबरा, बाबूलाल राठी, सतीश मारोठिया, सुनील लाठी, आदि ने पुष्पमाला पहनाकर उनका अभिनंदन किया। आभार नरेंद्र बाहेती ने माना।

> माफी मांगने का मतलब यह नहीं होता कि आप गलत हैं और दूसरा सही। इसका मतलब होता है उस रिश्ते की 'स्वाभिमान' से ज्यादा 'कदर' करते हैं।

होली के रंग - कान्हा के संग सम्पन्न

राजस्थानी। महिला संगठन इसमियाँ बाजार द्वारा 'होली के रंग-कान्हा के संग' कार्यक्रम रामदेव बाबा अष्टकोटि मंदिर में आयोजित किया गया। संगठन अध्यक्ष सुमित्रा राठी व मंत्री सुधा लाहोटी ने बताया कि संगठन द्वारा राधा- कृष्ण नृत्य, डांडिया, गरबा, होली के रसिया के भजन इत्यादि कार्यक्रम आकर्षण का केन्द्र रहे। कोषाध्यक्ष सुमित्रा राठी, सहमंत्री पद्मा मूंदड़ा, सहकोषाध्यक्ष इंद्रा भराड़िया, किरण राठी, लीला राठी, लक्ष्मी मालानी आदि समस्त सदस्याएँ उपस्थित थीं। संयोजिका संगीता मालाणी, उर्मिला भट्टड़, सरला मणियार, विष्णु कान्ता टावरी का सराहनीय सहयोग रहा।

भीलवाड़ा में भी महेश बैंक देगी सेवा

विस्तार योजना के अंतर्गत गाँधी नगर में 41वीं शाखा का हुआ शुभारंभ

भीलवाड़ा। प्रतिष्ठित बहुराज्यीय सहकारी "महेश बैंक" ने विभिन्न राज्यों में कदम रखते हुए अपनी 41 वीं शाखा की शुरुआत वस्त्र नगरी भीलवाड़ा में कर दी। इस से माहेश्वरी समाज व स्थानीय उद्यमियों में उत्साह का माहौल है।

महेश बैंक की 41 वीं शाखा का शुभारंभ गत दिनों गांधी नगर में हुआ। इस अवसर पर अतिथि के रूप में उपस्थित संगम ग्रुप के चेयर मेन व अ.भा. माहेश्वरी महासभा के पूर्व सभापति रामपाल सोनी ने कहा कि बैंक नई टेक्नोलॉजी के साथ ग्राहकों को सेवाएं दे। आरसीएम के चेयरमेन त्रिलोकचंद छाबड़ा ने कहा कि बैंक ईमानदारी, निष्ठा व पारदर्शिता से कार्य करेगा तो सफलता अपने आपके द्वार पर खड़ी होगी। कंचन ग्रुप के चेयरमेन लादूलाल बांगड़ ने बैंक की प्रगति की कामना करते हुए कहा कि इससे उद्यमियों को लाभ मिलेगा। नगर परिषद सभापति ललिता समदानी ने हर संभव सहयोग का आश्वासन देते हुए परिषद का खाता इस बैंक में खुलवाने की घोषणा की। महासभा के महामंत्री रामकुमार भूतड़ा ने कहा कि वस्त्रनगरी में बैंक खुलना बैंक व उद्योगपतियों दोनों के लिये लाभदायक होगा। यूआईटी की विशेषाधिकारी निमिषा गुप्ता व भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो के अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक राजेश गुप्ता ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर बैंक चेयरमेन पुरुषोत्तमदास मानधना ने बताया कि बैंक की स्थापना 9 अगस्त 1978 में हुई। वर्तमान में इसकी तेलंगाना में 34, आंध्रप्रदेश में 4 व महाराष्ट्र में 1 तथा राजस्थान में जयपुर व भीलवाड़ा में एक-एक शाखा कार्यरत हैं। रमेश कुमार बंग ने बैंक की जानकारी देते हुए बताया कि बैंक 2650 करोड़ का व्यापार कर रही है। सभी शाखाएं ऑनलाईन हो चुकी हैं। बैंक की शेयर पूंजी 32 करोड़ है और शेयर होल्डर 31 हजार 500 हैं। इस कार्यक्रम का संचालन प्रबंधक निदेशक उमेशचंद्र असावा ने किया। इस अवसर पर समाज के पदाधिकारियों ने नगर अध्यक्ष कैलाश कोठारी, प्रदेश अध्यक्ष राधेश्याम सोमानी, महासभा के उपाध्यक्ष आरएल नौलखा, महेश सेवा समिति के अध्यक्ष राधेश्याम चेचाणी, महासभा कार्य समिति सदस्य देवकरण गग्गड़, पुष्कर सेवा समिति के उपाध्यक्ष अनिल बांगड़ व सत्यनारायण डाड, पूर्व सभापति नगर परिषद अनिल बल्दवा आदि द्वारा बैंक के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स का माल्यार्पण कर सम्मान किया गया।

बसंत बहार का हुआ आयोजन

नाथद्वारा। स्थानीय माहेश्वरी महिला मंडल द्वारा गत माह में सरस्वती राठी की अध्यक्षता में बसंत बहार उत्सव का आयोजन माहेश्वरी पंचायत भवन में किया गया। इसमें बसंत की रानी प्रतिस्पर्धा रखी गई। कार्यक्रम में दक्षिणी राजस्थान प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन की अध्यक्ष पुष्पा राठी एवं राजसमंद जिला अध्यक्ष सुधा राठी उपस्थित थीं। मंडल सचिव पायल चेचानी ने आभार व्यक्त किया।

शादी की वर्षगाँठ पर नेत्रदान संकल्प

बूंदी। समाज सदस्य सौरभ लखोटिया ने शादी की नवीं वर्षगांठ पर नेत्रदान करने की ठानी तो उनकी पत्नी ने भी साथ दिया। सौरभ और रेखा ने दो दिन पूर्व ही इंडिया फाउंडेशन में जाकर संकल्प पत्र भर दिया। उनके निर्णय में उनके माता-पिता ने भी उनको साथ दिया।

> "मनुष्य अपनी क्षमताओं की कभी कदर नहीं करता, बल्कि हमेशा उस चीज की आस लगाये रहता है जो उसके पास नहीं है।"

खेलकूद प्रतियोगिताओं का हुआ आयोजन

वांरगल। माहेश्वरी समाज वरंगल द्वारा महेश नवमी के उपलक्ष्य पर खेलकूद प्रतियोगिताएँ आयोजित की जा रही हैं। इसके अंतर्गत पिछले एक महीने से क्रिकेट प्रतियोगिताएँ आयोजित की जा रही हैं। फाइनल मैच काकतीया मेडिकल कॉलेज के विशाल मैदान में आयोजित किया गया। उद्घाटन मुख्य अथिति आंध्र प्रादेशिक माहेश्वरी सभा के दक्षिण तेलंगाना आँचल के उपाध्यक्ष रमेश चंद बंग ने किया। इस अवसर पर समाज के अध्यक्ष प्रहलाद सोनी भी उपस्थित थे। इन प्रतियोगिताओं का आयोजन समाज के सांस्कृतिक मंत्री नवल किशोर मूंदड़ा एवं सह.सांस्कृतिक मंत्री दामोदर लाहोटी के पर्यवेक्षण में किया जा रहा है। फाइनल मैच में रामकिशोर मणियार, डॉ.विष्णु कुमार बल्दवा, धनराज मणियार, गोपीकिशन लाहोटी, प्रेम डालिया, भगवान लाहोटी, संदीप मूंदड़ा, गौरीशंकर जाजू, नन्दकिशोर सोनी आदि उपस्थित थे।

चारभुजानाथ मंदिर में मना फ़ाग उत्सव

उज्जैन। श्री माहेश्वरी मेवाड़ा थोक पंचायत महिला मंडल एवं प्रगति मंडल के द्वारा फ़ाग उत्सव गोलामंडी स्थित श्री चारभुजानाथ मंदिर में मनाया गया। इसमें गुलाल उड़ाकर फूलों के साथ होली खेली। तत्पश्चात् महिलाओं ने एक दूसरे को स्नेह से अबीर-गुलाल लगाकर फ़ाग के गीत गाए। इस अवसर पर अध्यक्ष पुष्पा मंत्री, शांता मंडोवरा, आरती राठी, संतोष सोडानी, सुधा सोडानी, रश्मि राठी, वंदना जेथलिया, ज्योति राठी, पायल राठी, रमा लड्ढा, रुचि गांधी आदि समाज की कई महिलाएँ उपस्थित थीं। ठंडाई व मिठाई वितरण के साथ फ़ाग उत्सव का समापन हुआ।

मन महोत्सव में शिव भजनों की दी प्रस्तुति

रतलाम। महाशिवरात्रि मनमहोत्सव में व्यवसायी अरविन्द मण्डोवरा द्वारा आयोजित-संयोजित भाव भजन संध्या में शिव स्तुति से शिव ताण्डव तक के भजनों ने भक्त समूह को भाव विभोर किया। प्रतिवर्षानुसार इसमें डोंगरे नगर के तेजेश्वर महादेव मन्दिर प्रांगण में अमर पंजाबी की भजन निशा आयोजित की गई थी। महोत्सव में भक्तों को खीर-खिचड़ी एवं प्रसाद का वितरण भी किया गया।

व्हॉटस् ॲप से तैयार कर दी डायरेक्ट्री

संगमनेर। किसी भी तकनीक का सही इस्तेमाल किया जाऐं तो बहुत अच्छे परिणाम निकलते हैं। इस बात को महेश फाऊंडेशन के अध्यक्ष अजय जाजू ने कर दिखाया। जिन्होंने व्हॉटस एप के माध्यम से गत 6-8 महिनों में 450 जाजू परिवारों की जानकारी का संकलन किया है। अब इसमें हैदराबाद के 250 परिवार की बढ़ोतरी होने से यह संकलन 750 तक पहुंच गया है। इसकी शीघ्र ही डायरेक्ट्री प्रकाशित करके अखिल भारतीय जाजू परिवार का स्नेह मिलन समारोह का आयोजन करने की श्री जाजू की इच्छा है। इसमें औरंगाबाद के सुदर्शन जाजू व हैदराबाद के ब्रिजगोपाल जाजू कर विशेष सहयोग मिला।

महिला दिवस पर ललिता सोमानी का सम्मान

रतलाम। सतत सामाजिक सेवा तथा धर्मग्रन्थों के वाचन को लेकर अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर ख्यात सी.ए. विजय सोमानी की धर्मपत्नी ललिता सोमानी का लायंस क्लब तथा सिद्धयोग साधना एवं अनुसन्धान केन्द्र के द्वारा सत्कार किया गया। तहसीलदार रश्मि श्रीवास्तव तथा रतलाम जिला सहकारी बैंक के अध्यक्ष अशोक चोटाला अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

बाहेती बनी महिला मंडल अध्यक्ष

डांडेली। स्थानीय माहेश्वरी महिला मंडल में अर्चना बाहेती निर्विरोध अध्यक्ष चुनीं गईं। श्रीमती बाहेती ने सभी के सहयोग से मंडल की गतिविधियों को आगे बढ़ाने का आश्वासन दिया।

> वो जो दावा करते हैं
> इंसान परखने का
> उन्हें पता नहीं
> कि सोना हर तराजू से
> तोला नहीं जाता।

डॉ. लाहोटी को परली भूषण पुरस्कार

बीड़। माहेश्वरी सभा परली तथा बीड़ जिला माहेश्वरी सभा के सदस्य तथा शिक्षा, सामाजिक एवं कृषि क्षेत्र को समर्पित समाजसेवी डॉ. शांति लाहोटी को परली भूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार मराठवाड़ा साथी वृतपत्र समूह की ओर से उन्हें मराठवाड़ा साथी के मुख्य संस्थापक तथा माहेश्वरी बीड़ जिला के भूतपूर्व अध्यक्ष मोहनलाल बियाणी, ओमप्रकाश मरनसूरे तथा परली की भूतपूर्व नगर अध्यक्षा राधाबाई बियाणी के हाथों प्रदान किया गया। डॉ. लाहोटी अम्बाजोगाई के योगेश्वर महाविद्यालय के दूध शास्त्र विभाग के प्रमुख रहे हैं।

दीपक एडवरटाइजिंग को क्रेडाई अवार्ड

जयपुर। राजस्थान के सबसे बड़े बिल्डर्स एवं डेवलपर्स एसोसिएशन क्रेडाई राजस्थान ने लगातार तीसरे वर्ष दीपक एडवरटाईजिंग को क्रेडाई प्रॉपर्टी एक्सपो 2016 में महत्वपूर्ण योगदान देने के लिए "क्रेडाई अवार्ड" से सम्मानित किया गया है। यह अवार्ड दीपक एडवरटाइजिंग जयपुर के डायरेक्टर दीपेश माहेश्वरी ने ग्रहण किया। उनकी फर्म द्वारा इस प्रॉपर्टी फेयर की एड डिजाईजिंग एवं कन्सेप्ट प्लानिंग से लेकर प्रिंट, रेडियो, आउटडोर, डिजिटल, पीआर प्रमोशन आदि त्रुटि रहित तरीके से किया गया।

राजसमन्द जिला सभा का सामूहिक विवाह सम्पन्न

राजसमन्द। जिला माहेश्वरी सभा द्वारा तृतीय सामूहिक विवाह समारोह गत 10 मार्च को माहेश्वरी सेवा सदन चारभुजा गढ़बोर में आयोजित किया गया। इसमें 8 जोड़े परिणय सूत्र में बँधे। उदयपुर प्रतिनिधि मुरलीधर गट्टानी ने बताया कि 9 मार्च को दोपहर में विनायक स्थापना, स्वागत भोज एवं महिला संगीत कार्यक्रम हुए। 10 मार्च का प्रातः 8 बजे वर-वधुओं की शोभायात्रा निकली। सुसज्जित मण्डप में परिणय कार्यक्रम विधि-विधान से सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि राष्ट्रीय महामंत्री रामकुमार भूतड़ा एवं अध्यक्ष श्यामसुन्दर बिड़ला अध्यक्ष सेवा सदन थे। इस मौके पर "परिणय परिचय पुस्तिका" का विमोचन भी किया गया। अतिथि स्वागत इन्दरलाल छापरवाल एवं अर्जुन चेचानी ने किया। अतिथि कमल किशोर चाण्डक- उपसभापति पश्चिमांचल, रामरतन नौलखा आदि ने अपने विचार रखे। वर-वधुओं को जिला सभा की ओर से 41 वस्तुएँ स्वर्ण-रजत आभूषण सहित भेंट की गईं।

महेश की लिखी पुस्तक विमोचित

हापड़। स्थानीय प्रतिष्ठित होटल में आयोजित कार्यक्रम में शिक्षाविद् सुभाषचंद्र महेश द्वारा लिखित पुस्तक 'सुखी जीवन की राह' का विमोचन हुआ। मुख्य अतिथि उत्तरप्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के पूर्व चेयरमैन डॉ. हरिओम गुप्ता थे। विशिष्ट अतिथि क्षेत्रीय विधायक गजराजसिंह व पश्चिम उ.प्र. माहेश्वरी सभा के प्रदेश मंत्री कमलेंद्र कुमार माहेश्वरी थे। इस अवसर पर संदीप महेश, डॉ संजना, वृंदा माहेश्वरी, स्वाति अग्रवाल, डॉ सतेंद्र, आशीष अग्रवाल आदि ने भी विचार रखे। सौरभ साबू, प्रदीप माहेश्वरी, समीर महेश, किशन गर्ग, प्रो. विजय कुमार, दीपक मुछाल, दिनेश, राकेश कुमार, जितेंद्र माहेश्वरी आदि कई गण-मान्यजन उपस्थित थे।

"दिमाग ठण्डा रखें,
जिन्दगी में स्वयं को मजबूत पायेंगे
लौहा भी ठण्डा रहने पर, मजबूत होता है।
गर्म होने पर तो वह भी
मनमाफिक आकार में ढल जाता है।"

माहेश्वरी महिला मंडल की कार्यकारिणी गठित

वारंगल। स्थानीय माहेश्वरी समाज द्वारा माहेश्वरी महिला मंडल का गठन किया गया। इसकी नवगठित कार्यकारिणी में अध्यक्ष सुनीता मालाणी, उपाध्यक्षा अनीता सोनी व माधुरी लाहोटी, मंत्री मृदुबाला दरक, सह-मंत्री कविता बल्दवा व दीपा मूंदड़ा, कोषाध्यक्षा सरिता सोमाणी, सह-कोषाध्यक्ष वंदना मूंदड़ा, सांस्कृतिक मंत्री ज्योति सोनी, सह-सांस्कृतिक मंत्री अनुराधा मूंदड़ा चुनी गई। कार्यकारिणी में सदस्यों का भी मनोनयन हुआ।

जल संरक्षण की नई टेक्नोलॉजी

भुवनेश्वर। विश्व को बाढ़, सूखा और विद्युत की कमी संबंधित समस्याओं से मुक्त करने के लिए वैज्ञानिक श्याम सुंदर राठी ने एक नई टेक्नोलॉजी अत्याधुनिक जल भंडार 'एमएसडीटी' का आविष्कार किया है। श्री राठी ने अपने 25 सालों के परिश्रम को साझा करते हुए दावा किया है कि इस नई टेक्नोलॉजी से बाढ़ नियंत्रण के साथ ही सूखे की समस्या का भी अंत होगा। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इस टेक्नोलॉजी में कम कीमत और बिना प्रदूषण के आवश्यकता से अधिक विद्युत उत्पादन भी हो पाएगा और यह भी सिर्फ 20 से 25 दिनों में समाजसेवी सरोज बिस्वाल ने बताया कि विश्व समूह को प्रदूषण मुक्त करने सहित कम खर्च में कई सुविधाएं प्रदान करना ही इस टेक्नोलॉजी का मूल लक्ष्य है। अतः प्रधानमंत्री कार्यालय एवं उच्चस्तरीय इंजीनियर कमेटी ने राठी के एमएसडीटी संबंधित आलेख को पढ़ने के बाद इसे तुरंत कार्यक्षम करने के लिए सिफारिश की है।

महिला गौरवप ने किये गौरवशाली आयोजन

उदयपुर। संस्था माहेश्वरी गौरव द्वारा गत दिसम्बर माह में संरक्षक कौशल्या गट्टानी एवं जनक बांगड़ के नेतृत्व में अंध विद्यालय के छात्रों को उदयपुर भ्रमण करवा कर विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। जनवरी माह में मकर संक्रांति एवं लोहड़ी उत्सव के उपलक्ष्य में संस्था अध्यक्ष सरिता न्याती के नेतृत्व में विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की, जिसमें सतोलिया, कुर्सी रेस, महिलाओं की मटकी रेस, चेयर रो, रंगोली, एवं क्रिकेट आदि शामिल थीं। "सृजन सेतु" इंदौर में कौशल्या गट्टानी के नेतृत्व में 10-12 महिलाएं शामिल हुई। गत फरवरी माह में बसंत पंचमी महोत्सव का आयोजन कराया। जिसमें कन्याओं का पूजन व छात्रों का सम्मान किया गया। इसके साथ भजन संध्या एवं पीले व्यंजन बनाना, गीत, संगीत आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन भी किया गया। इसमें संरक्षक श्रीमती गट्टानी, अध्यक्ष श्रीमती न्याती एवं कार्यक्रम संचालक भावना लड्ढा एवं अन्य पदाधिकारी मौजूद थीं।

> "सुख शरीर का
> और दुःख आत्मा का
> टॉनिक है।"

मुलाहिज़ा फरमाइये

हल्की फुल्की सी है जिंदगी
बोझ तो ख्वाहिशों का है।

देख के दर्द किसी का जब आह निकल जाती हो
इतनी सी बात बस आदमी को इंसान बनाती है।

हजार महफिल हो... लाख मेले हों...
पर जब तक खुद से न मिलो अकेलो है।

▸▸ डॉ. नारायण तिवारी, एम.ए., एम.बी.बी.एस., पी.जी.डी., उज्जैन

शिवरात्रि पर त्रिदिवसीय भंडारा

बिल्सी। श्री दयाल मित्र मण्डल के तत्वावधान में श्री माहेश्वरी समाज करके इष्ट देव भगवान महेश के विवाहोत्सव महाशिवरात्रि पर्व पर राजेश जाजू के नेतृत्व में 3 दिवसीय भंडारा कावंड़ियों के सेवार्थ अनवरत चला। इस अवसर पर शिव भक्तों हेतु सुन्दर भजन, सांस्कृतिक नृत्य आदि भी होते रहे। इसमें सुभाषचन्द्र बाहेती (पूर्व प्रदेश मंत्री), सुधीर सोमानी, चन्द्रसेन माहेश्वरी, चंद्रप्रकाश तोषनीवाल, सुधीर माहेश्वरी आदि का विशेष सहयोग रहा।

माँ ने दिया बेटी को पुनर्जीवन

भीलवाड़ा। समाज में चारों ओर जहां कन्याभ्रूण हत्या का शोर मचा है, वही एक महिला ने 40 वर्षीय बेटी की जब किडनी खराब हुई, तो उसे किडनी देकर पुनर्जीवन देने की मिसाल पेश की। किडनी ट्रांसपोर्ट करने से पहले माँ ने चिकित्सक से कहा कि बेटी को बचाने के लिए मेरे शरीर का कोई भी अंग चाहिए तो ले लो परन्तु उसे ठीक कर दो, विद्युत नगर संजय कॉलोनी की रहने वाली बसंता राठी पति ओमप्रकाश राठी के हाथ- पैर में सूजन व पेट में दर्द होने पर उसका भीलवाड़ा, उदयपुर, अजमेर, अहमदाबाद, आदि जगहों पर जाकर उपचार कराया गया। काफी जांच के बाद चिकित्सकों ने मर्ज पकड़ा, लेकिन उसे सुनकर परिजनों के पैरों तले जमीन खिसक गई। बसंता की दोनों किडनी फ़ैल हो चुकी थी। चिकित्सकों ने सलाह दी कि बसंता की किडनी ट्रांसप्लांट करना पड़ेगी। जब कोई किडनी देने वाला नहीं मिला, तो बसंता को माँ प्रेम देवी (61) पति राधेश्याम बांगड़ निवासी सुभाष नगर ने किडनी देने का निर्णय किया। जयपुर के एमजी चिकित्सालय से अनुमति मिलने के बाद 8 दिसम्बर 2015 को डॉ. सूरज गोदारा ने प्रेम देवी की किडनी बसंता को ट्रांसप्लांट की। बसंता के पिता ने बताया कि अब माँ व बेटी दोनों की हालत ठीक है। बसंता की एक बेटी अदिति बी.कॉम. कर रही है।

व्यक्तित्व विकास सेमिनार का हुआ आयोजन

इंदौर। आल इंडिया माहेश्वरी स्टूडेंट्स फेडरेशन इंदौर जिला इकाई द्वारा 2 दिवसीय स्मरण शक्ति व व्यक्तित्व विकास सेमिनार इंदौर प्रेस क्लब में आयोजित किया गया। प्रचार-मंत्री सपन माहेश्वरी ने बताया कि प्रमुख वक्ता दत्तात्रेय घोड़े ने श्रोताओं को स्मरण शक्ति बढ़ाने के गूर दिए। प्रतिदिन 250 से अधिक पंजीयन हुए, जिसमें हर आयु वर्ग के व्यक्ति शामिल थे। मुख्य अतिथि पूर्व खनिज एवं विकास मंत्री म.प्र शासन एवं प्रवक्ता भाजपा गोविन्द मालू थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता संगठन अध्यक्ष अखिल माहेश्वरी ने की। इस अवसर पर अशोक ईनानी, भरत तोतला, नितिन माहेश्वरी, मधुसूदन भलिका, अंकित सोनी, धनंजय गुंजाल, पवन व्यास, आशीष लड्ढा आदि विशेष रूप से मौजूद थे। कार्यक्रम संयोजक माधव माहेश्वरी एवं उज्ज्वल माहेश्वरी थे। आभार सचिव मधु लड्ढा ने माना।

> अपनापन छलके जिसकी बातों में
> सिर्फ कुछ ही बंदे होते हैं लाखों में।

॥ जय महेश ॥

महाराष्ट्र प्रदेश माहेश्वरी विवाह समिति द्वारा संचलित
वैवाहिक वेबसाईट

www.maheshwarivivahsamiti.com

अपने प्रत्याशी का ऑनलाईन रजिस्ट्रेशन करें और घर बैठे देखें 2500 रिश्ते

B.E., MBA, C.A., Doctor, ग्रॅज्युएट युवक-युवतियों के बायोडाटा

शुल्क रू.700 (एक वर्ष के लिए)

कांतीलाल राठी
प्रदेश अध्यक्ष

बँक अकाऊंट माहेश्वरी सोशल सर्व्हिसेस प्रा. लि.
● SBI A/C No. 34040329615 ● BULDHANA URBAN : 21 / 722

प्रादेशिक कार्यालय : हिंगोली बँक के निचे, देवलगांव राजा रोड, जालना (महा.)
फोन : (02482) 231952, मो. 8007571564, 9422215214

*** फर्जी वेबसाईटों से सावधान ***

'फ्री रजिस्ट्रेशन, समाज हित में' इन बातोंद्वारा कुछ वेबसाईट अभिभावकों से पैसे ऐठ रहे है । किसी भी वेबसाईट का शुल्क भरने से पहले, उस में कितने-युवक युवतियों के बायो-डाटा उपलब्ध है इसकी तसल्ली करके ही शुल्क भरे ।

बचत समिति का अधिवेशन सम्पन्न

भीलवाड़ा। आर.के.आर.सी. महेश बचत समिति का वार्षिक अधिवेशन गत 10 जनवरी को आर. के. आर. सी. महेश सेवा संस्थान में आयोजित किया गया। अध्यक्षता कैलाशचन्द्र दरगड़ ने की। समिति के वरिष्ठ सदस्य एवं संरक्षक मदनलाल आगाल, नारायणलाल लड्ढा, दौलतराम राठी व केदार जागेटिया ने अपने विचार रखे। समिति द्वारा सदस्यों को 10 प्रतिशत लाभांश भी वितरीत किया गया। सायंकाल 6 बजे समिति के सभी परिवारजनों के स्नेहभोज का आयोजन भी रखा गया। इसमें रामपाल सोनी, देवकरण गग्गड़, राधेश्याम सोमानी, जगदीश सोमानी, कैलाश कोठारी, राधेश्याम चेचाणी आदि कई गणमान्यजन स्नेहभोज में उपस्थित थे।

नेत्र परीक्षण शिविर का हुआ आयोजन

वर्धा। माहेश्वरी नवयुवक मंडल द्वारा आयोजित नेत्र जांच शिविर में लगभग 525 मरीजों की जांच की गई। कस्तूरबा हेल्थ सोसाइटी सेवाग्राम, महेश नागरी सहकारी पंत संस्था, बुलढाणा अर्बन कोऑपरेटीव क्रेडिट सोसाइटी के तत्वावधान में स्थानीय माहेश्वरी भवन में नेत्र जांच शिविर सम्पन्न हुआ। जांच कर कुल 150 मरीजों का शल्यक्रिया के लिए चयन किया गया। इस अवसर पर कस्तूरबा हेल्थ सोसाइटी के नेत्र रोग विशेषज्ञ डॉ. अजय शुक्ला व उनके सहयोगियों ने सहायता की। कस्तूरबा हेल्थ सोसाइटी के अध्यक्ष परमानंद तापड़िया ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। उपजिलाधिकारी वैभव नावडकर, बुलढाणा अर्बन के विभागीय व्यवस्थापक विनय राजे, महेश नागरी सहकारी पतसंस्था के अध्यक्ष श्रीराम टावरी अतिथि के रूप में उपस्थित थे। डॉ. अजय राठी ने शिविर की रूपरेखा रखी। कार्यक्रम का संचालन स्वप्निल बियाणी ने किया तथा आभार लोकेश कुलधरिया ने माना। शरद भूतड़ा, अजय गांधी, प्रशांत तापड़िया, चेतन चड्ढा, उमेश टावरी, वैभव मोहता, उल्हास मालाणी, नंदकिशोर राठी, संजय राठी, गोपाल चांडक, धीरज राठी, विशाल राठी आदि समस्त सदस्यों का सहयोग रहा।

मल्टी स्पेशलिटी स्वास्थ्य शिविर का हुआ आयोजन

मुरैना। माहेश्वरी महिला मंडल की प्रेरणा व माहेश्वरी समाज मुरैना के सहयोग से निःशुल्क सुपर मल्टीस्पेशिलिटी स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। इसमें दिल्ली व ग्वालियर से आए विशेषज्ञ व चिकित्सकों द्वारा मुरैना शहर व ग्रामीण अंचल के लगभग 730 मरीजों का परीक्षण किया गया। इसमें समस्त आवश्यक जाँच निःशुल्क की गई। मुख्य अतिथि कलेक्टर विनोद शर्मा, विशिष्ट अतिथि एसपी विनीत खन्ना एवं हिमानी खन्ना (सैनानी 5 वी वाहिनी) मुरैना, डॉ. धनंजय गुप्त, डॉ. मनोज गर्ग, डॉ. अनुपम ठाकुर, डॉ. मनीष गुप्ता, डॉ. आशीष अग्रवाल के साथ मुरैना के वरिष्ठ समाजसेवी चिकित्सक डॉ. के.एल. राठी भी मंचासीन थे। शिविर के संयोजक डॉ. विवेक राठी ने स्वागत भाषण दिया। शिविर का संचालन पुष्पा राठी, श्वेता माहेश्वरी, श्वेता भट्टर एवं हीना गांधी द्वारा किया गया। राजेश राठी, अशोक कोठारी, अतुल माहेश्वरी, रवि लड्ढा, सुधीर लड्ढा, मितेश भट्टर आदि द्वारा सक्रिय सहयोग दिया गया।

निःशुल्क नेत्र ऑपरेशन व रक्तदान

बीकानेर। संस्था स्व. बालचंद राठी मेमोरियल व चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा निःशुल्क नेत्र शल्य चिकित्सा व रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया।
तीन दिवसीय शिविर का उद्घाटन कमला देवी राठी ने किया। समापन अवसर के मुख्य अतिथि राजस्थान सरकार के खान एवं पर्यावरण मंत्री राजकुमार रिणवा थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व मंत्री देवीसिंह भाटी ने की। ट्रस्ट के मुख्य आयोजक जुगल राठी ने बताया कि इस अवसर पर राजस्थान सरकार के पूर्व वित्त आयोग अध्यक्ष बी.डी.कल्ला, शिवबाड़ी मठ के अधिष्ठाता संवित् सोमगिरी जी महाराज व शहर भाजपा अध्यक्ष सत्यप्रकाश आचार्य भी उपस्थित थे। इसमें पीबीएम अस्पताल के नेत्र विशेषज्ञ डॉ. जे. मुरली मनोहर के नेतृत्व में उनकी टीम द्वारा 57 लोगों का निःशुल्क ऑपरेशन कर चश्में और आवश्यक दवाइयों का भी निःशुल्क वितरण किया गया। साथ ही 144 लोगों द्वारा रक्तदान भी किया गया। इस अवसर पर बजरंग सारड़ा, डॉ. मुरली मनोहर, भवानी राठी, पिन्टू भाटी, डॉ. राहुल हर्ष, श्याम राठी, तोलाराम पेड़ीवाल, राजेश राठी, नवल राठी आदि लोगों को उनके अलग-अलग क्षेत्रों में विशेष योगदान के लिये सम्मानित किया गया।

> अजीब दस्तूर है लोगों का, अच्छी यादों को तो फोटोकॉपी और सीडी में संभाल कर रखतेहैं और खराब यादों को दिल में बसा कर रखते हैं।

'विदुषी सरला बिड़ला सम्मान' से तीन विभूति अलंकृत

'श्री माहेश्वरी टाईम्स' द्वारा गर्त वर्ष समाज की विदुषी श्रद्धेय श्रीमती सरला बिड़ला के देहावसान पर उनकी पुण्य स्मृति में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में समाज की तीन विशिष्ट महिलाओं को विदुषी सरला बिड़ला सम्मान से अलंकृत करने की घोषणा की गई थी। इसके अनुसार प्रबुद्धजनों के निर्णायक मंडल द्वारा समाज की तीन महिलाओं का इस सम्मान के लिये चयन किया गया।

इसमें अप्रतीय मातृत्व के लिये मीरा बंग औरंगाबाद, कला के माध्यम से संस्कृति संरक्षण के लिये अमेरिका की नृत्य गुरु रितु डागा तथा औद्योगिक मार्गदर्शन के क्षेत्र में अपने अद्वितीय योगदान के लिये ममता बिन्नानी का चयन किया गया। 'श्री माहेश्वरी टाईम्स' इन्हें ''विदुषी सरला बिड़ला सम्मान'' से सम्मानित करती हुए गौरवान्वित महसूस करती है।

अमेरिका की नृत्य गुरु रीतु डागा

अहमदाबाद निवासी रीतु डागा वर्ष 1996 से अमेरिका में निवासरत हैं। उन्होंने न सिर्फ देश में ही अपने नृत्य से कला का ध्वज फहराया बल्कि अमेरिका में भी उनकी नृत्य कला शिष्यों, विश्वविद्यालयों और समाचार-पत्रों के बीच अत्यन्त सम्माननीय स्थान रखती हैं। उन्होंने भारतीय शास्त्रीय नृत्य के अमेरिका जैसे देश में विस्तार के लिए सन्1998 में ''नर्तन एकेडेमी ऑफ डांस'' की ओवरलैंड पार्क, कन्सास (अमेरिका) में स्थापना की, जहाँ वे भरतनाट्यम एवं कुचिपुड़ी नृत्य परम्परा की शिक्षा प्रदान कर रही हैं। कन्सास के शहरी क्षेत्र में रीतु ने कई सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजनों में भी मदद की है। संस्था कर्नाटक म्युजिक एसोसिएशन की आप माननीय सदस्या हैं और हिन्दुस्तानी म्युजिक क्लब 'अलाप' के आयोजनों की अभिन्न अंग हैं। उन्होंने ''कन्सास चेप्टर ऑफ स्पिकमिकै'' के द्वारा कई बाहरी कलाकारों को आमंत्रित कर उनके कौशल्य को भी प्रदर्शित कराया है।

अबोध अवस्था से की शुरुआत

रीतु का जन्म अहमदाबाद में 7 नवम्बर, 1971 को प्रतिष्ठित समाज सेवी किशन लड्ढा व किरण माहेश्वरी के यहाँ हुआ। रीतु डागा ने पाँच वर्ष की छोटी-सी उम्र में गुरु स्मिता शास्त्री के निर्देशन में अहमदाबाद के नर्तन स्कूल ऑफ क्लासिकल डांसेज में नृत्य सीखना शुरू किया। 14 वर्ष की आयु में नृत्य शिक्षा के पूर्ण होने पर दीक्षान्त समारोह यानी आरंगेत्रम प्रस्तुत किया और गुरु स्मिता शास्त्री एवं राजराजेश्वरम् इंस्टीट्यूट के गुरु महालिंगम् पिल्लई से 'नृत्य तीर्थ' की डिग्री प्राप्त की। गुरु की निश्रा में भरतनाट्यम् एवं कुचिपुड़ी नृत्य तथा भारत के, विशेषतः गुजरात के लोक नृत्यों को सिखने का क्रम जारी रखा। सन् 1986 से 1996 के दौरान कई स्थानीय

न सिर्फ अमेरिकी शहर कन्सास बल्कि सम्पूर्ण अमेरिका और तो और भारत सहित कई देशों में भी रीतु डागा की पहचान एक विदुषी नृत्य गुरु के रूप में है। उनकी उपलब्धि का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि उनके शिष्यों द्वारा दी गई नृत्य प्रस्तुति ''गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स'' में भी दर्ज हो चुकी है।

चित्र : षष्ठम् दीक्षान्त समारोह 2015

महोत्सवों में अपने नृत्य कौशल का प्रदर्शन किया एवं राष्ट्रीय मंच तथा दूरदर्शन के लिए भी कार्यक्रम प्रस्तुत किये। इसी दौरान नई दिल्ली में मनाए गए गुजरात दिवस के मौके पर महामहिम राष्ट्रपति एवं कई अन्य विशिष्ट व्यक्तियों के सम्मुख नृत्य का कौशल प्रस्तुत किया, जिसे सभी ने सराहा। रीतु 2 जून, 1996 में अमेरिका निवासी एम.एस. व एम.बी.ए. तक शिक्षित व्यवसायी अभय डागा के साथ परिणय-सूत्र में बँध गईं। अतः रितु सन् 1996 में अमेरिका जाकर स्थायी हो गई, परन्तु नृत्य व प्रदर्शन को जारी रखा। श्वसुर ओमप्रकाश डागा मुम्बई में निवासरत हैं।

विदेशी धरती पर गुरु-शिष्य परम्परा

सन् 1996 में, जब रीतु डागा ने नृत्य के प्रति समर्पण भाव रखकर कन्सास में नर्तन एकेडेमी की स्थापना की, तब उन्होंने थोड़े से शिष्य-शिष्याओं से उनके घर पर या अपने घर पर नृत्य सिखाने से शुरुआत की। विदेश की धरती पर, जहाँ नृत्य की कोई पहचान या सम्मान नहीं था, एकेडमी को कई कठिन परीक्षाओं से गुजरना पड़ा, लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और अपने काम को पूरे जोश से चालू रखा तथा स्थानीय मंच पर भी प्रदर्शन जारी रखा। 'नर्तन' की स्थापना अपने विद्यार्थियों में भारतीय परम्पराओं के नैतिक मूल्यों का नृत्य के द्वारा प्रतिष्ठापन करने के उद्देश्य से की। चारों तरफ से दबाव के बावजूद रीतु अपनी एकेडेमी में प्रशिक्षण एवं नृत्य के मापदण्ड को उच्च स्तर पर रखने के लिए कटिबद्ध हैं और गुरु-शिष्य परम्परा को प्रगतिशील रखने में विश्वास रखती हैं। रीतु ने अपने शिष्यों के समूह में आरंगेत्रम् की महत्ता को बनाये रखा है, जिससे मध्यमवर्गीय परिवार के बच्चे भी आकर नृत्य की इस शाखा को सीखें, प्रदर्शित करें और आपस में अनुभव साझा करें। अमेरिका इस प्रकार से प्रशिक्षण के तरीके से अनजान ही है।

नृत्य गुरु के रूप में विशेष सम्मान

नर्तन एकेडेमी एवं रीतु डागा को कई स्थानीय एवं राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों द्वारा अनेकों बार नृत्य प्रदर्शन, कार्यशाला आयोजन और भाषण आदि हेतु आमंत्रित किया गया है। उन्हें अमेरिका की अन्य नृत्यशालाओं द्वारा भी विशेष सम्मानीत अतिथि के रूप में अपने स्कूल के कार्यक्रमों में आमंत्रित किया जाता है। रीतु डागा एवं नर्तन एकेडेमी को विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं प्रतिष्ठित कला संग्रहालयों जैसे नेल्सन एटकिंस आर्ट म्युजिकल द्वारा भी सराहा गया है। नर्तन एकेडेमी में फिलहाल 150 प्रशिक्षार्थी हैं, जिनमें सिर्फ दक्षिण भारतीय ही नहीं, कन्सास सिटी के गुजराती परिवारों के बच्चे भी शामिल हैं। उन्होंने कला से अनजान परिवारों में भी शास्त्रीय नृत्य कला की ज्योत जलाने का सराहनीय कार्य किया है।

अकादमी की प्रस्तुति गिनीज बुक में दर्ज

'नर्तन' अकादमी अपनी शुरुआत से ही विभिन्न त्योहारों व आयोजनों के मौकों पर नृत्य की प्रस्तुति देकर भारतीय संस्कृति व कला को गौरवान्वित कर रही है। विभिन्न कॉलेज व विश्वविद्यालयों में प्रस्तुति के साथ ही जरूरतमंदों की मदद के लिए चेरिटी फण्ड संग्रहण के लिए भी अभी तक न सिर्फ अमेरिका बल्कि भारत आकर भी प्रस्तुति देने में संस्था पीछे नहीं रही। वर्ष 2012 में 'नर्तन' के शिष्यों ने हैदराबाद में आयोजित "अन्तर्राष्ट्रीय कुचिपुड़ी कन्वेशन" में भाग लिया। इसमें इनकी प्रस्तुति इतनी अद्भुत रही कि जिसे "गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड" में भी दर्ज किया गया।

भारतीय संस्कृति से ओतप्रोत परिवार

उनके घर में सम्पूर्ण भारतीय परम्परा का अनुपालन होता है। कोई भी घर पर आये उसे घर में प्रवेश करते ही भारत का-सा वातावरण मिलेगा। घर की बातचीत में हिन्दी भाषा का प्रभुत्व है। भोजन भी शुद्ध भारतीय ही बनता है। इस प्रकार अपनी संस्कृति को परदेशी वातावरण में सहेज कर रखना इतना आसान नहीं होता। परन्तु दृढ़ता एवं अनुशासन से सब सम्भव है, रीतु ने ऐसा करके दिखाया है। शिष्याओं को गुरुकुल परम्परा के अनुरूप केवल नृत्य ही नहीं वरन् भारतीय पाक कला, गृह साज-सज्जा, साथ ही सौहार्द्रपूर्ण व्यवहार, प्रेम सम्पादन, शिष्ट और अनुशासन का महत्त्व, परिवर्तन के अनुरूप मूल्यों की स्थिरता वगैरह कई ऐसे आयाम हैं, जिनसे परिचित करवाया जाता है। साथ ही सारे भारतीय तीज-त्योहारों, जैसे- होली, दीवाली, गणगौर, करवा चौथ, तीज, नवरात्रि को पूरे रीति-रिवाज के साथ मनाती हैं।

माँ की राह पर बेटी की पदचाप

कला अमर होती है। पुत्री नन्दिता भी अपनी माता के नक्शे-कदम पर चलते हुए कुचिपुड़ी नृत्य में पारंगत हो चुकी हैं और इस वर्ष जून मास में उनका भी आरंगेत्रम आयोजित है। नन्दिता ने बाल्काल से ही नृत्य को देखा है, अनुभव किया है। छोटे-छोटे कदमों से बढ़ते हुए नृत्य की शैली में पारंगत होने का सपना भी पूरा किया है। घर में गुरु हो और प्रतिदिन नृत्य ताल के चारों ओर जीवन बीतता हो तो स्वाभाविक रूप से तन्मय होकर कला के प्रति आत्मीय लगाव, अटूट बन्धन, अविरत आत्मविश्वास और दैविक आभास एक ऐसे क्षितिज पर ले जाता है, जिसका सिर्फ अनुभव ही किया जा सकता है, वर्णन असम्भव है। यौवन की दहलीज पर पहुँची नन्दिता अपनी कुशल भाव भंगिमा से नृत्य की गहराई खोज रही हैं और समयानुकूल शास्त्रीय शैली को और संवेदनशील बनाने की तपस्या में रत हैं। अपने जीवन के अल्प सफर में कई क्षेत्रों में विजय का अनुभव किया है, परन्तु एक सच्चे कलाकार की तरह निर्मल और नम्र हैं। कॉलेज में आयोजित नृत्य सभा में अमेरिकी राष्ट्रपति का मेरिट पारितोषिक भी प्राप्त कर चुकी हैं। अपने पठन-अध्ययन के बीच नृत्य की कठोर साधना अपनी माता एवं गुरु से प्राप्त कर बीच-बीच में अपनी सह-शिष्याओं को भी मार्गदर्शन देती रही हैं।

ममता की मूरत मीरा बंग

''सेरेब्रल पल्सी'' यह नाम है उस भयानक बीमारी का जो रोगी की तकदीर में ही शारीरिक व मानसिक रूप से अक्षमताओं भरा जीवन लिख देती है। यही स्थिति औरंगाबाद निवासी बालिका कृष्णा की भी बनी। लोगों ने तो सोचा भी कि ऐसा जीवन भी कोई जीवन है....? लेकिन उसके लिये भगवान बनी उसकी माँ, जिसने अपना सम्पूर्ण जीवन उसे समर्पित कर दिया और आखिरकार उसकी तकदीर बदलकर ही मानी। बेटी के जीवन में इस असंभव को सम्भव कर दिखाने वाली माँ हैं, मीरा बंग, जिनकी ममता को पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम ने भी नमन किया। ''श्री माहेश्वरी टाईम्स'' भी आपको अप्रतीम मातृत्व के लिये ''विदुषी सरला बिड़ला सम्मान'' से सम्मानित कर गर्व महसूस कर रहा है।

वर्तमान में कक्षा चार में अध्ययनरत कृष्णा को देखकर कोई भी यह नहीं कह सकता कि यह लड़की बचपन से ''सेरेब्रल पल्सी'' से ग्रस्त रही है। इस बीमारी का नाम आते ही कल्पना मानसिक रूप से अपरिपक्व ऐसे रोगी की सामने आती है, जो चलने फिरने, उठने-बैठने, बोलने व सोचने सभी मामले में लाचार हो। ऐसा रोगी अपनी करवट भी नहीं बदल सकता, लेकिन वर्तमान में कृष्णा सामान्य बच्चों की तरह साईकिल चला सकती है, तैर सकती है, दौड़ लगा सकती है, नृत्य कर सकती है और पढ़ाई से लेकर लगभग सभी कार्य कर सकती है। उसकी इस स्थिति का श्रेय डॉक्टर भी देते हैं, उसकी माँ मीरा बंग को। स्वयं कृष्णा भी उन्हें भगवान से कम नहीं मानती। आखिर श्रीमती बंग के जीवन में कई बड़ी-बड़ी विपत्तियाँ आईं। पति का देहावसान हो गया, स्वयं का हाथ टूट गया लेकिन फिर भी उनका संकल्प कमजोर नहीं हुआ। उन्होंने अपने रात-दिन सभी कुछ अर्पित करके भी कृष्णा को नवजीवन दे ही दिया। उन्होंने सिद्ध कर दिया कि एक माँ यदि कुछ ठान ले तो उसकी शक्ति के आगे तकदीर को भी हार माननी पड़ जाती है।

प्रारंभ से रही प्रतिभावान

श्रीमती बंग का जन्म 23 अगस्त 1979 को जिंतुर में विट्ठलदास व अयोध्याबाई के यहां हुआ। सतत मैरिट लिस्ट में स्थान प्राप्त करने वाली श्रीमती बंग का विवाह बी.एससी. तक शिक्षा प्राप्ति के पश्चात निजामाबाद निवासी सत्यनारायण बंग के पौत्र व गोपालदास बंग के सुपुत्र कमल किशोर बंग के साथ 21 नवम्बर 2000 में हो गया। उद्योग की वजह से परिवार हैदराबाद में बस गया।

खुशी के साथ संघर्ष की शुरुआत

श्रीमती बंग के वैवाहिक जीवन में 21 फरवरी 2005 खुशियों की बौछार लेकर आया। इस दिन उनके जीवन में एक नन्हीं सी परी के रूप में कृष्णा आयी। दादा-दादी ने भी मिठाई बांटकर जमकर खुशी मनाई। लेकिन ये खुशियां अधिक दिनों तक कायम न रह सकी। कृष्णा 6 माह की हो गई लेकिन वह न तो ठीक से हाथ पैर हिलाती थी, न ही करवट बदल पाती थी। सभी को चिंता हुई तो डॉक्टर को दिखाया। डॉक्टर ने कहा कुछ बच्चे देर से एक्टिव होते है। तीन माह और इंतजार किया, फिर भी कुछ न हुआ, तो फिर जांच करवाकर सिर का एम.आर.आय. करवाया। रिपोर्ट में डॉक्टरों ने कहा कि कि बालिका को ''सेरेब्रल पल्सी'' है, तो उनके पैरों के नीचे से जमीन निकल गई।

बेटी को स्वस्थ करना ही बनाया लक्ष्य

प्रारंभ से ही उसका सतत इलाज चला। कृष्णा जब 18 माह की हुई, तभी से उसके लिए निर्धारित शारीरिक कसरतें प्रारंभ कर दी गई थी, हर सप्ताह मीरा बंग को हड्डियों, नसों और दिमाग के डॉक्टरों से मिलना पड़ता था, इन पर पैसा और समय दोनों खर्च होते थे, ऐसे में आशा के रूप में हैदराबाद निम्स के डॉ. एके पुरोहित से उनकी मुलाकात हुई। उन्होंने हर माह इंजेक्शन देने के साथ ही कृष्णा की तीन सर्जरी की। इससे उसमें कुछ सुधार हुआ। लगातार देखभाल और फिजिकल ट्रेनिंग में जुटे रहने के बाद भी जब मीरा ने बहुत फायदा होते नहीं देखा, तो उन्होंने खुद इस बीमारी और इसके इलाज का ज्ञान लेने का फैसला किया। पति और परिवार को छोड़कर वह औरंगाबाद में आ बसी। यहां पर उन्होंने एमजीएम महाविद्यालय में प्रवेश लिये। वह यहां बीमार बेटी की परवरिश के लिए ट्रेनिंग लेने लगी।

विपत्तियों ने भी कहर बरपाया

श्रीमती बंग के लिये बेटी की चिकित्सा अत्यंत कठिन कार्य था, जिसमें पैसे के साथ सर्वाधिक रूप से जो खर्च हो रहा था, वह समय था। उनकी दिनचर्या के 12 घंटे बेटी की मालिश व एक्सरसाईज में ही व्यतीत होते थे। जब कृष्णा 13 माह की हुई, तभी 21 मार्च 2006 को श्रीमती बंग के पति श्री कमल किशोर बंग का देहावसान हो गया और वे अपने इस संघर्ष में अकेली हो गई। विपत्ति यहां भी नहीं थमी। जब कृष्णा 18 माह की थी और श्रीमती बंग उसे ऑटो में फिजियोथैरेपी के लिये ले जा रहे थे, तभी एक्सीडेंट हो गया। इसमें कृष्णा को तो अधिक चोट नहीं लगी लेकिन श्रीमती बंग का बांया हाथ टूट गया। उन्हें ठीक होने में 6 माह लग गये। इस अवधि में कृष्णा का उपचार थम गया और उसकी समस्या फिर से बढ़गई। फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी और जैसे ही स्वयं स्वस्थ हुई, बेटी को नवजीवन देने का उनका अभियान प्रारंभ हो गया।

सुख-चैन व नींद बेटी के नाम

बेटी कृष्णा 11 वर्ष की हो गई है, लेकिन आज भी उनकी दिनचर्या पूर्व की तरह बेटी को ही समर्पित है। श्रीमती बंग बेटी के लिए कड़ी मेहनत कर रही हैं, दिन-दिन भर पत्रे पढ़वाना, मॉडल करवाना, हाथ की कसरत और साइकिल चलाने के लिए प्रेरित करने जैसे काम उनकी दिनचर्या के हिस्से बन गए हैं। दिन भर में वह 12 घंटे सिर्फ कृष्णा को सबल बनाने के लिए प्रयास करती रही हैं। अब कृष्णा नृत्य, तैरना, साइकिल चलाना सभी कुछ कर लेती है। फिर भी आसान नहीं होती रात। उसके पैर सीधे रखकर उसे अपने ऊपर सुलाती है, माँ मीरा। रात में यदि पैर टेढ़े हो गए, तो कृष्णा दूसरे दिन सही तरह से नहीं चल पाती। इसीलिए रात भर उसे सही तरीके से सुलाना भी उनकी एक तपस्या है।

समाज सेवा का भी जुनून

श्रीमती बंग ने अपनी बेटी को तो नवजीवन दिया ही, अब वे ऐसे दूसरे बच्चों के माता-पिता के लिये भी प्रेरणा स्त्रोत बनी हुई हैं। श्रीमती बंग स्पेशल बच्चों के स्कूलों से सम्बद्ध होकर उन बच्चों के पालकों को भी मार्गदर्शित करती है। इसके लिये इन स्कूलों द्वारा भी उन्हें बुलाया जाता है। अनाथ बच्चों को भोजन, चॉकलेट व आईस्क्रीम देकर उन पर अपनी ममता बरसाने में भी वे पीछे नहीं हैं। बेटी से प्रारंभ जीवन दान की उनकी यात्रा अब रक्तदान में भी बदल गई है। हर छह माह में रक्तदान करना उनका संकल्प बन चुका है।

इंस्ट्रीट्यूट ऑफ कम्पनी सेक्रेटरीज ऑफ इंडिया देश का वह गौरवशाली संस्थान है, जो देश को ''सीएस'' जैसे प्रोफेशनल्स की सौगात देता है। इस इंस्टीट्यूट को प्रथम माहेश्वरी या मारवाड़ी महिला अध्यक्ष के रूप में नेतृत्व प्रदान कर रही हैं, ममता बिन्नानी। सम्पूर्ण राष्ट्र में भी इस गरिमामय पद को संभालने वाली श्रीमती बिन्नानी दूसरी महिला ही है।

आईसीएसआई की प्रथम महिला अध्यक्ष

ममता बिन्नानी

माहेश्वरी समाज की नारी शक्ति हर क्षेत्र में सफलता का ध्वज फहरा रही है। इनमें सीए व सीएस जैसे क्षेत्र में तो लगभग वर्चस्व ही है। इनमें भी सीएस जैसे अति प्रतिष्ठित प्रोफेशनल को तैयार करने वाली संस्था ''इंस्टीट्यूट ऑफ कम्पनी सेक्रेटरीज ऑफ इंडिया'' के शीर्ष ''अध्यक्ष'' पद पर माहेश्वरी महिला का सुशोभित होना समाज के लिये गर्व का विषय है। कलकत्ता निवासी सीएस ममता बिन्नानी गत 19 जनवरी 2016 को इस संस्थान की राष्ट्रीय अध्यक्ष चुनी गईं। संस्थान के 47 वर्षों के इतिहास में इस पद पर पहुँचने वाली वे देश की द्वितीय तथा समाज की प्रथम महिला हैं। इससे पूर्व श्रीमती बिन्नानी आईसीएसआई को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के रूप में सेवा दे रही थीं।

पढ़ाई में हमेशा रहीं टॉपर

ममता का जन्म कलकत्ता में सन् 1972 में समाज के वरिष्ठ समाजसेवी मुरारी-पद्मा पोद्दार के यहां हुआ था। वे अपने सम्पूर्ण शिक्षण काल में एक प्रतिभाशाली छात्रा रही। कंपनी सेक्रेटरी की इण्टरमीडियेट परीक्षा में उन्होंने सभी छात्राओं में सर्वप्रथम स्थान प्राप्त किया था तथा फाईनल परीक्षा में सम्पूर्ण भारत में 14 वाँ स्थान तथा कंपनी लॉ में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया। सीएस बनने के साथ वह कॉमर्स ग्रेज्युएट तथा लॉ ग्रेज्युएट भी हैं। सीएस प्रेक्टिस में श्रीमती बिन्नानी गत 19 साल से कार्यरत हैं। उनका विवाह सुमित बिन्नानी सुपुत्र सुशील कुमार बिन्नानी के साथ हुआ, जो स्वयं एमबीए, आईसीए, आईसीएस और आईसीडब्ल्यूएआई डिग्री प्राप्त प्रोफेशनल प्रेक्टिशनर हैं।

कमर्शियल क्षेत्र की सेलीब्रिटी

श्रीमती बिन्नानी ने अपने 19 वर्ष के सीएस के कॅरियर में कार्पोरेट क्षेत्र के आर्थिक मामलों में इतनी विशेषज्ञता हासिल कर ली है कि अब उद्योग कई मामलों में उनसे विचार-विमर्श करके ही कोई महत्वपूर्ण निर्णय लेते हैं। इस स्थिति में उन्हें एक ऐसी सेलीब्रिटी बना दिया कि देश के ख्यात व्यावसायिक संस्थान उन्हें अपने यहां नियमित गेस्ट वक्ता व मार्गदर्शक के रूप में आमंत्रित करने में अपना सौभाग्य समझते हैं। श्रीमती बिन्नानी का महत्व कितना है, उसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि शीर्ष निजी बैंक आईसीआईसीआई बैंक लि. की श्रीमती बिन्नानी प्रमुख प्रशिक्षक रही हैं। इस दौरान बैंक के प्रबंधकीय अधिकारियों को उन्होंने अखिल भारतीय स्तर पर प्रशिक्षण प्रदान किया। कोई भी वित्तीय संस्थान हो उनके कार्यक्रम में श्रीमती बिन्नानी की उपस्थिति उस कार्यक्रम को चार चाँद लगाने से कम नहीं रहती।

कई सम्मानों से हुई अलंकृत

ममता वर्ष 2010 में संपूर्ण पूर्वी क्षेत्र की सीएस इंस्टिट्यूट की अध्यक्ष थी। इस दौरान व्यावसायिक शिक्षा में महारथ हासिल करने पर उन्हें वर्ष 2010 में ही ''भारत निर्माण अवार्ड'' तथा ''भारत तेजस्वीनी'' सम्मान से भी अलंकृत किया गया। श्रीमती बिन्नानी प्रायः सभी विशिष्ट चेम्बर ऑफ कॉमर्स में विभिन्न पदों तथा कई एनजीओ, स्टेडी सर्कल्स, स्टूडेंट फ्रेटयूनिटी से जुड़ी हुई हैं। सामाजिक संस्थाओं मरुधारा, कोलकाता सिटीजन इनीटिटीव (एनजीओ) की उपाध्यक्ष, राजस्थान बंगाल मैत्री परिषद, मदर टेरेसा लायंस क्लब की अध्यक्ष के रूप में भी सेवा देती रही हैं। देश के कई प्रतिष्ठित समाचार पत्र-पत्रिकाओं में आर्थिक विषयों को लेकर उनके आलेख प्रकाशित होते ही रहते हैं। टी.वी. चैनल्स पर भी विभिन्न विषय पर उनके साक्षात्कार प्रसारित हुए हैं। जहां वर्तमान की नारी विवाह को कॅरियर की बाधा मानती हैं, वहीं श्रीमती बिन्नानी तो अपनी इन उपलब्धियों का श्रेय ही संयुक्त परिवार तथा सास-श्वसुर को देती है।

लड़के–लड़कियों के रिश्ते ढूँढ़ना हुआ बेहद आसान
हमारी Website है इसका सही समाधान

रिश्ते ही रिश्ते

High Status, Middle Status
NRI, Manglik, Non Manglik
Bio-Data MBA, MCA, Doctor,
Eng. Bio-Data CA, CS,
ICWA Bio-Data

Graduate,
Post Graduate Bio-Data
Professional Bio-Data
Businessman Bio-Data
Service Class Bio-Data

वैवाहिक रिश्ते

माहेश्वरी समाज के लिए 60,000 से अधिक
जैन समाज के 70,000 से अधिक
अग्रवाल समाज के 1,00,000 से अधिक

Registration Free

Website:
www.maheshwari.org
www.jain2jain.org
www.agarwal2agarwal.org

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :

39/1, Old Rajendra Nagar, New Delhi-110 060
Phones: 011-25746867, 09312946867

हैदराबाद के बच्चों के बीच ''पेड़ों वाली दादी'' के रूप में ख्यात कलावती जाजू न सिर्फ धरती को हरियाली और खुशहाली की चादर औढ़ाने का कार्य करती हैं, बल्कि उनका सपना तो हर किसी के जीवन को खुशहाली से सराबोर करना भी है। वे आंध्र प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन की अध्यक्ष भी रही हैं। आइये जाने हैदराबाद की ''झांसी की रानी'' के कृतित्व की कहानी।

लक्ष्मीनारायण काकाणी, हैदराबाद

पेड़ों वाली दादी कलावती जाजू

हैदराबाद निवासी वरिष्ठ समाजसेवी कलावती जाजू अपने पौत्र-पौत्री आदि के भरेपूरे परिवार में दादी के रूप में जितनी चहेती हैं, उतनी ही आम बच्चों में भी। इसका कारण है, उनका प्रकृति प्रेम। शहर का ऐसा कोई स्कूल या शिक्षण संस्थान नहीं है, जिसमें श्रीमती जाजू ने बच्चों के साथ मिलकर पौधा न रोपा हो। संस्था करुणा इंटरनेशनल की हैदराबाद शाखा की चेयरमेन के रूप में पर्यावरण व पशु-पक्षियों के संरक्षण के लिये देश के भावी नागरिकों को जागृत करने का उन्होंने बीड़ा उठा रखा है। वे इसमें कितनी सफल हुई हैं, इसका अनुमान बच्चों से उन्हें स्नेह स्वरूप मिले सम्बोधिन ''पेड़ों वाली दादी'' तथा हरे-भरे दिखाई देने वाले स्कूल परिसरों से ही लग जाता है, लेकिन उनकी सेवा का यह तो एक छोटा-सा आयाम है, उनके योगदानों से तो वहां का समाजसेवा का कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं है। इनका ही परिणाम है कि वर्ष 2002 में जब उन्हें ''झाँसी की रानी'' पुरस्कार से सम्मानित किया गया, तो उस पर सम्पूर्ण शहर ने गर्व किया।

चुनौतियों से भी हासिल किया हौंसला

श्रीमती जाजू को बचपन से ही समाजसेवा संस्कारों के रूप में ही मिली, जो विपरीत परिस्थितियों में उनके हौंसलों के कारण दबने की बजाय शोले बनकर और भी प्रखर हो गई। आप का जन्म शहर के ख्यात समाजसेवी स्व. श्री बद्रीनारायण राठी के यहां हुआ था। गृहस्थी की गाड़ी, तभी सुचारु चलती है जब पति और पत्नी दोनों की भागीदारी हो। 24 वर्ष के वैवाहिक जीवन की कोमलता परिपक्वता में बदलने ही वाली थी कि नियति ने आपके जीवन से पति का साथ छीन लिया। पति की आकस्मिक मृत्यु के बाद भी धैर्य ना खोते हुए आपने बच्चों की मार्गदर्शिका बन, माता तथा पिता दोनों ही दायित्वों को भलीभांति निभाया। यहीं से आपके हृदय में समाजसेवा जीवन का उद्देश्य बन गया। झांसी की रानी पुरस्कार से सम्मानित किए जाने पर जब किसी ने नारी सशक्तिकरण पर आपके विचार पूछे तो अत्यंत

आत्मविश्वास से उन्होंने उत्तर दिया, ''जिस दिन समाज की प्रत्येक स्त्री अपने कर्तव्यों और अधिकारों के प्रति सचेत हो जाएगी, उस दिन नारी ही नहीं संपूर्ण समाज का भी सशक्तिकरण हो जाएगा।'' अपनी कथनी व करनी में अंतर ना करते हुए कलावतीजी ने अपनी तीनों बहुओं को न केवल शादी के बाद पढ़ने के लिए प्रेरित किया बल्कि उन्हें स्वावलम्बी बनने की भी प्रेरणा दी।

नारी व संस्कार रहे मुख्य लक्ष्य

नारी सशक्तिकरण का सपना लिए कलावती ने स्वयं को कई संस्थाओं से भी जोड़ लिया। हैदराबाद-सिकंदराबाद मारवाड़ी महिला संगठन की सदस्या बनकर समाज में महिलाओं की भागीदारी पर गहन विश्लेषण किया और संगठन की मंत्री का पदभार 12 वर्षों तक सफलतापूर्वक सम्भाला। राजराजेश्वरी बैंक के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर पैनल में वर्षों तक सक्रिय रहने के बाद आपने महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के लिए कई सशक्त नीतियों को कार्यान्वित किया। सामाजिक कार्यकर्त्ता के रूप में आपने स्वयं को किसी सीमा में नहीं बांधा। जहां एक ओर समाज की युवा पीढ़ी को संस्कृति से जोड़ने के लिए आपने 'संस्कार धारा' जैसे सशक्ति संगठन की स्थापना की, वहीं दूसरी ओर पशु-पक्षी एवं पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी को समझते हुए करुणा इंटरनेशनल की हैदराबाद शाखा की चेयरमैन का कार्यभार भी संभाला। प्रत्येक वर्ष राजस्थानी प्रगति समाज द्वारा आयोजित रामायण मेले में आपने बाल संस्कार शिविर को आरंभ करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी तथा आज भी शिविर की सलाहकार के रूप में कार्यरत हैं।

प्रदेश का किया सफल नेतृत्व

आंध्र प्रादेशिक माहेश्वरी महिला मंडल के अध्यक्षीय कार्यकाल के तीन वर्षों में आपने अपनी अभूतपूर्व मेहनत और लगन के चलते राष्ट्रीय कार्यकारिणी बैठक आयोजन का बीड़ा उठाया तथा उसे सफलतापूर्ण निभाकर आंध्र के इतिहास में सुनहरा पन्ना जोड़ दिया। आंध्र में पहली बार इस तरह की बैठक का आतिथ्य किया गया था। समाज सेवा का अर्थ सिर्फ मिटिंग तक सीमित ना रखकर, घर-घर में सांस्कृतिक अलख जगाने को कटिबद्ध श्रीमती जाजू ने रातिजागा के गीतों के संकलन की समाज को सौगात दी। आयोजित होने वाले गणगौर उत्सव से नयी पीढ़ी को जोड़ने हेतु करीब 8 वर्षों से उत्सव को कई ऐसी प्रतियोगिताओं का रूप दे दिया है, जिसके चलते खेल-खेल में ना केवल प्रतियोगी बल्कि दर्शकगण भी तीज त्यौहार, पूजा अर्चना की पूरी जानकारी रखने लगते हैं।

धर्म परिवर्तन को भी रोका

भजन सत्संग समिति जैसी छोटी-छोटी समितियों का गठन कर आपने भजन, सत्संग, धार्मिक विश्लेषणों को नये आयाम दिए हैं। बड़ी बात ये है कि इन समितियों में विभिन्न आयु वर्ग की महिलाओं की अद्भुत भागीदारी देखने को मिलती हैं। एकल विद्यालयों द्वारा आदिवासी बच्चों तक सत्संग की शक्ति को पहुंचाना एक सराहनीय कदम है। उनके इस प्रयासों ने आदिवासियों को भी सनातन धर्म की मुख्यधारा में पहुंचाकर उनके धर्म परिवर्तन पर रोक लगाने में सहयोग दिया। लगभग प्रत्येक तीज-त्यौहार जैसे गणगौर, तीज, बछबारस, गाज इत्यादि सभी का सामूहिक उद्यापन, आवलां नवमी, एकादशी, पवित्र स्नान, चुंदरी मनोरथ जैसे कई मौके हैं, जिन पर वे सामूहिक पूजन, दर्शन इत्यादि का प्रबंध महिलाओं के लिए करती हैं। वर्तमान में समाज में बढ़ते तलाक व वैवाहिक जीवन में मतभेद उन्हें अत्यंत विचलित करते हैं, जिसके लिए कलावतीजी जल्दी ही एक काउंसलिंग सेटर खोलने के बारे में सोच रही हैं। साथ ही शीघ्र ही विधवा स्वावलंबन विषय पर भी कुछ नीतियाँ कार्यान्वित करने वाली हैं।

दृढ़ इच्छा शक्ति हो तो हर बाधा भी बौनी साबित होती है। इसका ही जीवंत उदाहरण हैं, उदयपुर की डॉ. श्रद्धा गट्टानी। उदयपुर की शान माना जाने वाला ''ओरियण्टल पैलेस रिसार्ट'' उनकी ही सोच का साकार स्वरूप है।

दृढ़ इच्छाशक्ति ने बनाया बिजनेस वूमन श्रद्धा गट्टानी

पुरुष प्रधान देश में महिलाओं के जीवन में कई तरह की पाबंदियां हैं। अगर कोई महिला घर से बाहर निकलकर व्यवसाय करना चाहे तो उसके जीवन में हजारों तरह की बाधाएं उत्पन्न हो जाती हैं, कदम-कदम पर रुकावटें पैदा करने वाले लोग मिल जाते हैं, लेकिन इन सब बातों और रुकावटों के बावजूद वर्ष 1993 में अपनी शादी के एक वर्ष के दौरान ही एक मारवाड़ी परिवार की बहू ने होटल व्यवसाय की शुरुआत की। शुरुआत में हालांकि घर-परिवार का तो काफी सहयोग मिला लेकिन समाज में उस वक्त होटल व्यवसाय को एक बदनाम व्यवसाय समझा जाता था। फिर भी अनर्गल बातों को तवज्जो दिये बिना वे अपने लक्ष्य की ओर बढ़ती गई, दिन-रात मेहनत की, परिवार को भी समय दिया, अपनी शिक्षा को भी अनवरत रखा और आखिरकार उदयपुर के सुभाष नगर क्षेत्र में 10 बीघा में 16 कमरे से शुरू किये आरियंटल पैलेस होटल को अपनी मेहनत और इच्छाशक्ति से वर्ष 1998 में 50 कमरों के होटल तक बढ़ा ही दिया और यह कर दिखाया है। आरियंटल पैलेस रिसोर्ट की प्रबंध निदेशक डॉ. श्रद्धा गट्टानी ने।

हमेशा टॉप रहने के संकल्प ने दी दिशा

पढ़ाई और गायन की प्रतिभा से अपने स्कूली समय में हमेशा अव्वल रहने वाली डॉ. गट्टानी का जन्म अजमेर में डॉ. विनोद सोमानी व विद्या सोमानी के यहां हुआ और अपनी प्रारंभिक शिक्षा वहीं से पूरी करने के बाद 18 वर्ष की उम्र में उदयपुर के नीरज गट्टानी से आपकी शादी हो गई। विवाह के बाद आपने अपनी पढ़ाई को जारी रखते हुए मीरा गर्ल्स कॉलेज से कला में बीए तक की शिक्षा पूरी की और लगातार शिक्षा से जुड़े रहते हुए बिजनेस मैनेजमेंट कोर्स किया। उस वक्त मन में एक सपना संजोया था कि घर की चार दीवारी में ही ना रहते हुए बिजनेस वूमन के रूप में अपनी पहचान बनानी है और वो भी पारिवारिक मूल्यों पर खरा उतरते हुए। अपने इस सपने को पूरा करने के लिए शादी के बाद श्रीमती गट्टानी ने होटल व्यवसाय करने की मंशा जाहिर की। इस दौरान स्वयं में व्यापारिक क्षमताओं के विकास के लिए डिप्लोमा इन बिजनेस मैनेजमेंट के साथ मार्केटिंग में 1 साल का कोर्स करते हुए 1999 में एमबीए भी पूरी की। इस बीच आपने इन सब जिम्मेदारियों का निर्वहन और पढ़ाई

करने के दौरान ही वर्ष 1994 में श्रेया गट्टानी और वर्ष 1998 में शौर्य गट्टानी को जन्म दिया।

बाधाओं को दृढ़ संकल्प से किया परास्त

हालांकि घर परिवार और खास कर आपके ससुर कृष्णगोपाल और सास कौशल्या गट्टानी ने साथ दिया, लेकिन उस वक्त एक परिवार की बहू की होटल व्यवसाय में काम करने की बात लोगों में एक अचंभे से कम नहीं थी। 16 कमरों से शुरू किये गये अपने होटल को बढ़ाने के लिए ट्रावेल एजेंट्स से मुलाकात करना शुरू की। इसके लिये आपको कई बार शहर से बाहर भी जाना पड़ता था। ऐसे में भी पारिवारिक जिम्मेदारियाँ और साथ ही साथ आपकी पढ़ाई भी परस्पर चल रही थीं। इन सभी परिस्थितियों में खुद को बनाये रखने में आपके ससुर के.जी. गट्टानी ने हमेशा प्रोत्साहित किया। इस होटल व्यवसाय को बढ़ाने के लिए आप दिन-रात मेहनत करती रही, जिसके परिणामस्वरूप होटल काफी अच्छा चलने लगा और वर्ष 1996 में होटल का विस्तार करते हुए होटल को 32 कमरों का बना दिया, जो वर्तमान में 10 बीघा में 50 कमरों के साथ निर्मित हैं।

ऐसे हुई थी शुरुआत

सुभाष नगर के 10 बीघा में फैले ऑरियंटल पैलेस रिसोर्ट का संचालन कर रही डॉ श्रद्धा गट्टानी ने पिछले 22 सालों में अपनी पुरजोर मेहनत और जज्बे से बनाये इस रिपोर्ट को तो खड़ा किया ही पर उससे पहले एक आदर्श बहू होने का गुण और साथ ही साथ व्यापार करने की बारीकियों को समझने की भरपूर क्षमता को भी अपने अंदर बनाये रखा। 50 कमरों और गार्डन हित कई सुविधाएं लिए हुए वर्तमान का यह ओरियंटल पैलेस रिपोर्ट रिसोर्ट उस वक्त एक घर हुआ करता था लेकिन पूरा परिवार यहां से श्री निकेतन में शिफ्ट हो गया। इस दौरान डॉ. श्रद्धा ने होटल व्यवसाय में आगे बढ़ने का निश्चय किया और आपने इसे घर को होटल में तब्दील करने की मंशा जताई। आपके इस फैसले को पूरे परिवार का समर्थन मिला, इस होटल को बनाने में सुबह से रात 1 बजे तक जहां आपके ससुर के.जी. गट्टानी देखरेख करते थे, वहीं रात को 1 बजे से सुबह 8 बजे तक आपकी देखरेख में काम होता था। करीब 10 महीनो तक लगातार मेहनत करते हुए 1993 में 16 कमरों से होटल की शुरुआत की।

वरिष्ठों की सेवा भी लक्ष्य

अपने से बड़ों को विशेष सम्मान और आदर भाव देने वाली डॉ. श्रद्धा गट्टानी ने समाज सेवा के क्षेत्र में एक अभूतपूर्व कार्य करते हुए वरिष्ठ नागरिकों के लिए ऑरियंटल पैलेस रिपोर्ट में ही मुस्कान क्लब की स्थापना नवंबर 2002 में की। क्लब गठन के पहले ही दिन 500 वरिष्ठजन इस क्लब से जुड़े और वर्तमान में 2000 सदस्य इस क्लब में है। यह एक मात्र ऐसा क्लब है जो पूरे सप्ताह संचालित होता है और हर शनिवार वरिष्ठजनों के लिए कई कार्यक्रम भी आयोजित होते हैं। यहाँ उन्हें घर का सा अपनत्व व साथ मिलता है।

सेवा ने दिया सम्मान

ऑरियंटल पैलेस एंड रिसोर्ट की प्रबंध निर्देशक के साथ ही एक समाज सेविका के रूप में भी कई उपलब्धियाँ प्राप्त हुई हैं, वहीं कई सम्मानों से भी नवाजा गया। वर्तमान में आप रोटरी मीरा की अध्यक्ष हैं। दिल्ली में आयोजित एक समारोह में वूमन इंटरप्रेन्योर के अवार्ड से महाराणा अरविंद सिंह मेवाड़ा के हाथों सम्मानित हुई हैं। स्कूली समय में आपको स्कूल कोकिला व स्टेट लेबल पर बेस्ट सिंगर अवार्ड, बेस्ट गर्ल ऑफ स्कूल गोल्ड मेडल भी प्राप्त हुआ है। अपने पिताजी द्वारा लिखे गये भजनों को भी आपने अपनी सुरीली आवाज में गाया है और "श्याम की मुरली" नाम से भजनों की एक सीडी लॉन्च की, जिसका लोकार्पण महंत मुरलीमनोहर शरण शास्त्री के हाथों हुआ। साथ ही स्थानीय स्तर पर बनाई गई नये-पुराने नगमों की एक सीडी में आपने आवाज दी है। वर्ष 1996 में आपने महिलाओं के अनुपम महिला क्लब में भी सेवाएं दी हैं तथा मुस्कान वरिष्ठ नागरिक क्लब की आप चीफ केयर टेकर हैं।

पुरुषों के साथ मिलकर चलें महिलाऐं

एक बिजनेस वूमन के रूप में अपनी पहचान बना चुकी डॉ. श्रद्धा गट्टानी ने पारिवारिक मूल्यों का मान रखते हुए अब तक के अपने जीवन के आधार पर यही महसूस किया कि महिलाएं पुरुषों से आगे ना चलकर साथ चलते हुए काम करें, जिससे एक समानता का भाव बना रहे। परिवार से लड़कर या अलग होकर आप कभी भी सफल नहीं हो सकते और आर्थिक रूप से स्वयं को सुदृढ़कर भी कर लिया तो आत्मिक खुशी कभी नहीं मिल पायेगी। भारत में हमने जन्म लिया है, तो क्यूं हम विदेशों से अपनी तुलना करते हैं। संस्कृति का सबसे बड़ा हनन तो इसी बात से हो रहा है कि हम अकेले आगे बढ़ना चाहते हैं, ना कि परिवार के सहयोग के साथ। हर कोई महिला घर से बाहर निकलकर काम करे यह जरूरी नहीं लेकिन अगर परिवार की जरूरत है तो बाहर निकलना पड़ेगा, पर सिर्फ स्वयं की पहचान बनाने के लिए पूरे परिवार का त्याग करना अक्लमंदी नहीं है। पारिवारिक मूल्यों को कभी भूलना नहीं चाहिए।

प्रेरक वह है, जिसकी कथनी, करनी और जीवन सभी से नये आदर्श प्रकट हों। हैदराबाद निवासी पुष्पा बूब एक ऐसी ही महिला हैं, जिन्होंने न सिर्फ स्वयं के लिए असम्भव को सम्भव किया, बल्कि कई लोगों के जीवन को भी रोशन कर दिया।

लक्ष्मीनारायण काकाणी, हैदराबाद

जीवन की राहों की रोशनी पुष्पा बूब

हैदराबाद की बेटी और बहू दोनों रूपों में जानी जाने वाली पुष्पा बूब एक ऐसी हस्ती हैं, जिनके योगदानों के सामने सम्पूर्ण शहर नतमस्तक है। उनके प्रयासों ने सैकड़ों ऐसे लोगों को अंगदान से नवजीवन दिलवाया, जिन्होंने जीवन की आशा ही खो दी थी। उनके लिए तो वे और उनके साथी भगवान से कम नहीं हैं। सेवा के लिए संवेदनाओं से ओतप्रोत हृदय के साथ उनमें एक ऐसा व्यावसायिक मस्तिष्क भी है, जो ए.पी. महेश बैंक की शिखर यात्रा का सहभागी भी रहा है।

दृढ़ इच्छाशक्ति ने दिलाई उच्च शिक्षा

श्रीमती बूब का जीवन एक ऐसी खुली किताब है, जो बरबस ही हर किसी को दृढ़इच्छाशक्ति का पाठ पढ़ा देती है। श्रीमती बूब का जन्म 11 अक्टूबर, 1953 को हैदराबाद में स्व. श्री बंशीलाल व भँवरीदेवी बाहेती के यहाँ 5 भाई-बहनों में तीसरे नम्बर पर हुआ था। एसएससी की परीक्षा उत्तीर्ण करते ही मात्र 16 वर्ष की अवस्था में 3 दिसम्बर, 1969 में आपका विवाह स्व. श्री रंगलाल बूब के सुपुत्र भगवानदास बूब के साथ हो गया। श्री बूब एक व्यवसायी थे। आम तौर पर विवाह के बाद उस समय पढ़ाई नहीं की जाती थी। लेकिन श्रीमती बूब की इच्छा उच्च शिक्षा की थी। उनके इस स्वप्न को ससुराल का भी सहयोग व प्रोत्साहन मिला और वर्ष 1971 में इंटरमीडिएट उत्तीर्ण कर लिया। इसके बाद पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण 14 वर्षों तक आगे पढ़ नहीं पाईं। इसे दृढ़ संकल्प शक्ति ही कहा जा सकता है कि 14 वर्षों के लम्बे अन्तराल के बाद भी वर्ष 1986 में श्रीमती बूब ने बी.कॉम. की परीक्षा उत्तीर्ण की।

लायंस के माध्यम से जीवनदान

श्रीमती बूब की शुरू से ही सामाजिक कार्यों में विशेष रुचि रही है। वर्ष 1972 से लायनिज्म से जुड़ीं और लायन लेडी के रूप में अपने सेवा कार्यों को आगे बढ़ा रही हैं। 1982 में चार्टर लायनेस सदस्य, लायनेस क्लब ऑफ हैदराबाद ईस्ट की बनीं और क्लब की तीन बार अध्यक्षा भी रह चुकी हैं। 2007 में लायन सदस्य बनीं और 2012-2013 में क्लब की अध्यक्षा बनीं। यह क्लब 48 वर्ष पुराना है। क्लब के कारण रक्तदान, नेत्रदान अंगदान आदि क्षेत्रों में सक्रिय रहने का अवसर प्राप्त हुआ। इसके माध्यम से अब तक लगभग 100 से अधिक व्यक्तियों का नेत्रदान कराने में सफल रही हैं। क्लब का एक ब्लड बैंक भी है, जो लगभग 28 वर्ष पुराना हैं।

महेश बैंक के विकास में भी सहयोगी

वर्तमान में ए.पी. महेश बैंक हैदराबाद अपनी सफल विकास यात्रा से सहकारी आन्दोलन का आदर्श बन चुकी है। जहाँ लोग सहकारिता को घाटे का सौदा मानते हैं, वहीं इस बैंक ने सतत सरकारी बैंकों से भी अधिक लाभ अर्जित किया, जिसका नतीजा है कि वर्तमान में यह अन्तर्राज्यीय होकर सेवा दे रही है। इसका श्रेय इसके कुशल प्रबन्धन को जाता है। इससे श्रीमती बूब भी सतत रूप से सम्बद्ध रही है। आप 1994 से ए.पी. महेश को-ऑपरेटिव अर्बन बैंक लि. से भी जुड़ीं। 1994 से 2002 तक निदेशक, 2006-2010 वाईस चेयरपर्सन, 2010-15 तक निदेशक और 2015 से पुनः निदेशक पाँच वर्षों के लिए चुनी गई हैं।

हर क्षेत्र में सेवा की सरिता

श्रीमती बूब लायंस के अतिरिक्त और भी कई सामाजिक संस्थाओं में सक्रिय हैं। जैसे 2005-06 में आप 53 वर्ष पुरानी ख्यात संस्था राजस्थानी स्नातक संघ की अध्यक्षा बनीं। स्वयंसेवी संस्था रेडक्रॉस सोसायटी की भी सदस्य हैं। आप राधाकृष्णा बालिका होम, नानल नगर, हैदराबाद को कार्यकारिणी सदस्य के रूप में सेवा दे रही हैं। इस चिल्ड्रंस एड सोसायटी को आप विगत 30 वर्षों से सक्रिय योगदान दे रही हैं। उनके स्नेह की सरिता न सिर्फ जरूरतमंद या पीड़ितों के लिए ही बह रही है, बल्कि परिवार भी इससे सराबोर है। आपके परिवार में व्यवसायी पुत्र धीरज तथा पुत्री सी.ए. अलका झँवर शामिल हैं। 5 नाती-पौत्र-पौत्री आदि के भरेपूरे खुशहाल परिवार की जिम्मेदारी भी वे सफलतापूर्वक निभा रही हैं।

अध्यात्म और शांति का केंद्र होगा हनुमतधाम

देश की पवित्रतम नदियों में शुमार शिप्रा के किनारे बसी भारत की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में पहचानी जाने वाली बाबा महाकाल की नगरी उज्जैन में हर 12 वर्ष बाद सिंहस्थ का महाआयोजन होता है। सिंहस्थ यानी कुंभ का वृहद स्वरूप। इस बार यह संयोग बना है 22 अप्रैल से 21 मई 2016 के बीच।

पौराणिक कथा के अनुसार समुद्र मंथन में निकले अमृत कुंभ को लेकर जब देव-दानवों के बीच छीना-झपटी हुई तो अमृत की कुछ बूंदें धरती पर चार स्थानों पर गिरीं- हरिद्वार, प्रयाग, नासिक और उज्जैन। इसी कारण एक निश्चित अंतराल के बाद इन चारों स्थानों पर कुंभ के मेले आयोजित होते हैं। बाकी तीन स्थानों पर तो यह कुंभ के नाम से ही जाना जाता है लेकिन कुछ विशेष संयोगों के कारण उज्जैन के मेले को सिंहस्थ कहा जाता है। यही कारण है कि उज्जैन में लगने वाले सिंहस्थ का महत्व अन्य कुंभों से कई गुना अधिक माना गया है।

पूरे एक माह तक चलने वाले इस महामेले में देवदर्शन व दान-पुण्य सहित विभिन्न धार्मिक-आध्यात्मिक गतिविधियों का लाभ प्राप्त करने हेतु दुनियाभर के साधु-संत व श्रद्धालु शामिल होते हैं। एक अनुमान के अनुसार इस बार (2016) के सिंहस्थ में करीब पांच करोड़ लोग उज्जैन की धरती के मेहमान होंगे, इसलिए यह कई मायनों में विशिष्ट होगा। इन्हीं में एक विशेषता होगी 'हनुमतधाम'।

ख्यात जीवन प्रबंधन गुरु पं. विजयशंकर मेहता के सान्निध्य में दत्त अखाड़ा जोन में भूखीमाता के सामने करीब साढ़े तीन लाख वर्ग फीट क्षेत्र में जीवन प्रबंधन समूह का कैंप लगने जा रहा है जिसे नाम दिया गया है 'हनुमतधाम'। आधुनिक स्वरूप एवं सुविधाओं से सुसज्जित इस कैंप में पूरे एक माह तक पूज्य गुरुजी के कथा-प्रवचनों सहित अन्य कई आध्यात्मिक व सांस्कृतिक गतिविधियां भी होंगी। इसमें सबसे अनूठा और अद्भुत प्रयोग होगा 'मेडिटेशन विथ हनुमान चालीसा'। यानी श्री हनुमान चालीसा के साथ ध्यान की अद्भुत विधि।

शान्ति प्राप्ति का अचूक मंत्र है हनुमानचालीसा से ध्यान

मनुष्य अपने परिश्रम व पुरुषार्थ द्वारा सफलता तो अर्जित कर लेता है परंतु उस सफलता के साथ शांति भी मिल ही जाए यह जरूरी नहीं। शांति के बिना हर सफलता अधूरी है। जीवन में सफलता के साथ शांति प्राप्त करने का अचूक मंत्र है श्री हनुमान चालीसा। वैसे तो पूज्य गुरुजी पं. मेहता द्वारा मेडिटेशन का आग्रह कई वर्षों से किया जा रहा है। लाखों भक्त इसे अपनाते हुए लाभान्वित भी हुए हैं लेकिन सिंहस्थ के दौरान इसे हनुमान चालीसा के साथ जोड़ते हुए व्यवस्थित कोर्स के रूप में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कराया जाएगा। योग विधि की दृष्टि से यह विश्व की अनूठी अवधारणा होगी। श्री हनुमानचालीसा की प्रत्येक पंक्ति मंत्र है। कुछ ऐसी चौपाइयां भी हैं जिन्हें शरीर के किसी चक्र विशेष से जोड़ते हुए जपा जाए तो अद्भुत परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। प्रत्येक चौपाई को यदि हमारी आती-जाती सांसों से जोड़ दिया तो ध्यान का एक नया ही रूप व आनंद प्राप्त होता है। इन चौपाइयों के हमारी सांसों से जुड़ते ही मन नियंत्रित होकर शांति का संचार प्रारंभ हो जाता है। इस पूरी आध्यात्मिक क्रिया के लिए ध्यान का विशेष कोर्स तैयार किया गया है जिसे नाम दिया है- 'मेडिटेशन विथ हनुमान चालीसा'।

70 विषयों पर 3000 व्याख्यान दे चुके हैं पं. मेहता

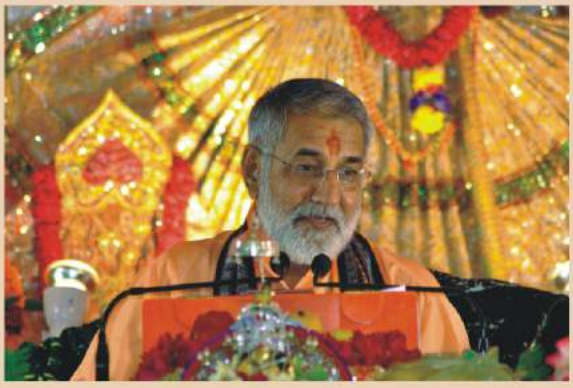

सामाजिक-राष्ट्रीय परिवेश के प्रति नई दृष्टि व अद्भुत वाकशैली के धनी, धर्म-अध्यात्म पर व्याख्यान के लिए देश-दुनिया में विख्यात जीवन प्रबंधन गुरु पं. विजयशंकर मेहता करीब 20 वर्षों के पत्रकारिता जीवन (ख्यात समाचार पत्र दैनिक भास्कर में संपादकीय दायित्व) के साथ-साथ अध्यात्म को भी पल्लवित करते रहे। अपनी अध्यात्म यात्रा में परिवार, समाज व राष्ट्र को लेकर कई विसंगतियां देखीं, अनुभव कीं और तेजी से बदलते दौर में उनके दुष्प्रभाव महसूस किए। इन बुराइयों से मानवता को बचाने के उद्देश्य से सन 2007 में आध्यात्मिक संस्था 'जीवन प्रबंधन समूह' की स्थापना के साथ ही व्याख्यान का सिलसिला शुरू किया। इसी संस्था के माध्यम से पं. मेहता देशभर सहित दुनिया के कई देशों में 70 विषयों पर करीब 3000 व्याख्यान-प्रवचन दे चुके हैं और अब तैयारी है उज्जैन सिंहस्थ 2016 में 'हनुमतधाम' की।

एडवांस बुकिंग कर उठा सकते हैं आवास व भोजन व्यवस्था का लाभ

हनुमतधाम में पधारने वाले सभी श्रद्धालु जीवन प्रबंधन समूह के खास मेहमान होंगे। आपकी मेजबानी का अवसर हमारा सौभाग्य होगा। इसलिए पूरा प्रयास होगा कि जब आप भगवान महाकाल की नगरी में इस पुनीत प्रयोजन से आएं तो किसी प्रकार की परेशानी का सामना नहीं करना पड़े। इसलिए आपके आवास-भोजन आदि की विशेष सुविधाएं जुटाई जाएंगी। स्थान सीमित होने से इन व्यवस्थाओं का लाभ पूर्व से आरक्षण के आधार पर ही उठा पाना संभव होगा। इसलिए 22 अप्रैल से 21 मई 2016 के मध्य की तिथि या जितने दिन ठहरना चाहें, एडवांस बुकिंग कर आरक्षित करवा सकते हैं। इस अवधि में कोर्स के अतिरिक्त पं. विजयशंकर मेहता के कथा-प्रवचनों सहित शिविर में होने वाली अन्य धार्मिक-आध्यात्मिक व सांस्कृतिक गतिविधियों तथा विशेष पर्वों पर शिप्रा स्नान एवं दान-पुण्य का लाभ भी लिया जा सकता है। कैंप में ध्यान कोर्स के लिए शुल्क 100 रुपए प्रति व्यक्ति रखा गया हैं। इसके अतिरिक्त निःशुल्क ऑन लाइन रजिस्ट्रेशन करवाकर संस्कार आदि टीवी चैनलों के माध्यम से घर बैठे भी किया जा सकता है। बुकिंग व अन्य विस्तृत जानकारी के लिए श्री योगेश कर्नावट से मोबाइल नं 09165500001 व श्री कुश मेहता से 09111128008 पर संपर्क किया जा सकता है।

कॉटेज जो ले रहे हैं आकार

एक ही समय पर सवा करोड़ लोग करेंगे ध्यान

देश-विदेश के कई ख्यात संतों व आध्यात्मिक विभूतियों की उपस्थिति में ध्यान की इस अनूठी अवधारणा का शुभारंभ 22 अप्रैल को शाम साढ़े छह बजे होगा। हमारा लक्ष्य है इस एक ही समय में कैंप में उपस्थित हजारों साधकों के अलावा ऑन लाइन व संस्कार सहित अन्य टीवी चैनलों पर होने वाले सीधे प्रसारण को देखकर दुनियाभर में सवा करोड़ से अधिक लोग एक साथ हनुमान चालीसा के साथ ध्यान करें। इसके लिए ऑन लाइन रजिस्ट्रेशन की प्रक्रिया जारी है। कोर्स के लिए कैंप में विशेष रूप से मेडिटेशन सेंटर बनाया जा रहा है। समय सुविधा को देखते हुए इस पूरे कोर्स को 24-24 मिनट के छह भागों में बांटा गया है। सही ज्ञान व विधि के साथ किया जाए तो मात्र 24 मिनट की यह अवधि आपको पूरे 24 घंटे के लिए ऊर्जावान बनाए रख सकती है। कोर्स को लेकर महिला-पुरुष, बच्चे-बूढ़े जैसी कोई बाध्यता नहीं है। जो भी चाहे, पूर्व रस्ट्रिेशन के आधार पर प्रवेश पा सकते हैं।

आइए.., 'हनुमतधाम' में आपका स्वागत है। भगवान श्रीकृष्ण की शिक्षास्थली उज्जैन की पावन धरती पर शिप्रा स्नान, देव-संत दर्शन व दान-पुण्य के साथ विश्व की पहली इस अनूठी गतिविधि का लाभ अवश्य उठाएं।

आप भी ले सकते हैं यजमानी का लाभ

सिंहस्थ के दौरान हनुमतधाम में होने वाली निम्न गतिविधियों के यजमान बनकर आप भी पुण्य लाभ ले सकते हैं।

1. कोर्स	2. भागवत कथा
3. रामकथा	4. शिवपुराण
5. अग्रभागवत	6. हनुमानचालीसा पाठ
7. यज्ञ	8. कॉन्फ्रेंस
9. अन्नक्षेत्र	10. शोभायात्रा
11. मन्दिर व्यवस्था	12. गुरु सेवा

13. अन्य सांस्कृतिक गतिविधियाँ।

सम्पर्क करें- श्री रमेश राय (94240 15533)

विशाल हनुमत प्रतिमा देगी नई समझ

मानव शरीर की भीतरी संरचना को समझा जाए तो इसमें सात चक्र होते हैं और हर एक का अपना स्वभाव और प्रभाव है। सिंहस्थ के दौरान हनुमतधाम में अस्थाई मंदिर का निर्माण किया जाकर उसमें हनुमानजी की विशाल पारदर्शी प्रतिमा स्थापित की जा रही है जिसके माध्यम से मानव शरीर के सात चक्र और उनमें ऊर्जा के संचरण की व्यवस्था समझाई जाएगी। निश्चित रूप से यहां आने वाला हर भक्त इस प्रतिमा के दर्शन कर हनुमानजी की भक्ति और उसके फल के प्रति एक नई समझ लेकर जाएगा।

युवतियों के प्रगति-पथ का दीपस्तंभ

सुहासिनी

निवासी कोर्स

१६ मई से १ जून २०१६

माध्यम प्रायोजक

लोकमत

माहेश्वरी विद्या प्रचारक मंडल

निरंतर प्रशिक्षण योजना

विशेष आकर्षण
किचन किन स्पर्धा

Have a VACATION for Lifetime Advance Crash Course HURRY UP - Limited Entries

खिलती कलीयों का मधुबन
कला...शोध...बोध
का त्रिवेणी संगम...

मुख्य कोर्सेस

शुल्क रु. १२,०००/-, फॉम फी: १२५/-

- सेल्फ एम्पॉवरमेंट व पर्सनॅलिटी डेव्हलपमेंन्ट - आत्मविश्वास एवम् स्व-अभिव्यक्ति को प्रभावी करनेवाला संपूर्ण व्यक्तित्त्व विकास कोर्स
- इनोव्हेटिव्ह कुकिंग- विद्यार्थीनियों का प्रात्यक्षिकों के साथ प्रत्यक्ष सहभाग ।
- फर्स्ट एड सर्टिफिकेट कोर्स- प्रथमोपचारोंका प्रात्यक्षिकोंद्वारा प्रशिक्षण
- झुंबा फिटनेस for fun energy, glow, challenge....

वैकल्पिक कोर्सेस सशुल्क

- डान्स Join Your Feet Together... Bollywood Jazz, Hip-hop, Contemporary, Salsa and Rock & Roll.
- इमेज मॅनेजमेंट- आकर्षक एवम् तेजस्वी व्यक्तित्व को प्रस्तुत करनेका फैशन मंत्रा
- ॲट्रॅकटीव एवम् आर्टीस्टीक क्राफ्ट

निवास व भोजन शुल्क रु. ३,५००/-

निरंतर कमिटी

सौ. लता काबरा	: ०९७६३२ ३८८११ अध्यक्षा	सौ. मधु डागा	: ०९४२०४ ८१६०७
सौ. शोभा सारडा	: ०९८८१२ ४१७१४ सचिव	सौ. पुष्पा राठी	: ०९३२५६ ७३५६७
सौ. अंजली राठी	: ०९४२२३ १७९११	श्रीमती माला चांडक	: ०९४२०४ ८२८७३
सौ. प्रतिभा काबरा	: ०९३२५५ ००२००	सौ. अमिता चांडक	: ०९८८१४९९८२१
सौ. कल्पना दमाणी	: ०९३२५३५८९६५	सौ. किर्ती कासट	: ०९८२२८ ९९११८
सौ. अनुराधा करवा	: ०९८८१२४८८३०	श्रीमती सावित्रा मुंदडा	: ०९३२५४ ५१४०० पदेन सदस्य

१०९९/अ, मॉडेल कॉलनी, पुणे-१६ दूरभाष : ०२०-२५६७१०९०/९१, ९३२६३५५९५०

e-mail - admin@mvpm.org, nirantar@mvpm.org

मनस्विनी... भर कर उँची उडान, कर लो स्व की पहचान

४५ + महिलाओं के लिए तीन दिवसीय कोर्स (२ जून से ४ जून २०१६ तक)

परिवार के साथ ने दिखाई प्रगति की राह

डॉ. सुनीता पेड़ीवाल

आमतौर पर यह भ्रान्ति है कि विवाह के बाद नारी का कॅरियर थम जाता है। लेकिन हकीकत में ऐसा नहीं है। जब पति-पत्नी दोनों 1 और 1 जुड़कर 11 होते हैं, तो वे सफलता की नई इबारत लिख देते हैं। आइये, जानें ऐसी सफलता की कहानी, स्वयं डॉ. सुनीता पेड़ीवाल की जुबानी।

मेरा जन्म मुंबई के साबू परिवार में हुआ, पुश्तैनी रूप से हमारा परिवार फतेहपुर शेखावाटी से है। हम पाँच बहनों और एक भाई में सबसे छोटी मैं, सबको प्यारी मैं। मेरे हुनर को आगे बढ़ाने में सभी भाई-बहनों एवम् माता-पिता का शुरू से आज तक साथ रहा है। मैंने अपने किसी भी कार्य या फरमाईश के लिए कभी ना नहीं सुनी। मेरे अंदर की प्रतिभा को निखारने में मेरे परिवार ने हमेशा ही मेरा साथ दिया। मेरी स्कूली शिक्षा सेंट थॉमस अकेडमी मुम्बई से हुई और स्नातक नरसी मौनजी कॉलेज, विले पार्ले मुम्बई से। मैंने 1998 में चार्टेड़ अकाउन्टेंट की डिग्री प्राप्त की। बचपन से ही हमें पढ़ाई के साथ बाकी गतिविधियों में भी अग्रणी रहने की शिक्षा दी गई। इसी के चलते मैंने पढ़ाई के साथ भरतनाट्यम में भी विशारद किया। कॉलेज के दौरान मैंने मुम्बई का प्रतिनिधित्व अखिल भारतीय माहेश्वरी युवा संगठन के हैदराबाद मंच में सोलो डांस प्रतियोगिता के लिए किया था। इसके अलावा मुझे बैंगलोर में अखिलभारतीय माहेश्वरी युवा संगठन द्वारा आयोजित भाषण प्रतियोगिता में भी भाग लेने का अवसर मिला। दसवीं कक्षा तक मैं एक एवरेज विद्यार्थी रही लेकिन इसके पश्चात् मैंने हमेशा ऊंचे पायदानों में अपना स्थान बनाया।

विवाह के बाद की पीएच.डी.

मेरे पिताजी श्री रामजीवन साबू ने हमेशा मुझे आगे पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। उनका मानना रहा है कि उच्च शिक्षा ही महिला का असली गहना है और उसे सुदृढ़ बनाती है। फरवरी 1999 में मेरा विवाह श्री नरेन्द्र पेडीवाल के सुपुत्र आशीष पेड़ीवाल से सम्पन्न हुआ। मेरा ससुराल ऐसा है जिसका सपना हर लड़की देखती है। ससुरजी ने हमेशा मेरा उसी प्रकार साथ दिया जैसे मेरे पिता ने बचपन से दिया। शादी उपरांत ससुरजी ने भी पढ़ने के लिए मुझे प्रेरित किया और पति ने हर काम में साया बनकर मेरा साथ दिया। सन् 2001 में मैंने एम.कॉम. पूरा किया। कुछ वर्षों की प्रैक्टिस के उपरांत मुझे भारतीय पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड़ का घडसाना का एल.पी.जी. डिस्ट्रीब्यूटर नियुक्त किया गया। 2014 में मैंने कॉमर्स में पीएच.डी. भी पूर्ण कर ली। जयपुर में इंग्लिश Vocabulary course- VocaBOOM का franchisee centre भी चलाती हूँ।

पति का साथ है सबसे बड़ी शक्ति

मेरे पति आशीष पेडीवाल मेरे सबसे बडे प्रेरक एवं साथी हैं। उनके साथ ने मुझे ये सिखाया है कि एक लडकी के जीवन में शादी कभी उसको आगे बढ़ने से नहीं रोकती अपितु पति का साथ दुनिया की बडी से बड़ी चुनौती का सामना करने की शक्ति देता है। जिंदगी में बडे उतार-चढ़ाव आये, लेकिन हमने डट कर उनका सामना किया। आज हमारा परिवार एकता की मिसाल है। मेरे दोनों बच्चे पुत्र 14 वर्ष का ध्रुव जो सिंधिया स्कूल ग्वालियर में नवी कक्षा का छात्र है और 8 वर्ष की पुत्री प्रीशा नीरजा मोदी स्कूलमें तीसरी कक्षा की छात्रा है। सभी मेरे हर कार्य में मेरा उत्साहवर्धन करते हैं। नृत्य व गायन हमेशा से मेरे पसंदीदा रहे हैं। आज भी दैनिक कार्य कलापों से समय निकाल मै डांडिया गरबा आदि में जरूर भाग लेती हूँ। जरूरतमंद बच्चों के लिए निःशुल्क ट्यूशन सेंटर भी चलाती हूँ। आज की हर महिला से मेरा यही कहना है कि जिंदगी की चुनौतियां से अगर पूरा परिवार मिलकर लड़े तो कोई भी चुनौती ज्यादा देर तक सामने नहीं टिक सकती। उच्च शिक्षा जीवन के हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण है।

भक्ति संगीत के क्षेत्र में मारवाड़ी और मराठी दोनों भाषाओं में अपनी विशिष्ट पहचान रखती हैं, अकोला निवासी सन्तोष माहेश्वरी। महाराष्ट्र ही नहीं बल्कि राजस्थान व गुजरात जैसे प्रदेश भी उनकी सूर लहरियों से गूँजते रहे हैं। छह शास्त्रीय रागों में सुन्दरकाण्ड की अद्‌भुत प्रस्तुति देने वाली तो शायद श्रीमती माहेश्वरी देशभर में इकलौती गायिका हैं।

भजनांजलि की स्वर साधिका
सन्तोष माहेश्वरी

अकोला निवासी सुरेश माहेश्वरी की धर्मपत्नी सन्तोष माहेश्वरी महाराष्ट्र की एक ऐसी भजन गायिका हैं, जिनकी सूर लहरियों ने कई ख्यात प्रवचनकारों व संतों के आयोजनों में भी चार-चाँद लगाये हैं। उनकी एक सबसे बड़े विशेषता है, छह शास्त्रीय रागों में सुन्दरकाण्ड की भावपूर्ण अद्‌भुत प्रस्तुति। यह प्रस्तुति स्वतः ही उनके संगीत के गहन ज्ञान को प्रकट कर देती है। महाराष्ट्र के साथ ही राजस्थान व गुजरात के भी कई शहर हैं, जहाँ अपने भक्ति संगीत तथा सुन्दरकाण्ड के आयोजन से श्रीमती माहेश्वरी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर चुकी हैं।

बचपन से चली स्वराधना

सन्तोष माहेश्वरी का जन्म मूलतः यवतमाल निवासी श्री विट्ठलदास मूंदड़ा के यहाँ हुआ था। बचपन से ही उनके मन में संगीत के प्रति गहरा लगाव था। हायर सेकेण्डरी तक शिक्षा ग्रहण कर लगभग 35 वर्ष पूर्व अकोला के सुरेश माहेश्वरी के साथ परिणय-सूत्र में बँध गईं। यह सौभाग्य रहा कि पति व ससुराल वालों ने उनकी संगीत की प्रकृति प्रदत्त प्रतिभा को पहचान कर इसे उभरने के लिए प्रोत्साहन व खुला आकाश दिया। श्रीमती माहेश्वरी ने अपनी इस प्रतिभा को निखारने के लिए श्रीमती कमला ताई घाटे से शास्त्रीय संगीत का विधिवत प्रशिक्षण लेकर संगीत विशारद की उपाधि प्राप्त की। फिर शरद पाण्डे से सुगम संगीत की बारीकियाँ सीखीं और ख्यात संगीतकार यशवंतदेव से भी सुगम संगीत कार्यशाला का प्रमाण-पत्र प्राप्त किया।

संतों के कार्यक्रमों में प्रस्तुति

श्रीमती माहेश्वरी गत कई वर्षों से अपने भजनों की संगीतमय प्रस्तुति देती रही हैं। विदर्भ माहेश्वरी सभा की कई स्पर्धाओं में भी प्रथम पुरस्कार प्राप्त किये। साध्वी प्रीति सुधाजी, संत मुरारी बापू, साध्वी कनकेश्वरीजी, अलकाश्रीजी, ब्रजदेवीजी, अवधेशानन्दजी, राधेकृष्णजी आदि कई संतों के प्रवचनों के दौरान उन्होंने अपने भजनों की प्रस्तुति दी, जिन्होंने सभी को मंत्र मुग्ध कर दिया और उन्हें इन संतों का आशीर्वाद प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। रामस्नेही सम्प्रदाय के पीठाधीश्वर हरिनारायण शास्त्रीजी के करकमलों से तो दिल्ली में आयोजित एक कार्यक्रम में उनकी दो कैसेट प्रेमांजलि व दरियांजलि का विमोचन भी हुआ। श्रीमती माहेश्वरी गुरुभक्ति गीत पर भी सी.डी. निर्माण की इच्छा रखती हैं।

कैसेट से टीवी चैनल तक गूँज

श्रीमती माहेश्वरी के चार कैसेट्स "नाथांजलि (मराठी-श्री डव्हा क्षेत्र मालेगाँव), दरियांजलि (मारवाड़ी-श्री रामधाम रेण राजस्थान), प्रेमांजलि (हिन्दी-रामकृष्ण के भजन) व बेटे बधाई आँगणे (राजस्थानी गीत) श्रोताओं में अत्यन्त लोकप्रिय हैं। गत दिनों गुवाहाटी में अ.भा. माहेश्वरी महिला संगठन द्वारा आयोजित राष्ट्रीय महिला महाधिवेशन में अध्यक्ष सुशीला काबरा व महामंत्री कल्पना काबरा के करकमलों से उनकी दो सीडी "बेटे बधाई आँगणे" तथा "नन्हा-सा फूल हूँ मैं" का लोकार्पण किया गया। इस द्वितीय सीडी में छोटे भजन, रामरक्षा स्तोत्र व शिवस्तुति आदि रिकार्ड हैं। श्रीमती माहेश्वरी के भजन व गीत अकोला आकाशवाणी तथा संस्कार टीवी चैनल पर भी प्रसारित होते रहे हैं। उन्हें उनके इन योगदानों के लिए राजस्थान के प्रतिष्ठित "दरिया अलंकरण कला पुरस्कार-2005" तथा गुजरात के "सरस्वती सम्मान पत्र-2009" से भी नवाजा जा चुका है।

कहते हैं कि कलाकार बनाये नहीं जाते बल्कि वे तो जन्मजात कलाकार ही पैदा होते हैं। इन पंक्तियों को साकार कर रही हैं, चित्तौड़गढ़ की रेणु सोमानी। बचपन से जो कला का सफर चला तो उसे नौकरी की व्यस्तता भी थाम नहीं पायी, बल्कि वह अब तो ऑन लाईन होकर लोगों के कम्प्यूटरों पर भी अपना जादू दिखाने लगी।

क्रॉफ्ट की दुनिया की ऑन लाइन कलाकार

रेणु सोमानी

ऑन लाईन स्टोर अमेझोन पर प्रोडक्ट के अंतर्गत "जस्ट क्रॉफ्ट" क्लिक करते ही हस्त निर्मित पेंटिंग्स, नेम प्लेट्स, फोटो फ्रेम सहित कई आकर्षक हैंडीक्रॉफ्ट आयटम्स डिस्प्ले होते हैं। ये अपनी विशेषताओं से हर किसी को आकर्षित करने में पीछे नहीं रहते। आपको यह जानकर हैरानी होगी कि इनका निर्माण किया है, चित्तौड़गढ़ की रेणु सोमानी ने। श्रीमती सोमानी का यह व्यवसाय नहीं बल्कि शौक है। कॅरियर के मामले में तो वे राजकीय उ.मा. विद्यालय अरनियापंथ चितौड़गढ़ में प्रधानाचार्या हैं। नौकरी की व्यस्तता व पैसे की विवशता न होने पर भी उनका शौक उनके हाथों से ऐसी कलाकृतियों का निर्माण करवा ही लेता है।

बचपन से चली कला यात्रा

श्रीमती सोमानी का जन्म 5 जनवरी 1966 को आगरा (उ.प्र.) में माता-पिता की प्रथम संतान के रूप में हुआ। बचपन से उनकी शिक्षा तो प्रतिभावान छात्रा के रूप में चली ही, साथ ही हॉबी के रूप में ग्रीष्मकालीन अवकाश के दौरान क्रॉफ्ट का प्रशिक्षण भी चलता रहा। श्रीमती सोमानी ने गृह विज्ञान विषय में कॉलेज में द्वितीय स्थान प्राप्त करते हुए एम.एससी. की उपाधि प्राप्त की और कैम्पस चयन से कॉलेज में व्याख्याता के रूप में कार्य करने लगी। इस दौरान भी उनकी कला की यात्रा थमी नहीं थीं। उनकी प्रेरणा माँ रहीं, जो उनके लिये मार्गदर्शक भी थीं।

फिर बदला कर्म क्षेत्र

वर्ष 1987 में 6 मार्च को आपका विवाह चित्तौड़गढ़ निवासी पूर्व सांसद श्री श्यामसुंदर सोमानी के सुपुत्र राजेंद्र सोमानी के साथ हुआ। इससे अब उनका कर्म क्षेत्र आगरा से चित्तौड़गढ़ हो गया। यहां आकर नई संस्कृति में अपने आपको ढाला। फिर 26 नवम्बर 1987 को पुत्री तथा 15 जुलाई 1992 को पुत्र का जन्म हुआ। इस दौरान भी वे प्रायवेट स्कूल में नौकरी के साथ घर पर क्रॉफ्ट क्लास सतत रूप से चलाती रहीं। राजस्थानी परिवेश में उन्होंने यहाँ की कला भी सीख ली थी।

शिक्षा की पुनः शुरूआत

विवाह व पारिवारिक जिम्मेदारियों ने उनकी शिक्षा ग्रहण करने की यात्रा को थाम सा दिया था, लेकिन उन्होंने इसे पूर्ण विराम नहीं बनने दिया। पारिवारिक जिम्मेदारियों के बावजूद बी.एड. किया और फिर राजस्थान लोकसेवा आयोग की परीक्षा उत्तीर्ण कर व्याख्याता के रूप में राजकीय उ.मा.वि. में नौकरी में लग गई। इसमें परिवार व पति का सहयोग सतत रूप से मिला। शिक्षा की यात्रा में एम.एड. किया और अब पीएच.डी. भी कर रही हैं।

नहीं थमने दी कला की साधना

पारिवारिक व नौकरी की जिम्मेदारियाँ बढ़ गई। हॉबी क्लास चलाना कॅरियर की मजबूरी नहीं रहीं। नौकरी से अच्छी आय हो रही थी। इसके बावजूद उन्होंने अपनी कला को सुप्त नहीं होने दिया। घर पर चलने वाली हॉबी व क्रॉफ्ट क्लासेस वे सतत रूप से चलाती ही रही और उनके हाथ भी सुंदर-सुंदर कलाकृतियों का निर्माण करते रहे। इसी का नतीजा है कि अब वे अमेजोन जैसे ऑन लाईन स्टोर से अपने उत्पादन भी बेच रही हैं। कॉलेज व सामाजिक संस्थाओं की क्रॉफ्ट स्पर्धाओं में श्रीमती सोमानी निर्णायक के रूप में शामिल होती हैं। उनका सपना अपनी कला को शिखर पर ले जाना है।

जब कोई भी काम परहित के लिये किया जाऐ तो वह स्वयं ''धर्म'' बन जाता है, इसके लिये यज्ञ हवन करने की ही जरूरत नहीं होती। इन्हीं शब्दों को साकार कर रही हैं, भदोही के ग्राम माधोसिंह की सुषमा कोठारी। कहने के लिये तो वे गृह उद्योग चला रही हैं, लेकिन इसका लक्ष्य पैसा कमाना न होकर परोपकार ही है। आइये जानें श्रीमती कोठारी की कहानी....

उद्यम से भी सेवा

सुषमा कोठारी

वर्तमान में 50 हजार की आबादी वाले भदोही जनपद के ग्राम माधोसिंह में सुषमा कोठारी हर गृहिणी के विश्वास का दूसरा नाम है। इसका कारण है, श्रीमती कोठारी द्वारा कीचन तथा परिवार के स्वास्थ्य के लिये निर्मित उत्पाद श्रीमती कोठारी द्वारा निर्मित होने का अर्थ ही होता है, उनकी उच्च गुणवत्ता तथा शत प्रतिशत शुद्धता की ग्यारंटी, जिस पर आंख बंदकर विश्वास किया जा सके। पांच भाइयों के संयुक्त परिवार की बड़ी बहू होने के बावजूद श्रीमती कोठारी अपना गृह उद्योग अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों के साथ भी सफलता पूर्वक संचालित करती हैं। इनको खाटा, चूर्ण, अनेक मिष्ठान तथा च्यवनप्राश सहित विभिन्न घरेलु औषधियां बनाने एवं अपने संपर्क क्षेत्र तथा नातेदारों, रिश्तेदारों एव कुटुम्बियों में वितरित करने का जुनून है। अपनी स्वर्गीय माँ से प्राप्त इन गुणों को इन्होंने कभी व्यवसाय नहीं बनाया। इससे प्राप्त लोकप्रियता को ही, ये लाभ समझती हैं।

कैसे मिली जीवन को दिशा

श्रीमती कोठारी के परिवार में कोई ऐसी आर्थिक परेशानी नहीं है कि उन्हें घर चलाने के लिये गृह उद्योग चलाना पड़े। बस उन्हें तो मार्केट में उपलब्ध अशुद्ध मसालों व अन्य खाद्य पदार्थों की स्थिति ने इस क्षेत्र में प्रेरित किया। इन्हें देखकर उन्हें लोगों के स्वास्थ्य की बहुत चिंता होती थी। बस इसी चिंता में इस क्षेत्र में कुछ करने का विचार किया और उसी विचार ने दिखाई उन्हें गृह उद्योग की राह। बस उन्होंने ठान लिया बिना लाभ कमाये कम से कम मूल्य में घर के शुद्ध उत्पादन उपलब्ध करवा कर ही रहेंगी।

उत्पादों की वृहद श्रृंखला

उनके उत्पादों की एक वृहद श्रृंखला है। जिसमें सर्वाधिक लोकप्रिय है, च्यवनप्राश। वे नींबू के रस में छुहारा, अदरक, सौंफ, हींग आदि के मिश्रण से 5-6 तरह के सुस्वाद पाचक चूर्ण, मिष्ठान में सोंठ, मेथी, बेसन के लड्डू, गोंद-गरी तथा नारियल की बर्फी, आँवले के मौसम में परिपक्व क्वालिटी के फल से मुरब्बा, आँवला, पाक तथा 20-22 आवश्यक वस्तुओं का मिश्रण करके च्यवनप्राश बनाती हैं। इन सभी के अतिरिक्त एक अति महत्व पूर्ण उत्पाद है, कुन्ढोड़ी, जो शीतकाल में सिल पर उड़द की दाल पीसकर बड़ी शुद्धता से बनाया जाता है। यह माधोसिंह के लोकेल्टी का श्रम साध्य प्रोडक्ट है, अतः इसे 'माधोसिंह कुन्ढोड़ी' का नाम दिया गया है। विगत वर्षों में नागपुर में महिला एवं युवा संगठन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित ट्रेड एक्सपो में इनके न चाहने पर भी, घर के युवाओं ने इनके सारे प्रोडक्ट्स का स्टाल लगाया था, जिसका भरपूर स्वागत हुआ था। तत्कालीन राष्ट्रीय महिला अध्यक्ष शोभा सादानी ने भी कुन्ढोड़ी में खूब रुचि ली थी।

सेवा को ही समर्पित जीवन

अपने एक-दो सहयोगियों के साथ इन सभी प्रोडक्ट के उत्पादन में लगे रहना, वाराणसी के अपने कोठारी परिवार की ही प्लास्टिक फैक्ट्री से विभिन्न नाप तौल के डिब्बे मंगाते रहना और उसमें उत्पादित वस्तुओं की पैकिंग व उसका आवश्यकतानुसार निःशुल्क वितरण इनकी दिनचर्या हो गयी है। जहां कहीं भी जाती हैं, खाटा, पाचक चूर्ण, डिब्बे युक्त बैग हाथ में रहता है। युवाओं के बीच खाटा चूरन वाली चाचीजी तथा सम वयस्कों के बीच पाचक वाली भाभीजी के संबोधन से लोकप्रिय हैं। सुषमाजी को पति तथा घर में देवरों एवं बच्चों ने इनके प्रोडक्ट को कुटीर उद्योग में रजिस्ट्रेशन कराकर, इसका व्यावसायीकरण करने का परामर्श दिया, किंतु ये सहमत नहीं हुई। अपने इन कार्य कलापों की व्यस्तता के बावजूद वर्तमान में, पूर्वी उत्तर प्रदेश माहेश्वरी महिला मंडल, भदोही जनपद माहेश्वरी महिला मंडल तथा भारत विकास परिषद भदोही शाखा में भी सक्रिय हैं।

जीरापुर म.प्र. स्थित बालाजी मंदिर में निवास कर रहीं 70 वर्षीय शकुंतला मून्दड़ा की वैसे देखी जाऐ जो किसी पद के कारण पहचान नहीं है। लेकिन वे अपने दृढ़ संकल्प से एक ऐसी प्रेरणा पुंज बनी हुई हैं, जिनमें असम्भव को सम्भव करने की सामर्थ्य है। जीरापुर-वासा बालाजी मंदिर उनकी प्रेरणा का प्रतिफल भी है।

दृढ़ संकल्प की प्रतिमूर्ति

शकुन्तला मूंदड़ा

जीरापुर वासा बालाजी मंदिर पहुँचने वाले श्रद्धालुओं की वहाँ पहुँचते ही लगभग 70 वर्ष से अधिक आयु के वरिष्ठ दम्पत्ति से भेंट होती है। अत्यंत सादगीपूर्ण वेशभूषा व मंदिर तथा श्रृद्धालुओं की सेवा के लिये तत्पर इस दम्पत्ति को देखकर प्राथमिक तौर पर हर कोई उन्हें मंदिर की व्यवस्था में नियुक्त कर्मचारी ही समझ बैठता है। फिर जब उन्हें यह ज्ञात होता है कि ये तो इस मंदिर के निर्माणकर्ता व ख्यात व्यवसायी व उद्योगपति परिवार के ही वरिष्ठ शकुन्तला व ओ.पी. मून्दड़ा हैं। तो उनके आर्श्चय का ठिकाना नहीं रहता। अपने रईसी ठाट-बाट व सुख-सुविधाओं को त्यागकर उनका वहाँ सेवा करना हर किसी को प्रभावित किये बिना नहीं रहता।

हर कदम रहीं पति की प्रेरणा

श्रीमती मून्दड़ा के पति उद्योगपति ओ.पी मूदड़ा अपने जीवन में पायी तमाम सफलताओं का श्रेय बिना संकोच अपनी धर्म पत्नी जीवन संगिनी शकुन्तला मुन्दड़ा को देते हैं। वे बताते हैं कि जीवन के विकट समय में कैसे उन्होंने संघर्ष करने के लिये प्रेरित किया, किस प्रकार पूरे परिवार को सम्हाला? अभी जीवन के उत्तरार्द्ध में भी उचित समय पर सटीक निर्णय लेने तथा उन्हें क्रियान्वित करते हुए उनकी ऊर्जा देखते ही बनती हैं। पति श्री मूँदड़ा को जीरापुरवासा गोविन्दा जैसे देव-स्थान के सान्निध्य में आलीशान बंगलों एवं नौकरों से युक्त जीवन-शैली का पूर्ण रूप से त्याग कर अपना जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा भी उनकी ही है।

कैसे बना भव्य मंदिर

श्री मूंदड़ा बताते हैं कि उनके जीवन का सर्वाधिक चुनौतीपूर्ण कार्य था-अपने पिता (श्रीकिशन जी मूंदड़ा) को दिये वचन का पालन करते हुए भगवान व्यंकटेश के मन्दिर का निर्माण करना। जब भी इस संकल्प को पूर्ण करने का विचार अन्तर्मन में आता तो सफलता को लेकर शंका-कुशंकाओं के घने साये अपना फन फैला लेते और तत्क्षण ही अपने कदम पीछे खींच लेते। इसी ऊहापोह में लगभग एक दशक से भी अधिक समय बीत गया। उनकी इस अन्तर्द्वन्द्व की स्थिति को पत्नी शकुन्तला ने भाँप लिया और पत्नीधर्म का पालन करते हुए स्वयं को दृढ़-संकल्पित करते हुए सर्व प्रथम अपने पति को तिरूपति बालाजी (आन्ध्रप्रदेश) के दर्शन हेतु प्रेरित किया। यह बात जून 1993 की है। मन्दिर में प्रतिमा के समक्ष दोनों पति-पत्नी ने संकल्प लिया कि घर लौटते ही मन्दिर-निर्माण की प्रक्रिया प्रारम्भ करेंगे और इसकी पूर्णता का समस्त भार बालाजी महाराज उठायेंगे। इस प्रकार शकुन्तला ने पति को प्रेरित कर जगतगुरू घनश्यामाचार्य जी के मार्गदर्शन मे सन् 1998 में मन्दिर का शिलान्यास करवाया। पूरे परिवार के सहयोग से श्वसुर श्री श्रीकिशन मूंदड़ा की कल्पना साकार होने लगी। लगभग 90,000 वर्ग फीट भूमि पर भव्य-मन्दिर अपना आकार ग्रहण करता रहा।

फिर खड़ी हुई व्यवस्था की चुनौती

शकुन्तला जी की अन्तः प्रेरणा ने पति के मनोबल को मजबूती दी और देवस्थान अपनी पूर्णता को तो प्राप्त हो गया किन्तु अभी भी एक यक्ष-प्रश्न सामने खड़ा था-मन्दिर की देख-रेख, सेवा-सुश्रूषा का। परिवार के वरिष्ठजनों को एकत्रित कर सबके मत और विचार लिये। किसी ने कहा ट्रस्ट या एक समिति बना दो, वो मन्दिर की देखभाल करेगी। ..तो किसी ने विचार दिया कोई वेतन भोगी विद्वान् पण्डित नियुक्त कर दिया जाये। किन्तु शकुन्तला देवी के अन्तःकरण में कुछ और ही चल रहा था, मानों उन्हें इसका सर्वमान्य हल मिल गया था। उन्होंने पति देव से कहा- "हमने अपने जीवन में सब कुछ पा लिया, सारी जिम्मेदारियाँ पूर्ण कर चुके। पुत्र आत्मनिर्भर हो गये, पौत्र अपने कर्त्तव्यों के मार्ग पर अग्रसर हैं। दुनियावी रिश्ते-नातों तथा असार-संसार के मोह से दूर होकर श्रीचरणों में स्वयं को समर्पित कर देने का यह उत्कृष्ट अवसर है। हमें अब गोविन्दा के शरणागत हो जाना चाहिये।" मन्तव्य यह है कि शकुन्तलाजी ने स्वयं ही पति को साथ लेकर मन्दिर में पूजा-अर्चना और सेवा-सुश्रुषा करने का कठोर संकल्प ले लिया था।

जीवन का अर्थ क्या है और इसका लक्ष्य क्या है? जिसने यह समझ लिया मानो उसका जीवन ही सफल हो गया। इसी प्रश्न का खुली किताब की तरह उत्तर देता है, सिकंदराबाद की वंदना राठी का व्यक्तित्व। उनकी खुशी है, बस दूसरे के चेहरे पर मुस्कुराहट तलाशना।

ज़िन्दगी जीने की कला सिखाती वन्दना राठी

सिंकदराबाद की प्रतिष्ठित उच्चशिक्षित मानव सेवा को ही माधवसेवा मानने वाले परिवार में ब्याही 51 वर्षीय श्रीमती वंदना राठी एक बहुमुखी प्रतिभा की धनी महिला है। अपने दृढ़ संकल्प नेक इरादों व मुखरवाणी के लिये जानी जाने वाली श्रीमती राठी ने शादी के 14 सालों के बाद अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को भलीभांति निभाते हुए हिंदी साहित्य में पोस्ट ग्रेज्युएशन प्रथम श्रेणी में किया और ये संभव हो पाया उनके पति सीए कमल राठी के प्रोत्साहन एवं परिवार के सहयोग से। वैवाहिक जीवन के 31 सालों के सफर में श्रीमती राठी, समाज से पिछले 17-18 सालों से जुड़ी है, परंतु समाजसेवा की भावना बचपन से ही कुट-कुट कर भरी हुई थी। अकोला के समाज ट्रस्ट के भूतपूर्व अध्यक्ष विदर्भ प्रादेशिक के भूतपूर्व अध्यक्ष स्व. डॉ. गिरीष चांडक की सुपुत्री होने के कारण निस्वार्थ भाव से समाज को निम्न तबके के लोगों के कल्याण के लिये हमेशा तत्पर रहना इन्होंने अपने पिताश्री से सीखा। उन्होंने न सिर्फ स्वयं ने ही समाजसेवा में योगदान दिया बल्कि कई स्वयं सेवी संस्थाओं की भी सौगात दी, जो सतत रूप से अपनी सेवा दे रही हैं।

सिंकदराबाद महिला मंडल की स्थापना

वर्तमान में सिकंदराबाद माहेश्वरी महिला मंडल समाज में अपने कार्यों से विशिष्ट प्रतिष्ठा रखता है। इसकी स्थापना में नींव के पत्थर की तरह श्रीमती राठी शामिल हैं। सिकंदराबाद में आज से 11 वर्ष पूर्व माहेश्वरी महिला मंडल का गठन श्रीमती राठी के ही अथक प्रयासों से हुआ, जो दूर दृष्टि व प्रगतिशील विचारधारा का परिणाम है। आज सिकंदराबाद माहेश्वरी महिला मंडल पूरे आंध्रप्रदेश में अपनी विशेष पहचान बनाये हुए हैं, जिसका श्रेय निवृत्तमान अध्यक्षा वंदना जी को ही जाता है। उनके कुशल नेतृत्व में कई सामाजिक धार्मिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ, जिसमें समाज की बहु-बेटियों को अपनी प्रतिभा, ज्ञान व कला को प्रदर्शित करने का सुअवसर मिला।

कई संस्थाओं को सेवा

माहेश्वरी समाज की निवर्त्तमान अध्यक्षा होने के साथ-साथ श्रीमती राठी शहर की कई सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़ी हुई हैं, जैसे कि रेडक्रॉस सोसायटी, एकल विद्यालय, राजराजेश्वरी बैंक, राजस्थानी ग्रेजुएट असोसिएशन आदि। श्री हरि सत्संग समिति की महिला समिति की आंध्रप्रदेशीय स्तर पर सचिव का पदभार संभाला हुआ है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी श्रीमती राठी वनवासियों के लिये सुदूर गांवों में स्वास्थ्य कैंप का आयोजन पिछले कई वर्षों से कर रहीं हैं। कई लोगों को इस तरह की सेवाओं से जोड़ने का सफल प्रयास किया है। देश में आई आपदाओं के लिये भी श्रीमती राठी ने जागरुकता दिखाकर सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन कर लाखों रुपए का अनुदान एकत्र कर जिला कलेक्टर तथा राज्यपाल को सौंपा है।

वेतन भी विद्यार्थियों को समर्पित

श्रीमती राठी दिल्ली पब्लिक स्कूल सिकंदराबाद में योगा प्रशिक्षिका एवं हिंदी की शिक्षिका का कार्य भी कर रही हैं। इसमें वे अपने पूरे वेतन को ही जरूरतमंद प्रतिभाशाली बालिकाओं पर खर्च कर देती है। इसके पीछे लक्ष्य आत्मिक शांति है और श्रीमती राठी को वास्तव में इससे आत्म संतुष्टि प्राप्त होती है। श्रीमती राठी का फलसफा है कि हँसते-हँसते हर मुश्किल राह आसान हो जाती है और मंजिल भी साफ नजर आती है। जिंदगी जिंदादिली का नाम है।

कार्पोरेट बीमा एजेंट संगीता माहेश्वरी

कहते हैं कि पैरों की धूल ही सिर चढ़कर बोलती है, बस इसके लिए हौंसला चाहिए। ठीक ऐसी ही कहानी है, इन्दौर की संगीता माहेश्वरी की। जीवन में चुनौती तो ऐसी आई कि उनका अस्तित्व ही गुम हो जाए, लेकिन यह उनका हौंसला ही है कि वे आज समाज के लिए गौरव का कारण बन चुकी हैं।

वर्तमान में हर क्षेत्र में माहेश्वरी महिलाएँ अपनी उपस्थिति ही नहीं बल्कि सफलता की विजय पताका फहरा रही है। इन्दौर निवासी 42 वर्षीय संगीता माहेश्वरी भी ऐसी ही महिलाओं में से एक हैं, जिनकी सफलता की गूँज न सिर्फ देश बल्कि विदेशों में भी सुनाई देती है। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि उनका कार्यक्षेत्र भी है, बीमा एजेंट जैसा अत्यन्त सामान्य-सा क्षेत्र। लेकिन इसमें भी उन्होंने सफलता के जो कीर्तिमान स्थापित किये, वे आमतौर पर बीमा एजेंटों के लिए बहुत बड़ा सपना ही होता है। देशभर में अंगुलियों पर गिने जाने वाले ही ऐसे बीमा एजेंट होंगे, जिन्होंने इस कॅरियर में सफलता का इतना ऊँचा शिखर छुआ हो। उनकी पहचान विशेष रूप से कार्पोरेट बीमा एजेंट के रूप में है।

कड़ी चुनौतियों से जीवन की शुरुआत

संगीता माहेश्वरी का जन्म जिला हरदा, तहसील खिरकिया के ग्राम कुड़ावा में श्री गोविन्ददास व श्रीमती सन्तोषदेवी हुरकट के यहाँ हुआ था। संगीता बहुत छोटी थीं, तभी पिता संन्यास लेकर परिवार को बेसहारा छोड़ साधु-संतों के साथ चले गये। सात भाई-बहन का भार माँ पर ही पड़ गया। माँ ने किसी तरह पाल-पोस कर बड़ा किया व पढ़ाया-लिखाया। फिर इनकी शादी इन्दौर के ईनानी परिवार में सम्पन्न हुई। शादी के पश्चात् पति व ससुर अतिशय प्रताड़ना देने लगे। इसी बीच दो बच्चों का जन्म हुआ। आज पुत्र 21 वर्ष व पुत्री 18 वर्ष की हो गई।

पति ने भी दिया धोखा

परिवार की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी। अतः बच्चों की परवरिश व उनकी स्कूल की फीस जमा करने में असमर्थ होने के कारण इन्हें बार-बार फीस माफ करानी पड़ती थी। एक बार इनको वैष्णव ट्रस्ट, इन्दौर के ट्रस्टी ने कहा कि तुम स्वयं कुछ काम करो, जिससे बच्चों की परवरिश व पढ़ाई सुचारू हो सके। जब ये काम करने निकली तो ससुर व पति ने बहुत प्रताड़ित किया। यहाँ तक कि दोनों बच्चों के साथ उन्हें घर से ही निकाल दिया। इसके बाद तो ससुर ने तलाक करवाकर तुरन्त पति की दूसरी शादी भी करवा दी। दूसरी शादी से उनके बच्चे भी हैं।

एल.आई.सी. बना आशा की किरण

जब संगीता को उनके बच्चों के साथ घर से निकाल दिया गया, तो उनके सामने सभी का गुजर-बसर एक बहुत बड़ी चुनौती के रूप में खड़ा था। ऐसे में भारतीय जीवन बीमा निगम एक आशा की किरण बना। लोगों की सलाह पर संगीता इससे बीमा एजेंट के रूप में जुड़ तो गईं, लेकिन स्वयं की अत्यन्त कमजोर आर्थिक स्थिति व दो बच्चों की जिम्मेदारी के कारण यह कॅरियर बहुत बड़ी चुनौती ही था। उनके लिए दो ही रास्ते थे, भारी आर्थिक तंगी में बच्चों का भविष्य भी खराब कर दें या इस कॅरियर की चुनौती को पूरे साहस व समझ के साथ स्वीकार करें। बस उन्होंने फैसला कर लिया, दूसरा रास्ता चुनने का। परिणाम जो भी हो, बस आगे बढ़ते ही जाना है।

कार्पोरेट हाऊस का जीता विश्वास

एलआईसी एजेंट के इस कॅरियर में ग्राहक तलाशना कोई आसान काम नहीं होता। ऐसे में भाग्यवश उन्हें इन्दौर के कार्पोरेट हाऊसेस का सहयोग मिला और वे भी उनके विश्वास पर खरी ही उतरीं। धीरे-धीरे स्थिति यह बनी कि संगीता की पहचान ही कार्पोरेट क्षेत्र की एजेंट के रूप में बन गई। नतीजा यह रहा कि उनका बीमा धन संग्रहण का ग्राफ तेजी से बढ़ता गया और वे बीमा एजेंट्स के विभिन्न सम्मानों की यात्रा को तय करते हुए पहुँच गईं, इसके शीर्ष सम्मान ''टॉप ऑफ द टेबल'' तक। इसके अन्तर्गत उन्होंने सर्वाधिक प्रीमियम पर ''कार्पोरेट बीमा एजेंट'' का सम्मान प्राप्त किया। गत 6-7 वर्षों से वे इस सम्मान को प्राप्त कर रही है। वर्ष 2012 व 13 में तो क्रमशः 2 व 3 बार इसका टारगेट पूरा किया।

सतत रूप से शिखर पर स्थान

आमतौर पर लोग सफलता के शिखर पर पहुँचने के बाद सुस्त हो जाते हैं। लेकिन संगीता ने शिखर पर पहुँचकर भी ऐसा नहीं होने दिया। वे एक बार ''टॉप ऑफ द टेबल'' सम्मान तक पहुँची, तो हर वर्ष उनकी सफलता का ग्राफ उन्हें यह सफलता दिलवाता ही रहा। एलआईसी की बेस्ट सर्विस के कारण उन्हें निगम 18 देशों की यात्रा करवा चुका है। उनकी सफलता की यह कहानी मीडिया की भी सुर्खियों में रही। इसी का नतीजा है कि 'जी-न्यूज' तथा 'जी-बिजनेस' जैसे देश के लोकप्रिय चैनलों ने गत 6 व 7 जनवरी को उनके इंटरव्यूह प्रसारित किये। अब उनकी इच्छा दोनों बच्चों को अपने पैरों पर खड़ा कर अपना सम्पूर्ण जीवन समाज सेवा में अर्पित कर देने की है। उनके जीवन के संघर्ष व मुसीबतों में यदि उनका कोई सहयोगी बना तो माहेश्वरी समाज और वे इस उपलब्धि को समाज की उपलब्धि ही मानती हैं।

आध्यात्म पथ की विरल साधिक
बसंती मनियार

जोधपुर निवासी माँ त्रिपुरसुंदरी की अनन्य साधिका बसंती मणियार का सम्पूर्ण जीवन ही आध्यात्म व समाजसेवा को ही समर्पित है। उन्होंने इसके लिये मात्र 22 वर्ष की अवस्था में ही विवाह न करते हुए आध्यात्म का पथ चुन लिया था। गुरु के मार्गदर्शन में वर्षों की कठोर साधना से आत्मदर्शन हुआ, तो उनके अंदर से करुणा का ऐसा स्रोत फूटा जो आध्यात्मिक व भौतिक दोनों रूपों में ही मानव मात्र का कल्याण कर रहा है। किसी समय उनके इस फैसले पर आपत्ति लेने वाला परिवार ही नहीं बल्कि समाज भी उन पर गर्व कर रहा है।

मारवाड़ अंचल के लिये बसंती मनिहार एक ऐसा नाम है, जो न सिर्फ आध्यात्मिक उन्नति प्रदान करने वाली साधिका हैं, बल्कि सेवा गतिविधियों से भौतिक उन्नति भी प्रदान कर रही हैं। इनकी लिखी हुई पुस्तकें भी मार्गदर्शक बनी हुई हैं।

बचपन में ही आध्यात्म का आलौक

सुश्री मनिहार का जन्म जोधपुर शहर के प्रतिष्ठित समाजसेवी एडवोकेट हरकलाल मणिहार के यहां 28 सितम्बर 1942 को हुआ। वैराग्य के अंकुर उनके मन में बचपन से ही तब फूट गये, जब वे आध्यात्म योगी एवं त्रिपुरसुंदरी के अनन्य साधक नंदकिशोर शारडा के संपर्क में आई। उनकी एक सखी मधु अडवानी ने भी जब इस पथ के चयन की मंशा बताई तो उनका संकल्प दृढ़ हो गया। बचपन से ही उनके मस्तिष्क में बादलों में चमकने वाली बिजली की तरह असंख्य प्रश्न कौंधने लगे। आत्मा क्या है, परमात्मा क्या है, चैतन्य शक्ति क्या है, साधना का क्या रूप श्रेष्ठ है, मनुष्य जीवन का लक्ष्य क्या है, हमें क्या मार्गदर्शक-गुरु मिलेगा? इत्यादि प्रश्न उनके आध्यात्म-गगन पर पक्षियों की तरह मंडराने लगे।

भावनाओं के सामने परिवार भी नतमस्तक

जैसे एक सच्चे साधक विवेकानन्द को स्वामी रामकृष्ण परमहंस मिले थे। वैसे ही उन्हें श्री नंदकिशोर शारडा मिल गये जिन्होंने उनकी हर जिज्ञासा का समाधान किया। वे पहले से इन्हीं प्रश्नों के प्रत्युत्तर ढूंढ रहे थे, फिर तो मानों भक्ति, चैतन्य एवं सेवा की त्रिवेणी बह गई। सुश्री मनिहार ने अपने पिता से इस पथ पर वर्ष 1964 यानि मात्र 22 वर्ष की उम्र में जाने की इजाजत मांगी। वह अपने पिता की परम लाडली थी। उस जमाने में ऐसी अनुमति मिलना विशेषकर जब आप एक सम्पन्न परिवार से हों, अत्यन्त दुष्कर कार्य था लेकिन भवतिव्यता उनके साथ थी। पिता को पहले तो संकोच हुआ फिर उनकी संकल्पशक्ति एवं नित्य 16-18 घण्टों की एकनिष्ठ साधना देख वे भी पिघल गये और उन्हें अनुमति देनी पड़ी।

चैतन्य पथ की बनी दिव्य ज्योति

तत्पश्चात् 'लक्ष्य पर पहुंचे बिना पथ में पथिक विश्राम कैसा' की तर्ज पर वह मां त्रिपुरसुंदरी की अनन्य साधना में डूब गई। इसी बीच नंदकिशोर शारडा का निधन हो गया। इसके पश्चात् उन्होंने जोधपुर शास्त्रीनगर में मणिद्वीप नाम से स्थान बनाया, जहां आज भी हजारों की संख्या में साधक चैतन्य-पथ की शिक्षा लेते हैं। उन्होंने स्व. श्री शारडा के अध्यात्म अनुभवों को 'मृत्यु के बाद का अलौकिक संसार' पुस्तक में संकलित किया। आज यह पुस्तक लाखों पाठकों द्वारा पढ़ी जा रही है। इस पुस्तक में आत्मा, देवी, जन्म, पुनर्जन्म, मनुष्य जीवन का लक्ष्य, हमारा जन्म कैसे सफल करें आदि अनेक विषयों की वैज्ञानिक व्याख्या की गई है। कठोपनिषद में यम-नचिकेता के संवाद की तरह इस पुस्तक में भी आध्यात्म जिज्ञासुओं के अनेक प्रश्नों का सरल समाधान है।

बालिका शिक्षा के प्रति समर्पित

जन-जन में चैतन्य की अलख जगाने के अतिरिक्त सुश्री मनिहार स्वामी विवेकानन्द स्टुडेण्ट्स वेलफेयर चैरिटेबल ट्रस्ट के माध्यम से बालिका शिक्षा को प्रोन्नत करने पर भी अनवरत कार्य कर रही हैं। उनकी प्रेरणा एवं सहयोग से अब तक पच्चीस हजार से अधिक निर्धन बालिकाओं को बिना किसी धर्म, जाति भेदभाव के शिक्षा दी जा चुकी है। यह आंकड़ा किसी चमत्कार से कम नहीं है। इस ट्रस्ट से बालिका शिक्षा हेतु लाखों रूपयों की सहायता दी जा चुकी है। वे अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित भी हुई हैं एवं हाल ही में उन्हें 'मारवाड रत्न' से भी नवाजा गया।

जहां वर्तमान में महिलाएं किटी पार्टी जैसे कार्यक्रमों में व्यस्त रहती हैं। ऐसे दौर में भी खुशी का सही पथ दिखा रही हैं, जोधपुर की उमा बिड़ला। उनके लिये बस खुशी है, तो मुरझाये चेहरों को मुस्कान देना। इससे खुशहाली भी ऐसी मिलती है, जिसका कोई अंत ही नहीं होता।

दूसरों की खुशी में खुशी की तलाश

उमा बिड़ला

समाजसेवा के क्षेत्र में उमा बिड़ला एक ऐसा नाम है, जिन्होंने कभी पद प्रतिष्ठा की कामना ही नहीं की। उन्हें जहां भी कोई जरुरतमंद मिला बस उनके हाथ उसकी मदद के लिये बढ़गये। मदद भी ऐसी कि जिसके बाद किसी और से मदद लेने की आवश्यकता न हो। उन्हें यह सेवा भावना मिली तो बचपन से ही थी, लेकिन विवाह के बाद परवान चढ़ती ही चली गई। श्रीमती बिड़ला का जन्म 7 जुलाई 1956 को जोधपुर शहर में किशन राठी एवं माता किशनप्यारी के यहां हुआ था। उनके पति घनश्याम बिड़ला ने भी इस भाव को परवान चढ़ाया।

हर जरुरतमंद की मददगार

उमा बिड़ला के लोकोपकारी कार्यों की कई अनजानी कहानियाँ हैं। वे किसी को निराश नहीं करती, उनके पास हर एक की समस्या का समाधान है। उन्होंने शहर में अनेक जरुरतमंद बच्चों के कोचिंग की व्यवस्था की है। बच्चा योग्य हो एवं संयोग से उमाजी मिल जायें तो उसका कार्य पूरा होना तय है। महिलाओं के स्वरोजगार की दिशा में उन्होंने ऐसी अलख जगाई है कि इस कार्य हेतु पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गेहलोत एवं स्थानीय सांसद चंद्रेश कुमारी ने स्वयं उनके यहां आकर उन्हें बधाई दी। जिन महिलाओं में हुनर हो, लेकिन सीमित संसाधनों के चलते घर में सिमटी हों, उन्हें न सिर्फ बाहर लाना, बल्कि उन्हें वांछित उपकरण एवं बाजार देना उनकी दिनचर्या है। वे जगह-जगह उद्योग मेला लगाकर उन महिलाओं का कार्य सुगम कर उन्हें अनवरत प्रोत्साहित भी करती हैं।

समाज में भी जागृति का अलख

पारिवारिक परिवेदनाओं के निराकरण मे उनकी भूमिका इतनी अहम् है कि अनेक बार तो वे इन परिवेदनाओं को मात्र अपनी सूझबूझ एवं कुशाग्र बुद्धि से सहज ही सुलझा लेती हैं। समस्या की जड़ अर्थात् कारणों को पहचानना एवं वांछित समाधान प्रशस्त करने में वे पारंगत हैं। इसी के चलते वे महासभा परिवार परिवेदना समिति कार्य निष्पादन प्रकोष्ठ एवं परिवार परिवेदना प्रकोष्ठ जोधपुर दोनों की सम्मानित सदस्या हैं। वे समय-समय पर गांवों में मेडिकल कैंप भी लगवाती रहती है। शादी-ब्याह में फिजूलखर्ची, झूठा डालने एवं वैवाहिक भोजों में कम आइटम्स रखे जाने पर तो उन्होंने मानो बिगुल बजा दिया है। इतना ही नहीं अनेक गौशालाओं में भी उन्होंने अनेक प्रकार का सहयोग दिया है। अपनी समाजसेवा के प्रारंभिक वर्षों में उन्होंने मृत्युभोज के विरूद्ध भी संघर्ष किया था। भ्रूणहत्या रोकने के उनके प्रयासों की स्थानीय प्रशासन द्वारा सराहना भी हुई है।

नारी स्वास्थ्य की भी चिंता

स्त्रियों की अनेक समस्याओं यथा ब्रेस्ट कैंसर, रजोनिवृति, ब्रेस्ट फीडिंग आदि पर जागरूकता बढ़ाने हेतु उमाजी दीर्घ समय से कार्य कर रही हैं। दीपावली-होली स्नेह मिलन, अन्नकूट, कृष्ण, शिव-पार्वती एवं अन्य देवों की झांकियां आदि कार्यों के द्वारा वे अन्य महिलाओं से जुड़ी भी रहती हैं, उन्हें इन कार्यों में पार्टिशिपेशन भी करवाती है। उन्होंने शहर के अनेक अनाथ आश्रम, जनाना अस्पताल, स्वास्थ्य केंद्रों में भी जागरूकता अभियान चलाये हैं। स्थानीय जनाना अस्पताल में उनके सहयोग से बिस्तर, कुर्सियां, गद्दे तक लगे हैं। उन्होंने मारवाड़ की संस्कृति को पुनर्जीवित करने हेतु शादी-ब्याह, जच्चा-बच्चा, गणगौर एवं अन्य उत्सवों के गीतों का भी 'मारवाडी गीत संग्रह' संकलित किया है। इस संग्रह के अनेक संस्करण निकल चुके हैं।

राष्ट्र के बेटी बढ़ाओ अभियान की शपथ

1. मैं जीवन में कभी-भी लड़के तथा लड़की में भेदभाव नहीं करूँगा/करूँगी तथा समानता का भाव रखूँगा/रखँगी।
2. लड़कियों की शिक्षा को प्रोत्साहित करूँगा या करूँगी तथा उन्हें आत्मनिर्भर बनाने की क्षमता प्राप्त, उसका प्रयास करूँगा/करूँगी।
3. लड़कियों के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखूँगा/रखूँगी तथा शारीरिक रूप से आत्मरक्षा के लिए समर्थ बनाने में सहयोग करूँगा/करूँगी।
4. लड़कियों पे ना तो अत्याचार एवं ना ही उनसे दुर्व्यवहार करूँगा/करूँगी तथा ना ही किसी को ऐसा करने में ही किसी तरह का सहयोग करूँगा/करूँगी।
5. हर सम्भव प्रयास कर लड़कियों की गरिमा बढ़ाऊँगा/बढ़ाऊँगी तथा उन्हें धर्मान्धता एवं अंधविश्वास से दूर रखने का प्रयास करूँगा/करूँगी।
6. दहेज-दिखावे, माँग-ताँग का नकार करते हुए उनके अधिकारों के प्रति उन्हें जागृत रखूँगा/रखूँगी।
7. कन्या भ्रूण हत्या का हर सम्भव विरोध एवं इसके लिए मारवाड़ी महासभा के सामाजिक चेतना के यज्ञ बेटी बढ़ाओ अभियान को हर सम्भव सहयोग करूँगा/करूँगी तथा सम्पूर्ण भारतवर्ष में विभिन्न जातीय एवं सामाजिक संस्थाओं के सालाना कार्यक्रम में नेताओं के स्वागत सत्कार के साथ-साथ उन तमाम माताओं का भी कार्यक्रम में सार्वजनिक अभिनन्दन हो, जिन्होंने उस वर्ष कन्या को जन्म दिया, इसके लिए पदाधिकारियों से निवेदन करूँगा/करूँगी, ताकि नई कन्या का समाज में स्वागत हो सके।

महेश राठी केकड़ीवाल
(राष्ट्रीय अध्यक्ष मारवाड़ी महासभा)

चाँदमल सारड़ा
(राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष)

ओमप्रकाश राठी
(सभापति, थाणा जिला)

रामस्वरूप डांगरा
(प्रायोजक, माहेश्वरी कन्या निधि)

माधुरी-शैलेष डागा
(बी.कॉम.)

ज्योति-संजय पेड़ीवाल
(बी.कॉम.)

मधु-महेश राठी
(एम.ए.)

सभी सदस्यों को २/३ बेटी होने पे २/३ लाख की फिक्स डिपॉझिट देनेवाली एक मात्र संस्था

देश की हर साल - पहली लड़की को तीन लाख

राजस्थान एवं देश में २.५ करोड नीम लगाने का अभिनव सामाजिक संकल्प

२६ जनवरी की एक कन्या को मुंबई में २ लाख FD द्वारा MFD

जगह जगह सार्वजनिक मिनरल वॉटर हट

नोट : मारवाड़ी महासभा अपने सदस्यों के सिवा किसी से आर्थिक सहयोग नहीं लेती है. सदस्यों से पेमेंट सिर्फ चेक द्वारा लेती है.

Regd. Add : A - One - 007, Shruti Park, Sandoz Baug, Thane (W), Maha. India - 400 607

वेस्ट मटेरियल को किस तरह उपयोगी बनाया जा सकता है, इसका उदाहरण हैं, जोधपुर की प्रीति लोहिया। वे यह कार्य सिर्फ शौकिया तौर पर ही नहीं करतीं बल्कि इसके लिये उन्होंने बकायदा कंपनी बना रखी है और उसका टर्न ओवर भी है, 60 करोड़ रुपये से अधिक।

वेस्ट से बेस्ट बनाती उद्यमी
प्रीति लोहिया

प्रीति लोहिया जोधपुर की एक ऐसी ख्यात महिला उद्यमी हैं, जिनकी पहचान वेस्ट से धन कमाने वाली महिला के रूप में है। उनकी विशेषता यह है कि उनके उद्योग में वेस्ट मटेरियल से तैयार उत्पाद 60 से अधिक देशों में निर्यात किये जा रहे हैं। इतना ही नहीं चीन के शिंघाई शहर में उनका होलसेल शोरूम भी है। उनके वेस्ट से बेस्ट बनाने के जुनून की इसे अति ही कहेंगे कि उन्होंने ताईवान की 150 कमरों वाली पूरी होटल को ही अपने उत्पादों से फर्नीचर से सुसज्जित किया है। इसके लिये होटल द्वारा उनसे संपर्क किया गया था।

एक सोच बनी स्टार्टअप आईडिया

श्रीमती लोहिया ने बी.एससी तक शिक्षा प्राप्त की है। क्रॉफ्ट डिजाईनिंग उनका शौक रहा है। पति रितेश का ग्रेनाईट व केमिकल का एक सुस्थापित व्यवसाय था। लेकिन वर्ष 2000 से 2004 के बीच की अवधि उनके लिये अत्यंत बुरी गुजरी। इसमें व्यावसायिक उतार-चढ़ाव ने उनके व्यवसाय को चौपट कर सड़क पर लाकर खड़ा कर दिया। इस स्थिति में क्या करें कुछ समझ नहीं आ रहा था। श्रीमती लोहिया उस समय शौकिया तौर पर ही हैण्डीक्रॉफ्ट तैयार करती थी। उनकी सलाह पर पति ने उनके उत्पाद व कल्पनाओं को एक वेबसाईट बनाकर उस पर डाल दिया। यहीं से हुई जीवन में नई शुरुआत, जिसकी कल्पना उन्होंने भी नहीं की थी।

इस तरह हुई शुरूआत

उन्होंने जिस तहर के हेंडीक्रॉफ्ट की तस्वीरें लगाई थी, कुछ ऐसी ही चीजों की तलाश में लॉरेन्स स्प्लेंडर नाम का एक शख्स अमेरिका से चीन जा रहा था। अचानक लॉरेंस की नजर रितेश की वेबसाईट पर पड़ी और उन्होंने रितेश से संपर्क किया। हालांकि शुरूआती बातचीत बहुत ही उत्साह जनक नहीं थी। रितेश को लॉरेन्स की बात में दम नहीं लगा। वर्ष 2004 के उस दिन के बारे में बात करते हुए आज भी रितेश की आँखे खुशी से चमकने लगती है। यह बताते हैं उस दिन लॉरेन का फोन आया कि वह जयपुर एयरपोर्ट पर हैं। यह हमारे लिये सबसे बड़ी खुशी का दिन था लेकिन दूसरी तरफ मैं बड़ी उधेड़बुन में था क्योंकि जिन चीजों की तस्वीरे मैंने वेबसाईड पर डाली थी। वे आयटम तो मेरे पास थे तो नही। खैर जैसे-तैसे हिम्मत जुटाकर रितेश लॉरेन को अपने घर ले आए। जब हमने लॉरेंस को सारी स्थिति बताई तो वे थोड़ा नाराज हुए। फिर भी वे यह समझ गए कि हम ईमानदार हैं। हममें काम करने का जुनून है। लेकिन हमारे पास बिल्कुल भी पैसे नहीं हैं। लॉरेन ने रितेश को कुछ हैडिक्रॉफ्ट आयटम जोधपुर से भेजने के लिए तकरीबन 15 लाख रुपए दे दिए और बाकि के 10 लाख रुपए अमेरिका जाकर भेजने की बात कही।

फिर दुनिया बदलने की शुरुआत

इसके बाद तो रितेश और प्रीति की जिंदगी को एक मकसद मिल गया। दोनों हर रोज सुबह-सुबह बाईक लेकर शहर में निकल जाते और हैडिक्रॉफ्ट की चीजें जुगाड़ते रहते। साल भर में दोनों ने 67 कन्टेनर्स अमेरिका भेजे। रितेश के पास भी कुछ पैसे जमा हो गए। इसके बाद उन्होंने चीन जाकर वहां के हैडिक्रॉफ्ट बाजार को ढुंढना शुरू किया। चीन से वापस लौटने के बाद रितेश ने जोधपुर में अपनी एक नई फैक्ट्री लगाई। कुछ पैसे पास में थे, कुछ बैंक से कर्ज लिया। अब उन्होंने फैक्ट्री में सबसे पहले वहां वे आयटम तैयार करवाए। जिस पर की गई पेंटिंग लॉरेंस को जोधपुर खोज रही थी। लॉरेंस को भी अपनी पसंद की खोज मिल गई। पति रितेश कंपनी के एम.डी. की जिम्मेदारी संभाल रहे थे। इसके बाद निर्यात के लिये और भी बाजार तलाशना शुरू किया। चीन के शिंघाई शहर में भी अपना होलसेल शोरूम खोला, जिससे दुनिया का खुला मार्केट मिले। वर्तमान की स्थिति सभी के सामने है।

कबाड़ है उनका रॉ मटेरियल

वर्तमान में श्रीमती लोहिया की 2 फेक्ट्रियाँ हैं और उनके इस व्यवसाय में कुल 550 से अधिक महिला जुड़ी हुई हैं। इस फैक्ट्री में उनका रॉ मटेरियल होता है। कबाड़ जो वह लोगों के घरों व कबाड़ी आदि जहां से भी उपलब्ध होता है, खरीदते हैं और उसे करते हैं, नये रूप में रिसायकल। यदि कहें कि वे कबाड़ को सोना बना रहे हैं, तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

कबाड़ ने ही दिलाया सम्मान

श्रीमती लोहिया की कम्पनी अपने प्रकार के उत्पाद बनाने वाली संभवतः विश्व की सबसे बड़ी कंपनी है। इसने उन्हें न सिर्फ पैसा बल्कि सम्मान भी दिलाया है। गत दिनों ख्यात पत्रिका इंडिया टुडे ने उनके कार्यों पर पूरा 3 पेज का एक आलेख प्रकाशित किया था। श्रीमती लोहिया को उद्योग क्षेत्र में अपने इस विशेष योगदान के लिये "भास्कर बिजनेस वुमन ऑफ द ईयर 2012 अवार्ड", "बी श्रास अवार्ड 2013", तथा "बेस्ट वुमन इंटरप्रेन्युर ऑफ द ईयर अवार्ड 2014", से भी सम्मानित किया जा चुका है।

दिया गया धन का दान तो एक समय बाद समाप्त हो जाता है, लेकिन ज्ञान-कौशल का दान प्राप्तकर्ता के पास समाप्त होना तो दूर दिनोंदिन और भी बढ़ता ही जाता है। ऐसे ही ज्ञान का दान देकर कई जरुरतमंद महिलाओं को आत्म निर्भर बना रही हैं, चित्तौड़गढ़ की रेखा अगाल।

अबला को जिन्होंने बनाया सबला
रेखा अगाल

''कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन'' सिद्धांत में विश्वास रखने वाली चित्तौड़गढ़की रेखा आगाल ने वस्त्र मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली की योजनाओं के अंतर्गत बीपीएल परिवारों को हस्तशिल्पी पहचान पत्र एवं बैंकों से अपने ट्रेड प्रशिक्षण देकर ऋण दिलाने का सराहनीय कार्य किया। मार्केटिंग व्यवस्था के अंतर्गत जिला उद्योग केंद्र के मार्फत उद्यमियों को बाजार सहायता दिलाने एवं गरीब महिलाओं का जीवन स्तर बढ़ाने में भी श्रीमती आगाल ने यथासंभव सहयोग दिया। इनके द्वारा राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन योजनांतर्गत गोबर की धूप अगरबत्ती व गोबर के गणेश, गमले, दीपक व सजावटी सामान बनाने का निःशुल्क प्रशिक्षण भी दिया गया। महिला बाल विकास विभागों की आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को भी विभिन्न ट्रेडों में प्रशिक्षण देकर गृह उद्योग स्थापित करने का कार्य किया।

संस्कारों में मिली मानवता की सेवा

श्रीमती आगाल वर्तमान में जरुरतमंद महिलाओं की सेवा कर रहीं हैं। सेवा भावना का पारिवारिक आदर्शों के रूप में बचपन में ही बीजारोपण हो गया था। उनका जन्म 6 नवम्बर 1978 को राजस्थान के भीलवाड़ा जिले के रायपुर गांव में किराना व्यवसायी रामेश्वरलाल झंवर व प्रेमदेवी झंवर के यहां हुआ। 2 भाइयों एवं 4 बहिनों में 5 वें नम्बर पर जन्मी रेखा संयुक्त परिवार में मेधावी बालिका थी। उन्होंने 12 वीं की परीक्षा में राजस्थान की मैरिट सूची में भी 20 वां स्थान प्राप्त किया। बचपन से ही समाज कल्याण में रुचि रखने वाली रेखा ने गांव के निरक्षरों को साक्षर बनाया एवं गरीब लड़कियों को फ्री ट्यूशन दी एवं पेटिंग क्रोशिया वर्क भी सिखाया। प्राईवेट ही संस्कृत में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की।

विवाह के बाद परिवार बना सहयोगी

श्रीमती आगाल का विवाह 8 मई 2001में चित्तौड़गढ़के समाज-सेवी एवं किराना व्यापार संघ के अध्यक्ष सत्यनारायण आगाल के पुत्र ड्रायफ्रूट व्यवसायी अजय आगाल से हुआ। वर्तमान में परिवार में एक पुत्र एवं एक पुत्री है। विजयालक्ष्मी कोठारी एवं डॉ. भामिनी जागेटिया, दो ननद हैं। संयुक्त परिवार में रहते हुए अपने दायित्वों एवं पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूर्ण ईमानदारी एवं कुशलता से निभाते हुए बचे हुए समय का सदुपयोग किया। प्रेम, विश्वास एवं दृढ़ता के साथ असक्षम लोगों का सहारा बनी रेखा का सासु मां से इस कार्य में विरोधाभास भी हुआ, किंतु उन्हीं की अनुमति से इस कार्य को आगे बढ़ाया। उनका प्रयास रंग लाया कि उन्हें राष्ट्रीय स्तर तक सम्मानित किया गया। कई संस्थाओं ने उनको प्रशस्ति पत्र भेंटकर सम्मानित किया। उन्होंने विभिन्न परंपराओं पर गाये जाने वाले गीतों को सरल, सुबोध एवं प्रवाहमयी भाषा में लिखा है, जो शीघ्र ही प्रकाशित होंगे। विलुप्त हो रहे लोक गीतों को बदलाव के साथ इस तरह प्रस्तुत किया है कि पढ़ी लिखी भावी पीढ़ी भी आसानी से समझ सके एवं गा सके।

बेसहारों का सहारा
सुनीता तोष्णीवाल

सोलापुर की सुनीता तोष्णीवाल ने चकाचौंध से दूर हटकर, गरीब और अनाथ बालकों के लिये उल्लेखनीय कार्य किया है। अपना खाली समय अनाथ बच्चों की परवरिश में समर्पित कर औरों के लिये जीने का संकल्प लिये आपने यकीनन एक मिसाल कायम की है। जालाना के 'मुदंड़ा' परिवार में पली-बड़ी, आपको सेवा भावना की सीख विरासत में ही मिली। विवाह ऐसे ही घर में हो गया जहां ससुर डॉ. श्यामसुंदर तोष्णीवाल भी समाजहितैषी के रूप से प्रख्यात थे तथा उन्हीं के द्वारा स्थापित अंधःशाला का काम देखते थे। ससुर जी के कार्यों से प्रभावित होकर सरकार की ओर से ''कलेक्टर प्रवीणसिंग परदेसी'' ने 'रिमांड होम' की बागडोर उन्हें सौंप दी। उन्हीं के जरिये आपको भी 'रिमांड होम' से संलग्न होने का अवसर मिला, जिसे आपने 'स्वर्णिम' अवसर में बदल दिया। आपके कार्य ने अज्ञान के अंधेरे में भटक रहे अनाथ जीवनों में ज्ञान तथा संस्कारों की आशा से उजाला कर दिया। पूरी निष्ठा और लगन से आप 'रिमांड होम' के बच्चों को श्लोक, योग, खेल, त्यौहार आदि सामान्य ज्ञान से परिचित कराने लगीं। समर्पण की मूर्ति बन आपके प्रयासों के परिणामस्वरूप 'रिमांड होम' का नाम बदलकर 'बाल सुधारगृह' रखा गया। पिछलें पंद्रह वर्षों से अविरत सेवा कर रही आपको अनाथ बच्चे बेहद सम्मान एवं स्नेह देते हैं। प्रसिद्ध नेत्ररोग विशेषज्ञ पति नवनीत तोष्णीवाल के अस्पताल के संचालन का भार भी वे संभालती हैं।

किसी समय राजस्थान की वीर भूमि पर अपनी कला की छाप छोड़ने वाली गिरिजा अब नेपाल में अपनी कला का जादू फैला रही हैं। औद्योगिक जिम्मेदारी संभालने के बावजूद उनकी कला साधना थमी नहीं बल्कि अभी भी शिखर की ओर ही बढ़ रही है।

कला की शिखर यात्री गिरिजा सारडा

विराटनगर नेपाल निवासी उद्यमी सुनील सारड़ा की धर्मपत्नी गिरिजा की पहचान बहुमुखी है। वे मूल रूप से एक ऐसी कलाकार हैं, जो विवाह पूर्व हैंडीक्राफ्ट आयटम्स यूएसए को निर्यात कर रही थीं। वर्तमान में उनका कार्य क्षेत्र बदल गया। अब वे ऑटो मोबाइल के टायरों में उपयोग होने वाले ब्युटाईल रबर ट्युब्स का उत्पादन करने वाली ''पायोनियर रबर फैक्ट्री'' की पार्टनर हैं और अपनी जिम्मेदारी बखुबी निभा रही हैं। इसके बावजूद उनके अंदर का कलाकार पूर्व की तरह ही अपनी रचनात्मकता में भी व्यस्त है। समय-समय पर लगने वाली प्रदर्शनियों में उनके डिजाईन किये वस्त्र व ज्वेलरी आदि प्रदर्शित होते ही रहते हैं।

बचपन से मिला कला का माहौल

श्रीमती सारड़ा का जन्म 18 सितम्बर 1975 को राजस्थान के सीमावर्ती कस्बे श्री गंगानगर में स्व. श्री रामदेव चितलांग्या व गायत्री देवी चितलांग्या के यहां हुआ। उनके पूर्वजों को बीकानेर के महाराज ने ही चौधरी का सम्मान प्रदान कर वहां बुलाया था। अतः यह परिवार कस्बे का अति सम्मानीय परिवार रहा है। परिवार में एक बहन पायल व दो छोटे भाई विक्रम तथा आदित्य हैं। माता-पिता भी अपने आप में अच्छे कलाकार रहे हैं। अतः बचपन से ही कला का माहौल मिला। पारिवारिक महत्व के कारण इस क्षेत्र की कई हस्तियों से भी भेंट होती रही।

उच्च शिक्षा में भी कला साधना

उच्च शिक्षा में भी कला का साथरम्परागत रूप से श्रीमती सारड़ा ने अजमेर विश्वविद्यालय से बी.कॉम तथा एलएलबी की उपाधि प्राप्त की। लेकिन उनकी विशेषज्ञता तो सतत प्रशिक्षण से पेंटिंग, नृत्य, गायन व संगीत उपकरणों के वादन में ही उत्कर्ष की ओर बढ़ती रही। अपनी इसी रुचि के कारण गिरिजा ने कम्प्युटर साईंस में पीजी डिप्लोमा करने के पश्चात ज्वेलरी मेकिंग, फैशन डिजाईनिंग, टेक्सटाईल्स डिजाईनिंग व प्रिंटिंग आदि के क्षेत्र में भी प्रशिक्षण प्राप्त किया। गंधर्व कला केंद्र से कत्थक में भी उपाधि प्राप्त की।

समाजसेवा में भी सक्रिय

विवाह बाद समाजसेवा में भी कदम रखा। गिरिजा का विवाह विराटनगर नेपाल निवासी नंदकिशोर सारडा के सुपुत्र सुनील सारडा के साथ हुआ और उनके जीवन में परिवर्तन आ गया। अब उनकी जिम्मेदारियों में व्यावसायिक जिम्मेदारी के साथ ही समाजसेवा भी जुड़ गई। वर्तमान में गिरिजा नेपाल माहेश्वरी महिला संगठन की अध्यक्ष के रूप में अपनी सेवा देते हुए महिला सशक्तिकरण पर कार्य कर रही हैं। यहां देवर-देवरानी व ननद आदि का भरापूरा परिवार है, जिसकी जिम्मेदारी भी वे सफलतापूर्वक निभा रही हैं।

दम पसंदा

सामग्री- 2 कप मिक्स व्हेजीटेबल (फूलगोभी गाजर, बेबीकॉर्न, फ्रेंचबीन्स आदि के बड़े टुकड़े करके तल लें) 10 ग्राम पनीर मसाले के लिये 1/4 कप दही, 2 चम्मच बेसन, 1 चम्मच कसुरी मैथी, 1 चम्मच अदरक-लहसून की पेस्ट, 1 चम्मच जीरा पावडर, 1 चम्मच तंदुरी मसाला, 4 चम्मच हरा धनिया, आधा चम्मच नींबू का रस, नमक, ग्रेव्ही के लिये 2 टमाटर, 2 प्याज, 1 चम्मच अदरक-लसहन की पेस्ट, 2 कप पानी, 1 टी स्पून गरम मसाला, लाल मिर्च पावडर, 1 टी स्पून शक्कर, सजाने के लिये हरा धनिया, थोड़ी सी क्रीम, तड़के के लिये तेल या बटर।

विधि- एक पॅन में तेल गरम करें। ग्रेव्ही की सामग्री मिक्स करके पीस ले। मसाले की सामग्री मिक्स करके उसमें सारी सब्जियां मेरीनेट कर लें, आधा घंटे के लिये। तेल गरम होने पर मेरीनेट वाली सब्जियों को तल के निकाल लें। फिर ग्रेव्ही वाली पेस्ट और मेरीनेट वाला बचा हुआ मिश्रण दोनों मिलाकर भून लें। मसाला भूनने में सारे सूखे मसाले मिला लें। फिर 2 कप पानी मिलाकर उबाल आने पर तली हुई सब्जियां डाले। 2 मिनिट पकाकर सर्व करते समय उसे क्रीम व हरा धनिया से सजाकर पेश करें।

पूनम राठी
मो. 99700 57423

आन्ध्र प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन

(अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी महिला संगठन की प्रादेशिक इकाई)

अध्यक्षा
सौ. कलावती जाजू
93924-11667

कोषाध्यक्ष
सौ. उर्मिला साबू
93924-11667

वरिष्ठ उपाध्यक्ष
सौ. तारा भट्टड़
93924-11667

उपाध्यक्ष :
सौ. शोभा डागा (हैदराबाद), सौ. माला लोया (सिकन्दराबाद),
सौ. अनिता मालाणी (निजामाबाद), सौ. प्रेमलता माहेश्वरी (राजमहेन्द्री)।

सहमंत्री :
सौ अर्चना सारड़ा (जहीराबाद), सौ. लीला बजाज (हैदराबाद),
सौ. उषा मोदानी (निजामाबाद), सौ. रमा भूतड़ा (मचेरियल)।

मंत्राणी
सौ. रेणु सारड़ा
92463-35390

संगठन समिति : सौ. संगीता भूतड़ा, सौ. लीला बंग। *सांस्कृतिक समिति :* सौ. मीना नावधर, सौ. लता तोषनीवाल।
विवाह सहयोग व सम्बन्ध समिति : सौ. डॉ. रतनमाला साबू, सौ. शकुन्तला चौहान। *स्वाध्याय समिति :* सौ. राजश्री करवा, सौ. मंजू माहेश्वरी।
स्वास्थ्य समिति : सौ. पुष्पा बूब, सौ. डॉ. दीप्ति बल्दवा। *प्रचार-प्रसार समिति :* सौ. श्यामलता नावंधर, सौ. अजना अट्टल।
वेबसाइट एवं तकनीकी प्रशिक्षण समिति : सौ. पूजा काबरा, सौ. कविता हेड़ा। *महिला अधिकार समिति :* सौ. वन्दना राठी, सौ. कविता तोषनीवाल।
उद्योग समिति : सौ. अनुराधा नावंधन, सौ. निर्मला बजाज। *बाल संस्कार समिति :* सौ. मंजू लाहोटी, सौ. सुनीता नावंधर।
किशोर-किशोरी विकास समिति : सौ. प्रेमलता तापड़िया, सौ. बीना लड्ढा, सौ. सुनीता झँवर।
कार्यकर्त्ता प्रशिक्षण समिति : सौ. रजनी राठी, सौ. अन्नपूर्णा राठी, सौ. विजया बंग।

घर-घर में जागृति समाज की उन्नति

घर-घर में जागृति समाज की उन्नति

हार्दिक शुभकामनाएं.....

Dalia's™
High in Quality, Rich in Taste

श्री निवास एंड ब्रदर्स
SRINIVAS & BROTHERS

किराणा एवं सूखे मेवे व सभी किस्म के मुरब्बे तथा अचार एगमार्क शहद उपवन ग्रेड-ए
सच्चा मोती एगमार्क साबुदाना सुपर कोकिला मेहंदी

14-7-371/17, बेगम बाजार, राजाबहादुर बिल्डिंग के सामने, हैदराबाद-500012
फोन-24745570, 24606726, 24615438
e-mail : contact@dalias.in web : www.dalias.in

With Best Compliments From

Radhika Plastics

All Variery Covers, P.P., L.D. H.M., Air Bubble, EPE Foam, SPF, PVC Shrink, Kirana Bags,
Carry Bags Sheet, P.P. Rolls, Self Lock, D-Cut Bags, Sutli, Patti Clips, Tapes, Stretch Film Rolls Etc.

M. Sanjay Kumar

| Phone : 040-65260425 | Mobile : 99516-07620

S.No. 4-57, Balanagar 'X' Road, Gandamma Temple Lane, Balanagar, Hyderabad (A.P.)-37

'हजारों फूल खिलते है चमन में, कौन किसका खिलना खिलाना याद रखता है। जो स्वयं को मिटा कर दे, चमन को जिंदगी, उसे बहारे याद करती है, जमाना याद करता है।' ये पंक्तिया पूर्णतः लागू होती हैं, भंडारा (महाराष्ट्र) की 51 वर्षीय सुषमा मुंदड़ा पर, जिन्होंने स्वयं की किडनी 30 वर्षीय महिला को दानकर नवजीवन दे दिया।

औरों को जीवन देती सुषमा मूँदड़ा

अपने इस महान अंग दान से सुषमा ने सभी के दिलों में जगह बना ली। आज के इस भौतिक वादी युग मे जहाँ कोई अपनी पुरानी वस्तु भी किसी को नहीं देते, वहाँ किसी अन्य परिवार की महिला के लिए अंग दान वो भी इतनी कम उम्र में, सच में ये कार्य बड़े दिल वाले ही कर सकते हैं। सुषमा भिलाई - दुर्ग के प्रसिद्ध समाजसेवी स्व. श्री झुमरलाल टावरी (स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और गौ भक्त) एवं रुक्मणी देवी टावरी (दादीजी) की 9वीं संतान हैं।

सभी के लिये स्नेह की सरिता

6 भाइयों और 2 बहनों से छोटी सुषमा हमेशा से सेवा भावी रही है। उनका विवाह गोंदिया निवासी सी ए सर्वेश्वर राधावल्लभ मूंदड़ा के साथ 1987 को हुआ। संयुक्त परिवार में प्रत्येक के सुख दुःख में सहभागी होती हुई वे जल्दी ही अपनी सासु माँ सीता देवी की भी प्रिय हो गई। इनकी इकलौती संतान पुत्री शिवानी का विवाह 3 वर्ष पूर्व वर्धा निवासी गोविन्द चितलांग्या के साथ सम्पन्न हुआ। सुषमा जहाँ भी गई सब को अपने स्नेह की डोर में बांध लिया। वैसे तो भंडारा बड़ा शहर नहीं है पर यहाँ का माहेश्वरी परिवार बहुत बड़ा है, इन सबको एक सूत्र में बांध कर माहेश्वरी महिला मंडल की स्थापना का श्रेय भी सुषमा को जाता है। समय समय पर कई जन जागरण के कार्यक्रम लेकर ये महिला मंडल तेज़ी आगे बढ़ रही है।

कई स्थानाओं संस्थाओं ने किया नमन

सुषमा के किडनी के अतुल्य दान के पश्चात् कई सामाजिक संस्थाओं ने इन्हें को सम्मानित किया। जिसमें मुख्यतः माहेश्वरी महिला मंडल -भंडारा, विदर्भ प्रादेशिक माहेश्वरी संगठन श्री राम मित्र मंडल - भंडारा व जैन प्रादेशिक संगठन- भंडारा द्वारा स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया। अपने माता-पिता को अपनी प्रेरणा मानने वाली, नारायण सेवा संस्था - मुम्बई को सकारात्मक प्रेरक कहने वाली सुषमा अपनी भाभी मीना टावरी से भी बहुत प्रभवित रही, जिन्होंने 5 वर्ष पूर्व स्वयं का लिवर अपने देवर को दे कर उसे नवजीवन प्रदान किया। ऐसे सहज, हँसमुख, उच्च विचारों वाली सुषमा ने अब अपने जीवन का ध्येय यही बना लिया। कहती हैं मृत्यु के बाद भी जिन्दा रहना चाहते हैं, तो जरूरतमंद को अंगदान जरूर करें।

गाँव की ज्योति नेहा भदादा

नेहा भदादा

यदि मन में दृढ़ संकल्प हो तो कोई भी विपरीत परिस्थिति आगे बढ़ने से नहीं रोक सकतीं। इसका उदाहरण है माण्डल जिला भीलवाड़ा निवासी कृष्णगोपाल ईनानी की सुपुत्री व अक्षत भदादा की धर्मपत्नी नेहा भदादा। नेहा ने मांडल जैसे छोटे से कस्बे में जन्म लेने के बावजूद उच्च शिक्षा का अपना सपना नहीं छोड़ा। इसका नतीजा आज सबके सामने है। उन्होंने सीए तथा सीएस की उपाधि प्राप्त की है। विवाह पश्चात वे पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हुए सीए के रूप में कार्य भी कर रही है। उनकी इस उपलब्धि को समाचार पत्र राजस्थान पत्रिका ने भी प्रकाशित किया। मांडल से निकली 24 वर्षीय नेहा की ललक है कि ग्रामीण क्षेत्रों निकलने वाली युवतियों को उच्च मुकाम हासिल करने में सहयोग करें। अभी वे गृहिणी के साथ प्रोफेशनल काम भी कर रही है। नेहा बताती है कि परिजन चाहते थे मैं इंजीनियर बनूं क्योंकि भाई इंजीनियर है। मेरा अलग ही लक्ष्य था इसलिए मैंने चुनौतियों को स्वीकार किया और अब मुकाम पर पहुंच गई।

अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस के उपलक्ष्य में समाज की गरिमामय नारी शक्ति को सादर नमन

Sharad Gopidasji Bagdi

(Port Folio Consultant)

"Wealth Creator of Decade"
Award from Motilal Oswal Sec Ltd.

- भारत विकास परिषद्, (Group Leader, Prachar prasar pramukh). उपाध्यक्ष, संयोजक ऑफ प्रान्तीय अधिवेशन, नेशनल अध्यक्ष व सत्यनारायण नुवाल (सोलर इण्डस्ट्रीज लिमिटेड के हाथों 'विकास रत्न')
- श्री बीकानेरी माहेश्वरी पंचायत सदस्य
- CAFE(child adoption for Education) member..
- Kendriya manav adhikar parishad(Bureao chief) Retired District court judge & marathi film star prakash bhushan के हाथों 'समाज रत्न' व 'समाज भूषण' से सम्मानित
- Laghu Udyog Bharti(member) CONVENOR for National Conference in which 1750 delegates from all over India & seven state, centre cabinate minister attended.
- Lions club of Nagpur(Director)
- Lions International District 323H1, service week convenor & cabinate officer. VDG& DG awarded several times for social work..
- Jeevan Suraksha Prakalp (मार्ग निर्देशक) अपघात मुक्त नागपुर के किये गये कार्यों के लिए महाराष्ट्र ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर मा रावटे व मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडनवीस के हाथों पुरस्कृत व सम्मानित
- Rotary club of Nagpur Elite(vice president & advisor). recently on 4th march Rotary District governor gave "ACHIVERS AWARD FOR OUTSTANDING SERVICES TO SOCIETY"..
- vidarbha sewa samiti member..
- Vivekanand kendra (patron member).

Gokul, Behind Vazalwar Lawns Khare Town,
Dharampeth Nagpur-440010
Mobile : 9325656776/9890017745,
E-mail : sharadbagdi@rediffmail.com

इनकी सेवा की भी बानगी

किसी की उपलब्धि को किसी सीमा में नहीं बाँधा जा सकता। समाज में ऐसी भी कई महिलाएँ हैं, जो चाहे राष्ट्रीय या अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान नहीं बना पाई, लेकिन उनकी समर्पित सेवा सभी के लिए प्रेरणा ही बनी हुई है। आइये... हम परिचय करवाते हैं, ऐसी ही कुछ प्रेरक महिला व्यक्तित्वों से।

सिकन्दराबाद महिला मण्डल अध्यक्ष
रजनी राठी

रजनी राठी का जन्म उत्तरप्रदेश के बहराइच जिले में हुआ। शुरु से ही सामाजिक कार्यों में रुचि थी। अतः बी.ए. की डिग्री प्राप्त करने के पश्चात् स्थानीय महिला मण्डल से सक्रिय रूप से सम्बद्ध हो गईं। हैदराबाद में अपनी पारिवारिक जिम्मेदारी पूरी करने के बाद सिकन्दराबाद माहेश्वरी महिला मण्डल में सक्रिय भूमिका निभाते हुए आज अध्यक्षा के पद पर सेवा दे रही हैं। गत 10 वर्षों में कोषाध्यक्ष व सहमंत्री जैसे पदों पर रहकर भी मण्डल को अपना अमूल्य योगदान दिया। आन्ध्र प्रादेशिक माहेश्वरी महिला संगठन की कार्यकारिणी सदस्य हैं। हरि सत्संग महिला समिति जो कि एकल विद्यालय से जुड़ी संस्था है, उसमें कोषाध्यक्ष के रूप में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके द्वारा ग्रामीणों के बच्चों की शिक्षा का कार्य करने गाँव-गाँव जाती हैं। समृद्धि क्लब जो कि बहुओं के सर्वांगीण विकास के लिए तत्पर हैं, उसकी संस्थापक सदस्याओं में से एक हैं। उन्होंने महिला मण्डल के माध्यम से समय-समय पर सामाजिक कार्यों के साथ-साथ गरीबों के उत्थान एवं उनके निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण तथा उनकी आर्थिक समस्याओं के निवारण हेतु कई सराहनीय कदम उठाये हैं।

सामाजिक कार्य की मिसाल
लक्ष्मी बाहेती

डांडेली निवासी 75 वर्षीय लक्ष्मी बाहेती के पति श्री जवाहरलाल बाहेती स्थानीय पेपर मिल में मैनेजर थे। मूलतः उनका परिवार बाड़मेर (राजस्थान) का निवासी है। यहाँ रहते हुए सामाजिक सेवा में श्रीमती बाहेती डांडेली के लिए एक मिसाल बन गई हैं। बड़ा परिवार व बड़ा कारोबार होने के बावजूद उनका अधिकांश समय सेवा में ही गुजरता। प्रातः 4 बजे से पूजा-पाठ, सामाजिक सेवा, इसके बाद कहीं अन्य जगह जाना होता, तो पैदल ही निकल जाती। शहर में कहीं भी दुःख-सुख, मन्दिरों में कार्यक्रम होता, तो वे अपने तन-मन-धन से पूर्ण सहयोग करती। आपकी विशेषता धार्मिक स्थलों के दर्शन, अपने महिला संगठन के साथ 51 बार पूरे भारत के तीर्थ-स्थलों, चारों धाम व कैलाश मान-सरोवर की यात्रा की। आप सादा जीवन, उच्च विचार की पक्षधर रहीं। गृहस्थी के सभी कार्य में भी निपुण हैं और भावी पीढ़ी को प्रशिक्षण दे रही हैं। भोजन एक समय करती हैं। आपके चार पुत्र, पौत्र व पौत्री सहित भरापूरा परिवार है। न सिर्फ परिवार बल्कि समाज के लिए भी उनका आदर्श जीवन प्रेरणा-स्रोत बना हुआ है।

जब शक्ति संगठित होती है तो वह कई गुना बढ़ जाती है। इतना ही नहीं इससे वह सकारात्मक दिशा भी मिलती है, जो समाज का ही नहीं बल्कि मानव मात्र का कल्याण कर सकती है। अहमदाबाद की इंद्रा राठी ने इन्हीं आदर्शों का अनुसरण करते हुए नारी शक्ति को गुजरात महिला संगठन सहित विभिन्न सगठनों में संगठित कर संगठन की अनूठी सौगात दीं।

नारी शक्ति की एकता की सूत्रधार

इन्द्रा राठी

सोमानी परिवार में सन् 1944 में ब्यावर (राजस्थान) में इंद्रा राठी का जन्म हुआ और सन् 1957 में किशनगढ़ के राठी परिवार में रामनिवास राठी के साथ इनका विवाह हुआ। विवाह के पश्चात सन् 1964 में इस परिवार ने अहमदाबाद को अपनी कर्मभूमि बनाई तथा धीरे-धीरे समग्र गुजरात में माहेश्वरी परिवार को एकजुट करने का प्रयास किया। सर्व प्रथम गुजरात माहेश्वरी महिला मंडल की स्थापना द्वारका में हुई और इंद्रा राठी उसकी प्रमुख संस्थापक थी। गुजरात राज्य में अहमदाबाद, सूरत, बड़ौदा आदि अनेक जगह पर बैठक करके संगठन के प्रारंभिक काल में अपने अनुभव के आधार पर सर्व गुजरात माहेश्वरी महिला संगठन को व्यवस्थित करने का प्रयास किया। गुजरात एक ऐसा प्रदेश है जहां पर गुजराती बंधुओं एवं बहनों का अधिपत्य है। यहाँ पर माहेश्वरी समाज की महिलाओं का संगठन बनाया और संगठन के अंतर्गत अनेक सेवा कार्य किये। मोरबी शहर की बाढ़ से बर्बादी के पश्चात गुजरात माहेश्वरी महिला संगठन ने बहुत ही सुंदर एवं रचनात्मक कार्य किया। तत्पश्चात अहमदाबाद में माहेश्वरी प्रगति मंडल के तत्वावधान में श्री माहेश्वरी महिला संगठन की स्थापना की, जो अभी तक माहेश्वरी प्रगति मंडल के साथ काम कर रहा है।

लायन्स में भी कीर्तिमान

सन् 1986-87 में आप लायंस क्लब ऑफ दिग्विजयनगर की अध्यक्ष बनी और इन्होंने काफी सुंदर कार्य किया। चार राज्यों की मल्टिपल-गुजरात, राजस्थान, महाराष्ट्र एवं मध्यप्रदेश के सभी लायनेस क्लब में सर्वोत्तम प्रेसीडेंट तथा सर्वोत्तम क्लब का अवार्ड जीता। उस समय तो लायनेस को भी लायंस इंटरनेशनल द्वारा मान्यता प्राप्त हुई थी। अतः गुजरात के समस्त माहेश्वरी समाज के नाम को गौरवान्वित किया। सन् 1974 से लायनेस बनी श्रीमती राठी अभी भी लायन्स के अंतर्गत अनेक सुंदर कार्य कर रही है। शिवानंद आश्रम में सुंदरता, शांति, चित्त प्रार्थना हेतु सुंदर भवन बनाने के लिए सन् 1985 में एक लाख रुपये का दान दिया। आज भी उस भवन में शांति हेतु अनेक संत प्रार्थना करते हैं।

सेवा के वृहद आयाम

इसके पश्चात् 1998 में उन्होंने "सखी संगठन" की स्थाना की। इसी सखी संगठन की संरक्षक सदस्य के अंतर्गत समान विचार वाली माहेश्वरी महिलाओं को संगठित किया, जो हर वर्ष लगभग 5 लाख रुपए के समाजसेवी प्रोजेक्ट करती हैं। श्रीमती राठी अनेक संस्थाओं से जुड़ी हुई हैं और सेवा क्षेत्र में अनेक प्रशंसनीय कार्य कर रही हैं। गांधी लेप्रोसी सेवा संघ में कुष्ठरोगियों के लिए डिस्पेंसरी स्थापित की, जहां पर उनका इलाज होता है। इसी लीपर्स कॉलोनी में लीपर्स भाई-बहनों के लिये 5 लाख रुपए का दान देकर सुंदर राम मंदिर बनवाया। इस प्रकार इनकी देखरेख में अनेक समाजपयोगी कार्य हुए हैं और सेवाकार्य में ये सदैव अग्रणी रहती हैं और बड़े ही सुचारु तरीके सेवाकार्यों को परिणाम तक पहुंचाती हैं।

सौन्दर्य विशेषज्ञ

डॉ. तृप्ति राठी

आध्यात्म मन की सुंदरता बढ़ाता है और सही मार्गदर्शन तन की। आप बाह्य सुंदरता निखार कर अपना आत्मविश्वास बढ़ा सकते हैं। यही मानना है कि सोलापुर की प्रसिद्ध सौंदर्य विशेषज्ञ 'तृप्ति राठी' का जो "लूक गुड फील गुड" इस उक्ति द्वारा महिलाओं की सौंदर्य समस्याओं का इलाज कर, उन्हें लाभान्वित कर रही है। डॉ. तृप्ति ने पुणे में स्कूली शिक्षा प्राप्त कर 'परभणी' से कॉस्मेटॉलॉजी की डिग्री प्राप्त की। डॉ. राठी वर्तमान में स्वयं द्वारा स्थापित 'द्वारका स्कीन एंड कॉस्मेटॉलॉजी' क्लिनिक का काम देखती हैं। जहां जरुरतमंदों को नियमित रूप से मुफ्त जांच की सुविधा मुहैया करवाई जाती है। इसके अलावा विविध सामाजिक संस्थाओं के सहयोग से लगने वाले निःशुल्क कैम्प में भी ये सदैव सेवाएं देती है। इसके लिये कई बार आपको सम्मानित भी किया जा चुका है। अनेक शारीरिक व्याधियों जैसे सफेद दाग, फोड़े, कालापन, गंजापन आदि का सफल इलाज कर रोगियों को नयी आशा, नया विश्वास प्रदान करती हैं। राष्ट्रस्तरीय नृत्य प्रतियोगिता में पुरस्कार अपने नाम कर चुकी तृप्ति नृत्य में भी विशेष रूझान है। अपनी पारिवारिक एवं व्यावसायिक सफलता का श्रेय पूरी तरह अपने परिवार और मित्रों को देती हैं। पति प्रशांत राठी एवं पुत्र ने भी सदैव उनका साथ दिया, जिसके बगैर यह सब संभव नहीं था।

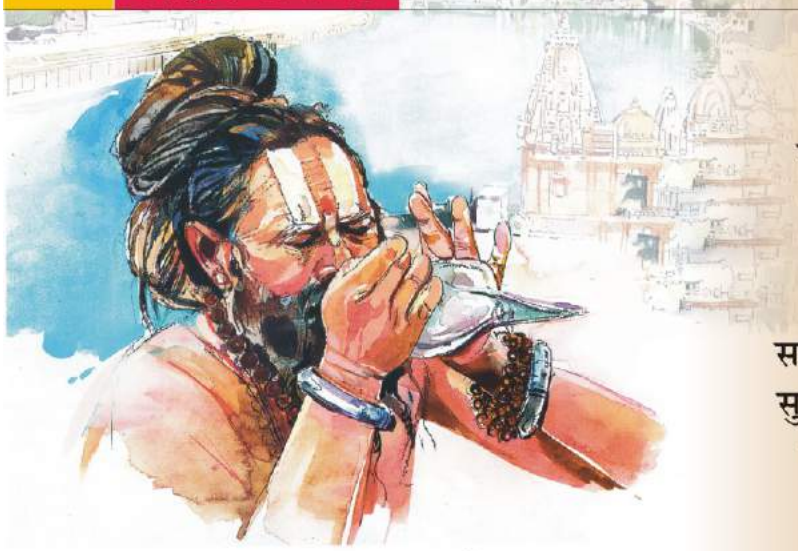

उज्जैन। सिंहस्थ महाकुंभ का आयोजन 22 अप्रैल से 21 मई तक भगवान महाकाल की नगरी में होने जा रहा है। इसमें इस बार विभिन्न साधु, संतों व अखाड़ों के 4 हजार से भी अधिक शिविर लग रहे हैं। इस बार इनकी विशेषता इन शिविरों की भव्यता तो होगी ही साथ ही इनके द्वारा दी जाने वाली आवास आदि सुविधाएं भी होंगी। बड़े पैमाने पर अन्न क्षेत्रों का संचालन होगा। सिंहस्थ मेला क्षेत्र में ये शिविर सजधज कर पूर्णता की ओर बढ़ रहे हैं।

सजधज कर तैयार हो रहा सिंहस्थ मेलाक्षेत्र

उज्जैन। सिंहस्थ महाकुंभ का आयोजन 22 अप्रैल से 21 मई तक भगवान महाकाल की नगरी में होने जा रहा है। इसमें विभिन्न साधु, संतों व अखाड़ों के 4 हजार से भी अधिक शिविर लग रहे हैं। इस बार इनकी विशेषता इन शिविरों की भव्यता तो होगी ही साथ ही इनके द्वारा दी जाने वाली आवास आदि सुविधाएं भी होंगी। बड़े पैमाने पर अन्न क्षेत्रों का संचालन होगा। सिंहस्थ मेला क्षेत्र में ये शिविर सजधज कर पूर्णता की ओर बढ़रहे हैं।

नेपाली बाबा की 17 मंजिली यज्ञ शाला

अंकपात जोन में मंगलनाथ मंदिर के पीछे शिप्रा नदी के पार नेपाली बाबा द्वारा सिंहस्थ में शिविर लगाया गया है। इसमें करीब 1 लाख बांस-बल्लियाँ, 20 क्विं. तार-कील, 30 क्विं. रस्सी, 5 हजार मीटर कपड़ा, ईंट, रेती, सीमेंट आदि का इस्तेमाल करते हुए 17 मंजिला यज्ञ शाला बनाई जा रही है। इस यज्ञ शाला में 1008 मंदिर और 1008 शिवलिंग बनाये जाएंगे। सिंहस्थ में 11 दिनों तक लगातार रुद्राभिषेक किया जावेगा। 1100 दंपत्तियों द्वारा शिव पुराण पाठ से महाकाल को आहुति दी जावेगी।

दद्दाजी के कैंप में 65 फीट के पर्वत पर महाकाल

सिंहस्थ बायपास रोड टोल नाके के नजदीक दद्दाजी का भी कैंप लग रहा है। सिंहस्थ के दौरान कैंप में सवा पांच करोड़ पार्थिव शिवलिंग का निर्माण होगा। यह दद्दाजी का 108 वां यज्ञ है और इसी के साथ उनका संकल्प भी पूरा हो रहा है। ऐसे में कैंप को और भव्यता दी जा रही है। इसके चलते विशाल द्वार निर्माण के साथ ही पड़ाव स्थल पर कैलाश

इस्कॉन के पांडाल में विदेशियों का जमघट

इस्कॉन का अंकपात क्षेत्र में ऋषि मंदिर के पास पांडाल लगा रहा है। इसे बंगाल के कलाकारों द्वारा बांस, बल्लियों चारे, कपड़ों से सजावट कर आकर्षक रूप से तैयार किया जा रहा है। पुना की टीम द्वारा मंच से रोज सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति देंगी। जिसमें इस्कॉन से जुड़े 100 से अधिक देशी-विदेशी भक्तों के नाम, पहचान क्या, मानो उनका पूरा जीवन ही बदल जाएगा। इस्कॉन के पांडाल में मालव की सजावट, विदेशियों का जमघट और भी कई चीजें देखने लायक होगी। 9 मई को शाही स्नान वाले दिन इस्कॉन का बड़ा दीक्षा समारोह होगा। इस्कॉन के प्रमुख भक्ति चारु महाराज लगातार दो वर्षों से रोजाना 16 माला जप व 4 कठिन नियमों का पालन करने वाले 120 भक्तों को दीक्षा देंगे।

पर्वत पर विराजित महादेव की प्रतिकृति भी बनाई जा रही है, जिसमें 65 फीट ऊंचे पर्वत पर बाबा भोलेनाथ विराजित नजर आएंगे।

अनंतदेव गिरि करेंगे मधुमेह का इलाज

सिंहस्थ में स्वामी अनंतदेवी गिरि के कैंप में भारत को मधुमेह मुक्त बनाने के लिये 10 दिन तक शिविर चलेगा। इसमें मधुमेह पीड़ितों को निःशुल्क प्राणायाम व योग सिखाकर आयुर्वेदिक दवाइयाँ भी दी जाएंगी। अभियान 24 अप्रैल से 3 मई तक मुल्लापुरा-चिंतामण रोड स्थित कैम्प में चलेगा। जिसमें बैंगलुरु के विशेषज्ञ योग सिखाएंगे।

सूर्येन्दूपुरीजी सिखाएंगे सूर्य क्रिया योग

महाकाल जोन बड़नगर बायपास के समीप रिंग रोड मीटर गेज रेलवे लाईन के पास प्लाट नं. 268-69 पर लग रहा है, मोगा पंजाब के स्वामी सूर्येन्दूपुरीजी महाराज का 'शब्द सुरती आश्रम।' इस शिविर में स्वामीजी प्रतिदिन प्रातः व शाम को सूर्यक्रिया योग सिखाएंगे। उनके द्वारा शोध से तैयार यह योग कई रोगों को दूर करने की क्षमता रखता है। इसके साथ प्रतिदिन भक्ति, वेदांत व योग के विषयों पर चर्चा भी होगी। उल्लेखनीय है कि स्वामीजी मूल रूप से माहेश्वरी समाज से सम्बद्ध हैं और पूर्व में उनसे सम्बंधित आलेख श्री माहेश्वरी टाईम्स में भी प्रकाशित हो चुका है।

अवधेशानंदजी का शिविर बाहर से किला अंदर से महल

बड़नगर रोड पर मुल्लापुरा क्षेत्र में 9.56 लाख वर्ग फीट क्षेत्र में बन रहे श्री पंचदशनाम जूना अखाड़ा के आचार्य पीठाधीश्वर अवधेशानंद गिरि महाराज के शिविर में आध्यात्म और संस्कृति का समागम होगा। देश की कई अन्य ख्यात हस्तियाँ भी शिविर में रोजाना सुबह से शाम तक आध्यात्मिक विषयों पर व्याख्यान देंगी, रात में कुछ हस्तियाँ सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति देंगी। तीस दिन तक करीब 200 से अधिक वैदिक विद्वान महायज्ञ करेंगे। शिविर में मीडिया के लिये लकड़ी का एसी ब्रीफ रूम तैयार किया जा रहा है, जो पूरा वाई-फाई रहेगा। लंच और डीनर के लिये वीआईपी, अतिथियों के लिये 400 वर्ग फीट का विशेष डाइनिंग हाल बनाया जायेगा। 600 एसी काटेज देश-विदेश से आ रहे भक्तों के लिये तैयार किये जा रहे हैं। एसी, एलईडी, डबल बेड से लेकर सारी सुविधाएं इस काटेज में रहेगी। शिविर में 120 फीट का म्यूजिकल फव्वारा आकर्षण का केंद्र रहेगा। अवधेशानंदजी का कैंप बाहर से किला व भीतर से महल जैसा रहेगा। इसमें जसराज से लेकर हेमा मालिनी आदि जैसे कई प्रख्यात कलाकार भी आएंगे।

यदि आप किसी निश्चित शिविर तक जाना चाहते हैं, तो इस बार इसके लिये लोगों से पता पूछकर भटकने की जरूरत नहीं होगी। इसके लिये बस आपका मोबाइल ही आपका मार्गदर्शक बन जाएगा। सिंहस्थ की जानकारी के लिये "सिंहस्थ ऍप" तैयार किया गया है। इसे डाऊनलोड कर इसके द्वारा आप किसी भी शिविर की लोकेशन मेप के रूप में जान सकेंगे। इतना ही नहीं समीपस्थ शौचालय, पुलिस थाना आदि की जानकारी के साथ ही इस पर विभिन्न आयोजनों के अपडेट्स तथा प्रशासनिक कार्यालयों के पते भी होंगे। यदि आप किसी परेशानी में हैं, तो इसका पैनिक बटन क्लिक कर आप सहायता भी प्राप्त कर सकेंगे।

हमारी श्रुतियों ने भले 'यत्र नार्यस्तु पूजयंते रमंते तत्र देवता' अर्थात् जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवताओं का वास होता है, जैसी स्वर्णिम पक्तियाँ रचकर अपने कर्तव्य की इतिश्री करली हो। परन्तु इस ज़मीनी हकीकत को झुठलाना असंभव है कि वस्तुत: स्त्री हर युग में ठगी गई, पुरूष प्रताड़ना का शिकार हुई। अंतर सिर्फ इतना है कि कभी वह शारीरिक प्रताड़ना का शिकार हुई तो कभी मानसिक, कभी सामाजिक एवं कभी मनोवैज्ञानिक।

आज मैं आगे जमाना है पीछे

हरिप्रकाश राठी
जोधपुर
मो. 094141-32483

पुरुष ने हर युग में किसी न किसी रूप में स्त्री को दबोचने का प्रयास किया एवं आश्चर्य ! पुरूष की इस क्रूरता को न सिर्फ हमारी सभ्यताओं एवं संस्कृतियों ने पोषण दिया, हमारी आध्यात्मिकता ने भी इस क्रूरता में इज़ाफा करने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ी। जो स्त्री, पुरूष क्रूरता सहती गई वो सुलक्षणा कहलाई एवं जिस स्त्री ने भी इसका विरोध किया, पितृसत्तात्मक समाज को चुनौती दी, अपने स्वाभिमान एवं स्वायतत्ता की बीन बजाई, वह कुलटा, डायन एवं न जाने क्या-क्या कहलाई। पुरूष उस पर जुल्म दर जुल्म करता रहा, वह चुपचाप इसे सहती चली गई। कभी 'सतीप्रथा' एवं 'अग्निपरीक्षा' के नाम पर उसे अग्नि में झोंका गया, कभी उसके हाथों पर अंगारे रखकर उसकी अस्मिता की साख मांगी गई तो कभी वह दहेज प्रताड़नाओं एवं घरेलू हिंसा का शिकार हुई। समाजसुधारकों, राजनेताओं एवं नीतिवेत्ताओं द्वारा कड़े से कड़े नियम बनाने पर भी यह वारदातें नहीं रूकी एवं इसका हश्र यह हुआ कि स्त्री जो कभी पुरूष की अनुगामिनी थी, पुरूष की छाया थी, अपनी अस्मिता एवं स्वाभिमान की मांग को लेकर पुरूष वर्ग के विरूद्ध आ खड़ी हुई। रथ के दो पहिये जो कभी एक होकर रथ की गति को प्रशस्त करते थे, विपरीतगामी होकर रथ की गति को थाम दिया।

सम्पूर्ण विश्व में यही स्थिति

भारत में ही नहीं पूरे विश्व की आध्यात्मिकता ने झूठी कहानियाँ गढ़कर उसे दोयम दरजे का नागरिक बनाया। इसका परिणाम यह हुआ कि शोषण उसकी 'डेस्टिनी' बन गई। यह तथ्य तो सर्वविदित है कि यह सारी कहानियाँ पुरूषों द्वारा गड़ी गई। तुलसी जैसे महाकवि ने उसकी तुलना ढोर, गंवार एवं पशु तक से करके उसे ताड़ना का अधिकारी बताया। कृष्ण द्वारा 'गीता' में कही यह पक्तियां कि सबको मुक्ति का अधिकार है, चाहे वे वैश्य, शूद्र एवं स्त्री ही क्यों न हो, क्या इस वर्ग को हीन अवस्था में नहीं रखती। मुझे 'महाभारत' काल का एक संवाद याद हो आया है, जब वारणावत लाक्षागृह के पश्चात कुंती एवं पांचों पाण्डव वनगमन को प्रस्थान कर जाते है एवं मार्ग में एक द्विज के अतिथि बनते हैं। एक दिन पांचों पुत्रों के साथ संध्यागमन से लौटते समय कुंती द्विज की झोंपड़ी के नजदीक आने पर वहाँ चीखने-चिल्लाने की आवाजें सुनती है। कुंती पाण्डवों को वहीं रुकने का कहकर अकेली झोपड़ी के पीछे आकर उस द्विज परिवार का विलाप सुनती है। यह विलाप इस बात को लेकर होता है कि तय बारी अनुसार आज 'बकासुर' राक्षस की बलि परिवार का कौन-सा सदस्य बनेगा ? इस विलाप में द्विज-स्त्री ब्राह्मण को कहती है कि बकासुर के पास आप न जायें, बलि के लिये मैं जाऊंगी क्योंकि पतिविहीन स्त्री वैसे ही समाज एवं सामाजिक उपेक्षा की बलि चढ़ जाती है। उसका जीवन सार हीन, निराधार एवं पराधीन बन जाता है। उसकी स्थिति बिना पानी की मछली की तरह हो जाती है। द्विज स्त्री का विलाप तात्कालीन समय में स्त्री की विषम स्थिति का स्पष्ट परिचायक है। 'मानस' में तो उसे यह तक सिखाने का प्रयास किया गया है कि 'अंध बधिर कपटी अतिलोभी, ऐसे ही पति कर किए अपमाना नारी पाय यमपुर दुःख नाना' अर्थात् अगर उसे अंधे-बहरे-लोभी अथवा कपटी पति तक से बांध दिया जाय तो ऐसे पति तक की उपेक्षा करके वह यमपुर का त्रास झेलती है। यानि पति क्रूर से क्रूरतम ही क्यों न हो, स्त्री को उसे सहना है, यही उसका धर्म, नेम एवं व्रत है। वह पतिचरणअनुगामी होकर ही सुलक्षणा है, पति फिर बेवड़ा हो अथवा चोर-डाकू। स्त्री के पास कोई विकल्प नहीं है। 'एडम' एवं 'इव' की कहानी में तो यहां तक कहा गया है कि स्त्री का सृजन आदमी की पसली से हुआ है। अतः पुरुष उसका 'मास्टर' है एवं स्त्री उसकी चिरअनुगामिनी। अन्य अनेक धर्मग्रंथों में वह अमूमन इसी रूप में देखी गई। पितृसत्तात्मक धर्मग्रन्थों के आदेशों में बंधी स्त्री ने कदाचित अपना सर उठाया भी तो उसे कठोर दण्ड दिया गया। निर्धन स्त्रियां ही नहीं संभ्रांत स्त्रियां यहां तक कि 'सेलिब्रिटिज' तक इस क्रूरता का शिकार हुई। 'टाइम्स' को वर्ष 2002 में दिए साक्षात्कार में 'ऐश्वर्याराय' ने यहां तक कहा कि एक फिल्म के सेट पर उसके हीरो 'सलमान खान' ने न सिर्फ नशे की हालत में सेट तोड दिया, उससे बदसलूकी भी की। प्रसिद्ध अभिनेता 'संजयखान' द्वारा 'होटल ताज़' में उनकी पत्नी के सामने अस्सी के दशक की प्रख्यात अभिनेत्री 'ज़ीनत अमान' को इस कदर पीटा गया कि उनकी आंख में स्थाई तौर पर दाग बन गया। ब्यूटीक्वीन 'युक्तामुखी', राहुल महाजन की पत्नी 'डिम्पी गांगुली', टीवी सीरियल अभिनेत्रियां 'श्वेता तिवारी' एवं 'कुसुम' सीरियल की 'रुचा गुजराती' तक घरेलू हिंसा एवं प्रताड़ना का शिकार हुई है। 'साहिर' का गीत' औरत ने जन्म दिया मरदों को, मरदों ने उसे बाजार दिया जब तक चाहा मसला कुचला और जब जी चाहा फेंक दिया'। स्त्री पर होने वाले जुल्मों की लोमहर्षक दास्तां बयां करते है।

अपनी सोच को बदलें पुरुष

आज स्त्री ने एक नई अंगड़ाई ली है। समय आ गया है जब पुरूष झूठे, दंभी तर्क देने की बजाय अपने दृष्टिकोण में आमूलचूल परिवर्तन करे। लंबे समय के पश्चात स्त्री ने आज स्वयं को सिद्ध किया है। वह आज जिस मुकाम पर खड़ी है, वहां आकर उसने बता दिया है कि समान परिस्थितियों एवं अवसर मिलने पर वह पुरूष से किसी क्षेत्र में कम नहीं है। आज उसके पास असीमित संभावनायें है, नये आकाश है। आलेख के अन्त में मुझे 'खामोशी' फिल्म में कविता कृष्णमूर्ति एवं कुमार शानू के गाये उस खूबसुरत गीत का अन्तरा याद हो आया है जिसके बोल स्त्री मन को नयी ऊंचाइयां प्रदान करते हैं। गीत मजरूह सुल्तानपुरी ने लिखा है। गीत के अंश हैं -

झूमे जा मौज में रूकना ना जानेजां, देखूं यह तरंग रूकती है कहां ,
मै भी तेरे संग इन लहरों पे चलूं, सर के बल या कदम से चलूं,
आज मैं ऊपर आसमां नीचे, आज मैं आगे जमाना है पीछे।

- स्वाति जैसलमेरिया, जोधपुर

कांई फर्क... इंसान और जानवर में

खम्मा घणी सा हुक्म आपने बताऊँ कि इंसान और जानवर में घणी समानता है ज्यों खाणो, पीणो, बाल बच्चा पैदा करणो, आपरे परिवार साथै रेवणो, बड़ा हूँ जावे पछे आपरा कुटुंब ने छोड़ ने दूजा ने साथ देवणो, और भी कंई बातां आपस में मिळे। पर एक बात में बड़ो 'फर्क' है हालाँकि जानवर ने भी आजादी पसन्द है पर आपा जानवर ने बांध ने काफी इंसान रा गुण डाल सका पर इंसान 'आजादी' बिना जानवर बण जावे।

आजादी यानी बोलण री, आपरा विचार रखण री आजादी, पसन्दीदा चीजां खावण री आजादी, आपरे मन सुं प्रेम करण री आजादी, अगर इण सब पर पाबन्दी लॉग जावे तो इंसान भी जंगली जानवर जेड़ो बण जावे।

हुक्म मानलो आपाने मूंग री दाल बहुत पसन्द है पर आपाने दोना टाइम मूंग री दाल परोस देवे। दस पंद्रह दिन बाद हुक्म गले ही नहीं उतरेला। कसम सुं हुक्म उन दाल रे प्याले में डूब ने मर जावण रो मन करेला। हुक्म मन री पसन्द भी सबरी एक नहीं हुवे। जीनो मन जिन्हु मिल जावे जिको मन ने भावे वो मिल जावे तो ही मन सुं आपा जी सका अगर आ आजादी नहीं मिळे तो भले ही करोड़ा रुपया री तिजोरियां भरयोड़ी हुवे पर मन ने सकुन नहीं मिले। सही है न..?

याँ ही बात भारत री आजादी ने लेने है भारत आजाद हूँ ग्यो तो आपाँणे सकुन मिलियो.... कि आपाणे देश पर दूजे री हुकूमत यानी अपणे घर में चैन री श्वास नहीं पर आजाद भारत में भूख, गरीबी, भ्रष्टाचार, बच्चों रो शोषण आपणा देश रा लोग आपाणी जीवण री आजादी रो हरण कर रिया है ।

सही कहूँ तो हुक्म जो भारत इण सबसूं पीड़ित है और उनमे हार्दिक पटेल, कन्हैया जो भोली भाली जनता ने पथ भ्रस्ट कर रही है आजादी रो मतलब नारा लगाने अपने आपने महान करणो नहीं है आजादी रो मतलब आपाणी कलम आजाद रहे, आप जनता री खुशी वास्ते हर हद पार कर जावा निष्पक्ष भाव रहे न कि कोई री चापलूसी करने आपणो मतलब साँधा वो तो अंग्रेज भारत में अ कर ही रिया था ....पछे आपा खुद जीण देश में खा रिया हां उन्ही में शांति सकुन भंग करने कितो बड़ो गुनाह कर रिया है या तो वो ही बात हुई कि जीण थाळी में खा रिया हां उन्ही में छेद करने आपा खुद रो ही नुकसान करने कौनसी आजादी रा नारा लगा रिया हां ..आप ही बताओ..?

Net Protector
NP AV
Total Security
PC, Laptop, Tablet, Mobile
Total सुरक्षा
Call :
9272707050 / 9822882566
india antivirus.com

Computerised Horoscope
Most Advanced Mathematical Software in India
Windows based Software
- Accurate Calculations
- Accurate Charts
- Full Screen VIEW Facility
- Use any printer - Dot Matrix or Inkjet or Laser.

Choice of 6 Languages
English
Marathi
Hindi
Gujarati
Kannada
Telugu

Call: 9225664817
020-65601926
Kundali 2012
www.kundalisoftware.com

दिल्ली में प्रस्तावित महासभा का आयोजन
'शिखर की ओर' पर उठी अंगुलियाँ

आयोजन की प्रक्रिया पर विधान उल्लंघन के आरोप

दिल्ली। अ.भा. माहेश्वरी महासभा द्वारा ''राष्ट्र निर्माण में माहेश्वरी समाज का योगदान'' विषय पर राष्ट्रीय कार्यशाला ''शिखर की ओर'' का आयोजन आगामी 16 व 17 जुलाई को किया जाना प्रस्तावित है। इस आयोजन की अभी तैयारियाँ ही चल रही हैं और इसे लेकर विरोध के स्वर भी उठने लगे हैं। विरोध का कारण आयोजन नहीं बल्कि इसकी तैयारी में अपनाई गई प्रक्रिया है।

इस आयोजन के अंतर्गत महासभा का लक्ष्य विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना योगदान दे रही समाज की प्रतिभाओं को तो समाज के मंच पर लाना है ही, साथ ही समाज के इतिहास के प्रदर्शन से राष्ट्र के निर्माण में समाज के योगदान को प्रदर्शित करना भी है। उद्देश्य है, सम्पूर्ण राष्ट्र जाने कि माहेश्वरी समाज ने आर्थिक विकास से सिर्फ अपना भला नहीं किया बल्कि उससे अधिक हमेशा ही राष्ट्रहित में कार्य किया है। इस आयोजन में देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सहित कई ख्यात हस्तियों को आमंत्रित किया गया है। इसकी तैयारियों को लेकर गत 5 फरवरी को बैठक आयोजित हो चुकी है।

इसलिये उठे विरोध के स्वर

इस आयोजन की तैयारी को लेकर महासभा द्वारा गत 12 मार्च को दिल्ली में भी बैठक आयोजित होनी थी। इसमें माहेश्वरी सेवा सदन संयोजकों, राष्ट्रीय पदाधिकारियों, प्रदेश अध्यक्षों, समिति संयोजकों तथा दिल्ली के समाजजनों को आमंत्रित किया गया था। यहीं से विरोध के स्वर उठना प्रारंभ हो गये। न तो 5 फरवरी और न ही 12 मार्च की इस बैठक में महासभा के कार्यकारी मंडल तथा कार्यकारिणी सदस्यों को आमंत्रित किया गया। नियमानुसार किसी भी आयोजन को लेकर महासभा की कार्य समिति तथा कार्यकारी मंडल की बैठक बुलाकर प्रस्ताव पारित करवाया जाता है। लेकिन इस आयोजन का निर्णय महासभा पदाधिकारियों ने अपने स्तर पर ही ले लिया, ऐसा आरोप है। इससे विधान का ही उल्लंघन हो रहा है। अतः कई प्रदेश संगठनों ने बैठक का विरोध किया और 12 मार्च को आयोजित बैठक निरस्त करना पड़ी।

क्या कहते हैं समाज के प्रबुद्धजन

कार्यक्रम हो, उसका विरोध नहीं है। बस यह विधान अनुरूप होना चाहिये। सही प्रक्रिया का पालन कर समाज से इसकी अनुमति ली जाने चाहिए। यदि ऐसा नहीं होता तो महासभा के विधान का औचित्य ही नहीं है।

- पद्मश्री बंशीलाल राठी,
पूर्व सभापति, अ.भा. माहेश्वरी महासभा

विधान के अनुरूप नहीं है। आयोजन कार्य समिति व कार्यकारी मंडल की बैठक में तय किये बिना हो रहा है। चुनाव निकट है, अतः चुनाव अधिकारी की अनुमति भी जरूरी है। कार्यकाल की समाप्ति के दौर में ऐसा आयोजन अवैधानिक है।

- रघुनाथदास सोमानी,
पूर्व सभापति महासभा कोलकाता

कार्यक्रम की सफलता इस पर टिकी होती है कि इसमें विरोध का स्वर न हो। हर कार्यक्रम विधानानुरूप हो। चुनाव निकट हैं, तो चुनाव अधिकारी की अनुमति ली जाना भी जरूरी है। ऐसा कार्यक्रम चुनाव बाद भी हो सकता है।

- रमेशचंद्र माहेश्वरी,
भोपाल-संयुक्त मंत्री, अ.भा. माहेश्वरी महासभा मध्यांचल

आयोजन बहुत सुंदर है इसके लिए जो प्रयास कर रहे हैं, वे बधाई के पात्र हैं। लेकिन इसको आपातकालीन बैठक बुलाकर या वरिष्ठजनों से चर्चा करने के बाद ही करना चाहिए। ऐसा मेरा मानना है।

- रामगोपाल मूंदड़ा,
उपसभापति अभा माहेश्वरी महासभा, मध्यांचल

सामाजिक संगठन द्वारा समाज के संगठन के दीर्घकालीन हित को दृष्टिगत रखते हुए यदि कोई भी कार्य या आयोजन किया जाता है, तो स्वागत योग्य है। यह देखना आवश्यक है कि कार्यक्रम संगठन की स्थापित परम्परा संगठन के विधानानुसार एवं संगठन के सभी बन्धुओं की सर्वानुमति, सहमति से है या नहीं। चूँकि महासभा का सौ से अधिक वर्ष का इतिहास है। हमारी गौरवशाली परम्परा है। हमें सम्पूर्ण योजना को कार्यसमिति में रखकर सभी को साथ लेकर समाज के सर्वांगीण विकास के लिए प्रयास करने चाहिए। इस सत्र का कार्यकाल भी 30 जून को समाप्त हो रहा है, इसलिए भी सभी का साथ सामूहिक प्रयास ध्येय को रखते हुए करना चाहिए।

- संदीप काबरा,
संगठन मंत्री अभा माहेश्वरी महासभा

मेरे क्षेत्र में यह कार्यक्रम हो रहा है। लेकिन मुझे इसकी कोई सूचना नहीं है। मुझे सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि पिछले दिनों 12 मार्च को इस सम्बन्ध में एक बैठक आयोजित की गई थी, लेकिन बाद में वह स्थगित हो गई। इस कार्यक्रम से मैं सहमत नहीं हूँ। हमारे इस समाज में डॉ. गोविन्ददास जी, कृष्णदास जी जाजू जैसी कई मनीषी रहे हैं, जिन्होंने कभी-भी समाज मंच पर व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा को लाने की कोशिश नहीं की, केवल समाज हित में काम करते रहे। यह महासभा के इतिहास में पहला मौका है कि कुछ विशेष राजनीति दल में रहते हुए इस समाज के बेनर को राजनीतिक विचारधारा से प्रेरित होकर दुरुपयोग कर रहे हैं। अच्छा होता इतने बड़े आयोजन पर होने वाले खर्च की राशि को व्यय करने के बजाय समाज के जो पीड़ित लोग हैं, उन पर खर्च किया जाता, तो समाज के लोगों को भला होता।

- विनोदकुमार माहेश्वरी, उपसभापति, अ.भा. माहेश्वरी महासभा (उत्तरांचल)

आयोजन होना चाहिए या नहीं होना चाहिये, इस पर चर्चा करने की बजाय इसके उद्देश्य पर चर्चा होनी चाहिए। इसकी उपयोगिता ज्यादा महत्वपूर्ण है। बस विरोध ही लक्ष्य नहीं हो। केवल विधान का डर दिखाना समाजहित में उचित नहीं। बिना आयोजन के जागरुकता समाज में उत्पन्न नहीं हो सकती। समाज को नकारात्मकता से दूर होना होगा। इससे न तो महासभा, न ही समाज की प्रतिष्ठा धूमिल होगी, बस कुछ लोगों के अहम पर ही चोट लगेगी।

- अनिल मानधनी, पूर्व अध्यक्ष अ.भा. माहेश्वरी युवा संगठन

यह आयोजन सामाजिक स्तर पर चिंतन का बड़ा कार्यक्रम है। इसमें सबको साथ लेकर चलना चाहिए। यह वास्तव में महासभा की गरिमा बढ़ाने वाला कार्यक्रम है। सबका साथ सबका विकास ही इसकी मूलधारणा है। अपने लोगों को तो आगे लाना ही चाहिए। ऐसे कार्यक्रम बहुत आवश्यक हैं। कार्यक्रम होना ही चाहिए।

- सुनील गिगल, संयुक्त मंत्री, गुजरात प्रदेश माहेश्वरी महासभा

यह आयोजन माहेश्वरी समाज के लिये गौरव की बात है इससे विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिभाशाली लोग जो समाज से नहीं जुड़े या कम रुचि है, उन्हें जोड़ने का अवसर मिलेगा। ऐसी प्रतिभाऐं अपनी प्रतिभा का परचम तो लहरा रही है, लेकिन उनकी समाज से निकटता कम है। वे यदि जुड़ेंगे तो अवश्य ही आने वाली पीढ़ी जुड़ेंगी।

- श्यामसुंदर मंत्री, कुचामन सिटी, प्रदेश महामंत्री राजस्थान

महासभा के तहत कोई भी महत्वपूर्ण आयोजन करना हो तो इसके उद्देश्य तथा कार्यपद्धति से लेकर विस्तृत चर्चा तथा निर्णय महासभा कार्य समिति में होना अनिवार्य है। ऐसा इस आयोजन में कुछ भी हुआ नहीं है। इसके विपरीत 12 मार्च को दिल्ली में महासभा पदाधिकारी, प्रदेशाध्यक्ष की बैठक बुलाई गई (जो नहीं हुई), इसमें भी कार्य समिति सदस्यों को नहीं बुलाया गया। पहली बार ऐसा प्रतीत हो रहा है कि माहेश्वरी महासभा का गरिमामय नाम तथा मंच अपने व्यक्तिगत उद्देश्य पूर्ति हेतु इस्तेमाल किया जा रहा है। मेरा इसमें किसी व्यक्ति विशेष से विरोध नहीं है। यह जो केवल प्रवृत्ति है महासभा द्वारा सर्वोच्च समिति में चर्चा न करते हुए निर्णय लिया जाना। यह प्रवृत्ति भविष्य में घातक हो सकती है।

- अशोक बंग, नि. संयुक्त मंत्री (दक्षिणांचल) अभा माहेश्वरी महासभा

इस आयोजन से समाज के प्रतिभाओं को सामने आने का अवसर मिलता है। ऐसे आयोजन से तो समाज गौरवान्वित ही होता है। यदि इससे समाज का कोई अहित नहीं है, तो फिर सिर्फ निजी स्वार्थ व अहम के लिये विरोध उचित नहीं है।

- विमला साबू,
पूर्व अध्यक्ष अभा माहेश्वरी महिला संगठन

क्या कहते हैं महामंत्री

"राष्ट्र निर्माण में माहेश्वरी समाज का योगदान" कार्यक्रम की प्रक्रिया करीब 15 माह से चल रही है। वृंदावन कार्यकारी मंडल की बैठक में यह जबर्दस्त उत्साह से स्वीकृत हुआ है, जिसमें हमारे समाज के राष्ट्रीय राजनेता, उद्योगपति व वरिष्ठजन उपस्थित थे। कार्यकारी मंडल में स्वीकृत विषय सबसे महत्वपूर्ण होता है। इसके पश्चात यह विषय गुलबर्गा की कार्यसमिति की बैठक में आया। उस समय तक अधिक प्रगति न होने से प्रतीक्षा में रखा गया है। उस बैठक की कार्यवाही की पुष्टि गत दिनों किशनगढ़ कार्यसमिति की बैठक में हुई थी। कहीं किसी का विरोध नहीं देखा गया, ना ही सामने आया। इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम का उद्देश्य बराबर स्पष्ट किया जा चुका है। राष्ट्र के सामने समाज के गौरवशाली इतिहास एवं वर्तमान में हर क्षेत्र में किए जा रहे राष्ट्रहित के कार्यों एवं उनमें अग्रणी प्रतिभाओं को प्रस्तुत कर सम्मान बढ़ाना है, जिसकी जानकारी समाज की सभी प्रतिभाओं को दी जा चुकी है। हम सेवा के सभी क्षेत्र चाहे संस्कृति, शिक्षा, चिकित्सा, व्यवसाय, उद्योग, गौसेवा अन्य सभी सेवाएं आदि के विस्तृत एवं प्रशंसनीय कार्यों को राष्ट्र के सामने प्रस्तुत करना चाहते हैं, जो हम आज तक नहीं कर पाए। आज भी बहुत बड़ा तबका हमें शोषक एवं स्वार्थी मानता है एवं विरोध व निंदा भी करता है।

जिस तरह गत दिनों राष्ट्रीय संत योग गुरु श्रीश्री रविशंकर जी ने संसार के सामने भारतीय संस्कृति की विशिष्ठता को प्रस्तुत करने का सुंदर प्रयास किया है। उसी प्रकार हमें राष्ट्र के सामने माहेश्वरी समाज की विशेषताओं एवं देश की आजादी से लेकर अब तक के गरिमामय व्यक्तित्व को प्रस्तुत करके सम्मान बढ़ाना चाहते हैं।

लंबे समय से निरंतर पत्राचार चल रहा है। कार्यकारी मंडल एवं कार्यसमिति को सब जानकारियां हैं। सबका पूरा समर्थन है। पर आश्चर्य हो रहा है, अचानक कुछ माननीय बंधु कार्यक्रम को अच्छा बताते हुए भी उसे रोकने का प्रयास कर रहे हैं। जो सर्वथा अनुचित एवं अनावश्यक है। जो पूर्वाग्रह से प्रेरित लगता है।

- रामकुमार भूतड़ा, महामंत्री, अभा माहेश्वरी महासभा

लघु विराम के बाद...

सी.ए. अलका झँवर
हैदराबाद

विवाह या पारिवारिक जिम्मेदारियों के बाद आमतौर पर महिलाऐं अपनी शिक्षा को पूर्ण विराम लगा देती हैं या परिस्थितियाँ उन्हें ऐसा करने के लिये मजबूर कर देती हैं। लेकिन यह उनके आत्मबल पर निर्भर है कि इन रुकावटों को वे पूर्ण विराम बनाऐं या अल्प विराम...। आखिर अपने सपने भी तो होते हैं, जिन्हें साकार करना होता है।

हमारे समाज के सभी जागरुक कार्यकर्ताओं ने जीवन के सभी क्षेत्रों में लड़कियों को शिक्षित करने के मुद्दे पर अपनी आवाज उठाई है, लेकिन लघु विराम के बाद शिक्षा क्षेत्र में महिलाओं की इच्छानुसार पर्याप्त प्रगति नहीं हो पाई है। इस बात के कई कारण हैं। घर की आर्थिक परिस्थिति या फिर रुढ़िवादिता लड़कियों के बजाय लड़कों की पढ़ाने पर जोर देती है या फिर बड़ों का शिक्षा की तरफ बेपरवाह रवैया इस का कारण हो सकता है, ऐसा भी कई बार देखा गया है कि लड़कियों को स्वयं ही अरुचित हो और शादी करके सुरक्षित स्थिर जीवन ही उन्हें ज्यादा लुभावना लगे। संक्षिप्त में यह कहा जा सकता है कि महिला अशिक्षिता के कारणों की सूची ना ही छोटी है और ना ही इसका निवारण इतना आसान। फिर भी हमें उस ताले की चाबी की खोज करनी ही चाहिए जिससे कि महिलाओं की बौद्धिक स्वतंत्रता का दरवाजा खुले, लेकिन इन स्थितियों में भी यदि वह चाहे तो सही समय प्रबंधन कर शिक्षा को फिर से शुरू कर सकती है।

कर्तव्य बोध में दबी इच्छाएँ

मोटे तौर पर अशिक्षित महिलाओं को हम दो श्रेणियों में बांट सकते हैं- एक जिन्होंने अध्ययन शुरू किया था लेकिन किन्हीं कारणों से आर्थिक या फिर सामान्यतः शादी होने की वजह से बंद कर दिया था। दूसरे जिन्हें कभी भी शिक्षा ठीक से प्रारंभ करने का मौका तक नहीं मिल सका है। हम माहेश्वरी समाज में बेहद गर्व से बोल सकते हैं कि दूसरी प्रकार की परिस्थिति आजकल हमारे समाज में नहीं के बराबर है। मेरा दिल उन महिलाओं के लिए पुकारता है जिन्होंने शिक्षण का स्वाद तो चखा है, पर उसे पूर्ण नहीं कर पा रही हैं। उन्होंने जाहिर तौर पर अपनी शिक्षा से ज्यादा अपनी जिम्मेदारियों व कर्तव्य बोध को ज्यादा महत्व दिया है या फिर अपने जीवन में शामिल नऐ सदस्यों को खुश करने के लिए अपनी पढ़ाई को पूर्ण विराम लगा दिया है।

पति व परिवार कर सकता है प्रोत्साहित

जिन महिलाओं ने एक बार शिक्षा का अनुभव किया है, निरक्षरता की समस्या दूर करने के लिए यह एक अच्छा प्रारंभिक बिंदु है। ऐसे में स्वाभाविक रूप से पति एक अहम भूमिका निभाता है, लेकिन यह इतना सरल सवाल नहीं कि कौन सबसे अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। कई बार देखा गया है कि एक औरत ही दूसरी औरत की दुश्मन होती है। अगर आप एक नई दुल्हन की सास से उसे आगे पढ़ाने के लिए अनुमति देने के लिए राजी कर सकते हैं, तो फिर पति की राय को अपनी ओर मोड़ना आसान हो जाता है। हमारे समाज में आज बहू और बेटी का फर्क भूल कर उनको एक समान प्रोत्साहन व सहयोग देने की जरुरत है। हमारे समाज में संयुक्त परिवार को प्राथमिकता दी गई है, इस वजह से बहुओं को अपनी पढ़ाई के अरमान पूरे करने का सौभाग्य प्राप्त हो सकता है। आज की नारी सभी चीजों को घर के काम को, बच्चों को और अपनी पढ़ाई को अच्छे तालमेल के साथ संभालने में सक्षम हैं। उसे चाहिए तो सिर्फ थोड़ा प्रोत्साहन व समर्थन। ऐसी स्थिति में ज्यादा अहमियत घर की बाकि महिलाओं की भी होती है।

शिक्षा के महत्व को कभी नजरअंदाज न करें

मेरा यह मानना है कि वे अपनी शादी को पढ़ाई का पूर्ण विराम ना समझें अपितु उसे एक अल्प विराम समझकर शिक्षा को जारी रखने का प्रयास करें। शिक्षा एक अविरल प्रवाह है, जिसके लाभों को आज के सामाजिक परिवेश में न तो नकारा जा सकता है और ना ही रोका जा सकता है। अगर आप एक आदमी को शिक्षित करोगे, तो आप एक व्यक्ति को ही शिक्षित करते हो, लेकिन अगर आप एक औरत को शिक्षित करते हो तो एक परिवार शिक्षित होता है। उच्च शिक्षित होने से मेरा यह मतलब कतई नहीं है कि नौकरी ही करनी चाहिए। उच्च शिक्षा प्राप्त करने से एक गृहणी के सोचने का तरीका, समाज में उठने-बैठने का ढंग यहां तक कि अपने घर में होने वाले छोटे-छोटे टकरावों को संभालने की क्षमता भी मिलती है। समय आने पर यह आय बढ़ाने के काम भी आती है। चाहे फिर वह घर से ही अंशकालिक काम क्यों न करें। आज इस इंटरनेट की दुनिया में अगर गृहिणी पढ़ी लिखी ना हो तो सारा घर ही पीछे रह जाता है। बच्चों को पढ़ाने में व उनके लिए सही शिक्षा के चयन में भी गृहिणी का बहुत बड़ा किरदार होता है।

रुढ़ीवादिता को न बनाऐं बाधा

अगर हम इस बात का विश्लेषण करें कि पत्नी या बहुओं को आगे पढ़ाने में क्या अड़चन आ सकती है, तो इसमें आर्थिक तंगी भी एक कारण है। कई लोग इतना नहीं कमा पाते कि वे गृहस्थ जीवन के खर्च, बच्चों की पढ़ाई के साथ-साथ अपनी पत्नी की उच्च शिक्षा का बोझ भी उठा सकें। अगर ऐसे में पत्नी भी नौकरी करना चाहे, तो उनका आत्म सम्मान आड़े आ जाता है। मेरा यह मानना है कि इस परिस्थिति में आय को बढ़ाना ही समाधान नहीं है। हमारी इस सोच को जो कि महिलाओं की शिक्षा को प्राथमिकता देने के लिये तैयार नहीं है उसे बदलना ही इस समस्या का असली निवारण होगा। अगर सिर्फ अर्थिक तंगी ही समस्या होती तो शायद उसका निवारण सरल होता।

सभी लें नारी को शिक्षित करने की शपथ

असलियत में कई कारणों से जैसे कि बच्चों के पैदा होने से लेकर उनके लालन-पोषण तक की जिम्मेदारी के कारण महिलाऐं पढ़ाई छोड़ देने में ही अपनी व अपने परिवार की भलाई समझ लेती हैं और इस त्याग को अपना निश्चय बताने लगती हैं। ऐसे में जरुरत है तो सिर्फ अपने परिवेश में ऐसी महिलाओं की पहचान कर उनमें पढ़ाई की ओर रुचि जागृत कर उनको प्रोत्साहित कर सहयोग देने की। घर के बड़ों का दायित्व बन जाता है कि वे परिस्थितियों को संभाल कर, बच्चों को संभालकर, पढ़ाई में अंतराल आने से रोकें और फिर देखिए कैसे एक दीया दूसरे को रोशनी देकर अपनी रोशनी बांटते हुए समाज में कैसे एक दिव्य उजाला फैलाता है।

सभी अनिष्टों का एक समाधान है

सिद्धामृत सूर्य क्रिया योग

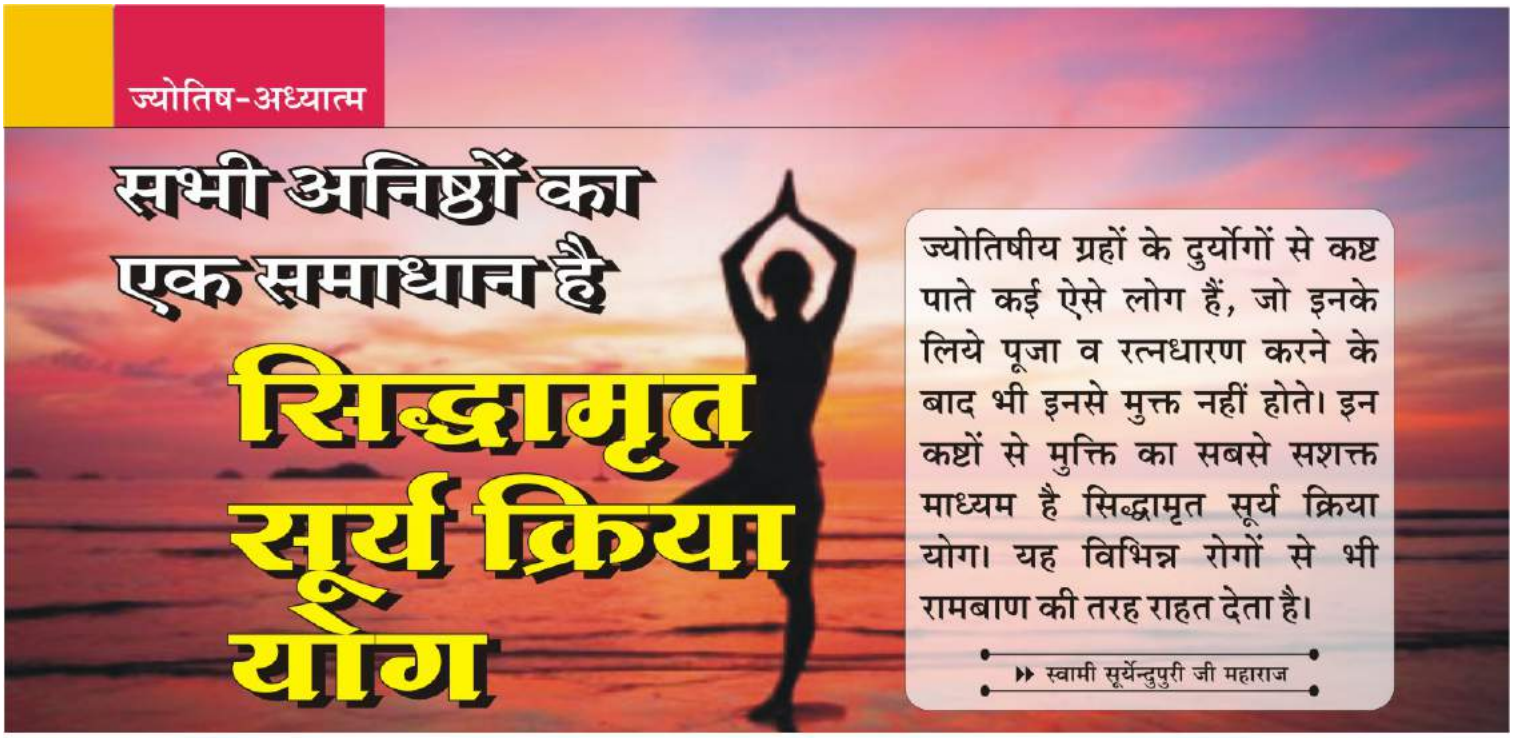

ज्योतिषीय ग्रहों के दुर्योगों से कष्ट पाते कई ऐसे लोग हैं, जो इनके लिये पूजा व रत्नधारण करने के बाद भी इनसे मुक्त नहीं होते। इन कष्टों से मुक्ति का सबसे सशक्त माध्यम है सिद्धामृत सूर्य क्रिया योग। यह विभिन्न रोगों से भी रामबाण की तरह राहत देता है।

स्वामी सूर्येन्दुपुरी जी महाराज

यह एक ऐसा क्रिया योग है जिसके द्वारा जन्म लग्न द्वारा सम्भावित किसी भी अनिष्ट फल को दूर किया जा सकता है तथा इष्ट फल की प्राप्ति भी की जा सकती है। विशेषता यह है कि इस साधना को कोई भी व्यक्ति कर सकता है और अति विशिष्ट फल प्राप्त कर सकता है। मन्त्र और रत्न आदि तो एकांगी उपाय हैं। प्रत्येक ग्रह राशि को व्यवस्थित करने के लिये भिन्न-भिन्न मन्त्र रत्न है। यहाँ तक कि कभी तो ये उपाय एक दूसरे के विरोधी भी बन सकते हैं। सूर्य क्रिया योग एक समग्र उपाय है।

ऊर्जा के स्त्रोत की उपासना

यद्यपि सभी ग्रहों के शांति स्त्रोत तो सूर्य देव ही हैं तथा एक सूर्य देव को प्रबल कर देने से सभी ग्रह भी प्रबल तथा शुभकारक बन जाने चाहिये तथापि परम्परागत उपायों के द्वारा ऐसा हो ही नहीं पाता। जिस प्रकार जड़ में पानी डाल दिया जाये तो सारा वृक्ष हरा—भरा हो जाता है; उसी प्रकार सूर्य के मन्त्र तथा सम्बन्धित रत्न (माणिक्य) को धारण कर लेने के बाद भी यदि अन्यान्य ग्रहों को पुष्ट करने के लिये अन्यान्य मन्त्र—रत्न आदि की जरूरत रहती है तो यही समझा जायेगा कि सूर्यमन्त्र आदि के द्वारा अभी सूर्य भी पूरा पुष्ट नहीं हो पाया है अर्थात् जड़ में पूरा पानी पहुँचा ही नहीं है तो टहनी—पत्ते स्थानीय अन्यान्य ग्रहों की शान्ति तो अभी सम्भव ही नहीं है। ग्रहों की शान्ति के लिये किये जाने वाले मन्त्र, कवच, रत्न आदि साधन अधूरे साधन हैं। किसी भी पारम्परिक साधन में सूर्य या अन्य किसी भी ग्रह के साथ सीधा सम्बन्ध नहीं होता। मन्त्रों के द्वारा केवल मानसिक स्तर पर ही (वह भी आधा—अधूरा) सम्बन्ध ही जुड़ पाता है। ब्रह्माण्डीय मंगल—शनि आदि ग्रह तो आँखों से बहुत दूर हैं व शरीरस्थ इन ग्रहों की गतिविधि कर्मजाल में उलझी तथा छिपी रहती है। समस्त ग्रह मण्डल में सूर्य और चन्द्र, यह दो ही ऐसे हैं जिनसे प्राणी सीधा सम्बन्ध जोड़ सकता है, यदि उसे विशेष विधि का ज्ञान हो। इनमें भी यदि एक सूर्य के साथ ही सीधा और पूरा सम्बन्ध जुड़ जाये; शरीरस्थ सूर्य और ब्रह्माण्डस्थ सूर्य दोनों एक सीध में हो जायें तो पूरा काम बन सकता है। सभी ग्रह पुष्ट और दोष रहित हो सकते है।

कैसे करता है काम

इन प्रत्यक्ष ग्रहों के साथ सीधा सम्बन्ध जोड़ने में मुश्किल क्या है?इस सन्दर्भ में हमें एक घटना याद आती है। उस समय यह प्राणी गंगोत्री में था। बड़ा शान्त और पवित्र वातावरण था। शाम का समय हुआ। यात्री कहने लगे गंगा आरती का समय हो रहा है। सभी लोग गंगा किनारे बने मन्दिर में जमा होने लगे। मन्दिर में गंगाजी की प्रतिमा स्थापित थी। उस प्रतिमा के सम्मुख धूप दीप से आरती होने लगी। हाथ जोड़े सभी आरती कर रहे थे किन्तु मन्दिर के प्रांगण से तो उस गंगा का दर्शन भी नहीं हो रहा था, जो प्रचण्ड गर्जना करती हुई अथाह पवित्र जल राशि को अपने वेग से बहाये ले जा रही थी। पास ही में गंगा बह रही थी और सभी लोग उस ओर पीठ किये उसकी ही आरती पूजा कर रहे थे। क्योंकि गंगा के प्रचण्ड वेग को मनुष्य का दुर्बल प्राण धारण करने की सोच भी नहीं सकता। उसकी शीतलता को अपने शरीर में प्रवेश करवाने की अग्नि मनुष्य शरीर में है ही कहाँ? इसलिये साक्षात गंगा जी से सम्बन्ध जोड़ने के स्थान पर दो-तीन मिनट का गंगा स्नान और गंगा के प्रतीक की आरती पूजा करके ही मन को तसल्ली दी जाती है।

सूर्य के बिना सभी उपाय अधूरे

यही स्थिति सूर्यादि ग्रहों की पूजा की भी है। सूर्य में इतना तेज, प्रकाश तथा ऊर्जा है कि मनुष्य उसको अपने स्तर के अनुसार कैसे धारण करे, यह एक विकट प्रश्न है। एक तरफ तो कोई प्राणी सूर्य मन्त्र, रत्न, कवच आदि धारण करके सूर्य की ग्रह दशा को सुधारने की कोशिश करता है, दूसरी ओर सूर्य की प्रत्यक्ष तेजोमयी रश्मियों के सम्पर्क में आने से डरता है। धूप में जाना भी पड़े तो काला चश्मा चढ़ा कर रखता है। सूर्य से भयभीत ऐसे व्यक्ति के लिये बन्द कमरे में किये गये सूर्य मन्त्रादि के अनुष्ठान कितना लाभ दे सकेंगे? सूर्य देव से सम्बन्ध जोड़े बिना किसी भी मंगल, बुध आदि ग्रह (भले वह प्रत्यक्ष चन्द्र ही हो) से रत्न आदि अप्रत्यक्ष उपायों से जोड़ा गया सम्बन्ध अधूरा ही रहेगा, इसमें कोई दो राय नहीं हो सकतीं। हाँ, यदि सूर्यों के भी सूर्य परमदेव परमात्मा के साथ ईशकृपा या समाधि साधना के द्वारा सीधा जुड़ जायें तो सूर्य सहित अन्य सभी ग्रह स्वयमेव पुष्ट तथा स्वस्थ हो जायेंगे। किन्तु यह तो कोई विरला योगी भक्त ही कर सकता है।

आम व्यक्ति के लिए भी आसान

'सिद्धामृत सूर्य क्रिया योग' इन सभी प्रश्नों का सरल समाधान है। महायोग, भक्त की कठिन साधनायें किये बिना ही प्रचण्ड तेजोमय सूर्य देव से सीधा सम्बन्ध जोड़ने की यह साधना है। इस साधना के द्वारा जब शरीरस्थ सूर्य केन्द्र पुष्ट होकर एक ओर सुषुम्ना की ओर गति करने लगेंगे तथा दूसरी ओर इन्द्रिय छिद्रों (इड़ा—पिंगला) को भी सबल करेंगें तो अन्यान्य ग्रह केन्द्र भी पुष्ट और सबल हो जायेंगे। यह लिखने की तो कोई आवश्यकता नहीं है कि सूर्य साधना की पूरी विधि प्राप्त करने के साथ—साथ सूर्यदेव प्रत्यक्ष देव हैं, ऐसी श्रद्धा होना भी परमावश्यक है। सूर्य साधना के साथ अन्यान्य मन्त्र रत्न भी चाहे तो कोई भी धारण कर सकता है। सूर्य साधना के साथ किसी का कोई विरोध तो है ही नहीं बल्कि प्रत्यक्ष साधना के द्वारा उनका फल भी कई गुना बढ़ जायेगा। स्वामीजी सिंहस्थ-महाकुम्भ में महाकाल जोन में लगने वाले अपने "शब्दसूरती" आश्रम में नित्य इस योग का प्रशिक्षण देंगे।

राशिफल

श्री ॐ गं गणपतये नमः

संकेत सितारों के

पं. विनोद रावल
(ज्योतिर्विद)
फोन : 0734-2515326

मेष- यह माह आपके लिये व्यस्तता भरा रहेगा। रुके कार्य पूर्ण होंगे, मित्रों परिवार का सहयोग मिलेगा। सफलता मिलेगी, जीवन साथी का सहयोग, किंतु संतान की ओर से परेशनी एवं चिंता बनी रहेगी। लंबी यात्रा होगी। यश एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होगी। पुराने मित्र से भेंट होगी। धार्मिक एवं सामाजिक उत्सव में भाग लेंगे। नई योजना पर कार्य करेंगे, संगीत एवं योगा में रुचि रखेंगे। मकान, वाहन क्रय करेंगे।

वृषभ- यह माह आपके लिये उन्नति कारक रहेगा। नये संपर्क का लाभ मिलेगा। रुका हुआ धन प्राप्त होगा। भौतिक सुख-सुविधा में वृद्धि होगी। बड़े-बुजुर्ग के स्वास्थ्य की चिंता रहेगी। संतान की ओर से परेशानी होगी। वाद-विवाद से मन दुःखी रहेगा। धार्मिक कार्यों में रुचि रखेंगे। परिवार के साथ मौज, मस्ती में समय कटेंगा। अपनों से साझेदारी में सावधानी रखें। व्यापार से लाभ होगा, प्रेम प्रसंग बनेंगे, विवाह संबंध होगा।

मिथुन- यह माह आपके लिये वृद्धिदायक रहेगा। तीर्थ यात्रा के सुअवसर प्राप्त होंगे। राजकीय कार्यों से लाभ एवं सम्मान मिलेगा। मित्रों से सहयोग परंतु भाई परिवार से विवाद बना रहेगा। न्यायालयीन प्रकरणों में सफलता मिलेगी। शत्रु परास्त होंगे। भूमि भवन क्रय करेंगे। रुके कार्य पूर्ण होंगे, खर्च की अधिकता बनी रहेगी। शुभ कार्यों में अधिक खर्च करेंगे।

कर्क- यह माह आपके लिये सामान्य रहेगा। अपनो का सहयोग मिलेगा। बिना सोच-विचार कर कार्य न करें। मेहमानों का आगमन बना रहेगा। संतान के कार्यों से प्रसन्नता मिलेगी। धन लाभ राजकीय कार्य में सफलता मिलेगी। मन प्रसन्न होगा, साझेदारी से हानि होगी। सम्पत्ति खरीदने का मन बनायेंगे। व्यापार में उतार-चढ़ाव बना रहेगा। मानसिक अस्थिरता बनी रहेगी। मनोरंजन के कार्यों से लाभ होगा। जीवन साथी का सहयोग मिलेगा, भाई से कष्ट होगा।

सिंह - इस माह आपको शुभ समाचार प्राप्त होगा। धन लाभ होगा, नई-नई योजनाओं पर कार्य करेंगे। उन्नति के सुअवसर मिलेगा। मनचाही वस्तु प्राप्त होगी। विद्यार्थी वर्ग उच्च शिक्षा हेतु योजनाऐं बनायेंगे। खर्च अधिक होगा, अपनी वाणी के द्वारा बनते कार्य बिगाड़ लेंगे। स्वास्थ्य नरम-गरम रहेगा। आलस्य बना रहेगा, यात्रा के सुअवसर प्राप्त होंगे। अपनो से वैचारिक मतान्तर रहेंगे। चुनौती पूर्ण कार्य करेंगे।

कन्या- यह माह आपके लिये मिश्रित फलदायक रहेगा। स्थान परिवर्तन, पदोन्नति के अवसर मिलेंगे। खर्च की अधिकता रहेगी, साझेदारी में मतभेद होंगे। रुके कार्य पूण होंगे, वसूली के अवसर मिलेंगे। किंतु व्यय की अधिकता बनी रहेगी। नई योजना बनाकर मूर्तरूप देंगे, मौज-मस्ती भौतिक सुख-सुविधा, स्वजनों से मेल-मिलाप होगा। वाणी पर नियंत्रण रखें। आँखें मूंद कर विश्वास करना, परेशानी का कारण बनेगा। हड्डी एवं दाढ़-दांत के कष्ट के योग रहेंगे। धार्मिक यात्रा होगी। शिक्षा के क्षेत्र में सफलता मिलेगी।

तुला- यह माह आपके लिये उन्नति कारक रहेगा। रुका हुआ धन प्राप्त होगा। स्थान परिवर्तन होगा। अनावश्यक तनाव एंव यात्रा करना पड़ेगी। पद एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि के योग रहेंगे। अधूरे कार्य पूर्ण होंगे। धार्मिक यात्रा के योग रहेंगे। राजकीय पक्ष से लाभ एवं सम्मान मिलेगा। चुनौती भरे कार्यों में सफलता स्थायी सम्पत्ति में वृद्धि होगी। संतान से संबंधित कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। जीवन साथी का सहयोग प्राप्त होगा। विवाह-सम्बंध के योग रहेंगे।

वृश्चिक- यह माह आपके लिये मिलाजुला प्रभाव देने वाला होगा। मानसिक तनाव और निर्णय लेने में विलंब के योग रहेंगे। लंबी यात्रा के योग एवं यात्रा में परेशानी का सामना करना पड़ेगा। पांव में कष्ट का सामना करना पड़ेगा। शत्रु पर विजय प्राप्त होगी। धार्मिक यात्रा के योग रहेंगे। प्रेम प्रसंग में अनुकूलता आयेगी। शिक्षा के क्षेत्र में समझौते के साथ सफलता प्राप्त होगी।

धनु- यह माह आपके लिये समस्या एवं भागदौड़ से प्रभावित रहेगा। शुभ समाचार मिलेगा। आर्थिक सम्पन्नता मिलेगी। नौकरी के सुअवसर मिलेगे। शुभ कार्यों में रुचि जाग्रत होगी। जीवन साथी से अनुकूलता रहेगी। राजकीय पक्ष से पद-प्रतिष्ठा व सम्मान की प्राप्ति के योग रहेंगे। विवाह संबंध होने के योग रहेंगे। खर्च की अधिकता भी बनी रहेगी। संतान से संबंधी कार्यों में रुकावट के साथ सफलता मिलेगी।

मकर- यह माह आपके लिये शुभ समाचार प्रदान वाला रहेगा। लंबी यात्रा व स्थान परिवर्तन के योग रहेंगे। आय एवं आय के साधनों में वृद्धि होगी। विरोधी परास्त होंगे। जीवन साथी का चयन एवं उनसे संबंधी प्रकरणों में सफलता। विश्वास करना हानिकारक सिद्ध होगा। पाचन तंत्र, पेट, गैस से संबंधित कष्ट के योग रहेंगे। धार्मिक यात्रा के अवसर प्राप्त होंगे। स्थायी सम्पत्ति संबंधित प्रकरणों में अचानक लाभ होगा।

कुंभ- इस माह आपके अचानक धन लाभ, रुका हुआ कार्य पूर्ण होगा। संतान की ओर से सफलता के समाचार मिलेगे। पद प्रतिष्ठा में वृद्धि भौतिक सुख-सुविधा एवं यात्रा पर खर्च करेंगे। किंतु पिता की ओर से परेशानी अनुभव होगी एवं मन में (डर) अज्ञात बना रहेगा। विवाह संबंध होने के योग रहेंगे। विद्यार्थी वर्ग को मनचाही सफलता मिलेगी। विश्वास करना हानिकारक सिद्ध होगा, प्रियजनों से भेंट होगी।

मीन- यह माह आपके लिये उत्तम फलदायी रहेगा। लंबे समय से चल रहे विवाद सुलझेंगे। विरोधी पर विजय प्राप्त होगी। रुका हुआ धन प्राप्त होगा, राजकीय पक्ष से चिंता एवं भय बना रहेगा। व्यवसाय की अधिकता रहेगी। आर्थिक सम्पन्नता बढ़ेगी। आय के नये साधनों की प्राप्ति होगी। चुनौती भरे कार्यों में सफलता मिलेगी। मनोरंजन भौतिक सुख-सुविधा विवाह उत्सव में भाग लेंगे। मांगलिक धार्मिक कार्यों में खर्च होगा।

मालवा विभूति डॉ. प्यारेलाल श्रीमाल

उज्जैन। "श्री माहेश्वरी टाईम्स" के स्तम्भ "व्यंग्य का हुडदंग" के स्तम्भकार ख्यात व्यंग्य कवि हेमंत श्रीमाल एवं एलआईसी के विकास अधिकारी श्रीपाल जैन के पिता डॉ. प्यारेलाल श्रीमाल का 12 मार्च को देहावसान हो गया। आप 33 वर्षों से म.प्र. श्रीमाल हितैषी संघ के सचिव रहे। आप संगीत के क्षेत्र में सरस पंडित सहित कई प्रतिष्ठित अलंकरणों से अलंकृत थे। आप प्रतिष्ठित लेखक, गीतकार व समीक्षक भी थे। "श्री माहेश्वरी टाईम्स" परिवार भी आपको विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

श्रीमती चन्द्रकान्ता लोया

हैदराबाद। समाज सदस्य भगवानदास मुरलीधर लोया की माता श्रीमती चन्द्रकान्ता लोया का स्वर्गवास गत 10 फ़रवरी को 80 वर्ष की अवस्था में हो गया। आप अपने पीछे 2 पुत्र, 2 पुत्री, तथा पौत्र-पौत्री आदि का भरापूरा शोकाकुल परिवार छोड़ गई हैं।

श्रीमती गंगाबाई लड्ढा

भीलवाड़ा। समाज सदस्य प्रहलादराय व रतनलाल लड्ढा की शतायु माताजी श्री मती मती गंगा बाई लड्ढा का स्वर्गवास गत 24 फ़रवरी को हो गया। आप सरल स्वभाव व धार्मिक विचारों की वरिष्ठ महिला थीं।

श्रीमती गोदावरी बाई राठी

रतलाम। मशीनरी व्यवसायी नवल किशोर राठी की माता व रमेशचन्द्र राठी की भाभी श्रीमती गोदावरी बाई राठी का गत 10 मार्च को स्वर्गवास हो गया। आप अपने पीछे पौत्र-पौत्री आदि से भरापूरा शोकाकुल परिवार छोड़ गई हैं।

श्री गोपीकिशन आगीवाल

उदयपुर। समाज सेवी श्री गोपी किशन आगीवाल का स्वर्गवास गत 14 फ़रवरी को हो गया। श्री आगीवाल उदयपुर नगर माहेश्वरी सभा के शिक्षा एवं सांस्कृतिक मंत्री भी थे। आप अपने पीछे पत्नी एवं दो पुत्री का शोकाकुल परिवार छोड़ गये हैं।

श्री बालमुकुन्द जागेटिया

भीलवाड़ा। समाज सदस्य विनय कुमार के एवं अनिल कुमार व राजेंद्र कुमार जागेटिया के बड़े भ्राता श्री बालमुकुंद जागेटिया का असामाजिक निधन गत दिनों हो गया। श्री जागेटिया कुछ समय से अस्वस्थ थे।

श्री सत्यनारायण डालिया

निजामाबाद। वरिष्ठ समाज सदस्य श्री सत्यनारायण डालिया का स्वर्गवास गत 5 फ़रवरी को 74 वर्ष की अवस्था में हो गया। आप अपने पीछे भरापूरा शोकाकुल परिवार छोड़ गए हैं।

श्री सत्यनारायण पेड़ीवाल

उदयपुर। वरिष्ठ समाज सेवी श्री सत्यनारायण पेड़ीवाल का 70 वर्ष की अवस्था मे स्वर्गवास गत 11 फ़रवरी को हो गया। आप अपने पीछे दो पुत्र व पौत्र आदि का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

श्रीमती चन्द्रकांता माहेश्वरी

आगर मालवा। ख्यात समाज सेवी नगर महिला मण्डल अध्यक्ष एवं डॉ. राधेश्याम महेश व रविन्द्र कुमार की माता श्रीमती चन्द्रकांता माहेश्वरी (गिलड़ा) का निधन 4 फ़रवरी 2016 को हो गया। वे दान के मामले में हमेशा आगे रहती थीं। उल्लेखनीय है की अभी कुछ समय पहले अपने पास से नई साड़ियाँ निकाल कर और महिलाओ से एकत्रित कर उन्होंने 100 नई साड़ियाँ आदिवासी क्षेत्र में बँटवाई थीं।

श्री रामस्वरूप मूंदड़ा

शाहपुरा। समाज सदस्य मुरलीधर व गिरधर गोपाल मूंदड़ा के पिता श्री रामस्वरूप मूँदड़ा का 93 वर्ष की अवस्था में गत दिनों स्वर्गवास हो गया. आप श्रीजी महाराज सलेमाबाद के अनन्य भक्त थे।

श्रीमती गंगाबाई चांडक

लाखांदूर (भंडारा)। प्रतिष्ठित कपड़ा व्यवसायी गोपालदास चांडक की धर्मपत्नी श्रीमती गंगाबाई का 62 वर्ष की अवस्था में गत दिनों देहावसान हो गया। आप अपने पीछे पुत्र मनीष सहित पौत्र-पौत्री आदि का भरापूरा शोकाकुल परिवार छोड़ गई हैं।

श्री रामशंकर काबरा

शोभापुर। समाज सेवी श्री रामशंकर काबरा शोभापुर वालों का गत 8 फरवरी को दुःखद निधन हो गया। आप अखिल भारतीय माहेश्वरी महासभा के 15 वर्ष तक सदस्य मध्य क्षेत्रीय सभा के अध्यक्ष, जिला माहेश्वरी होशंगाबाद हरदा के 10 वर्ष तक अध्यक्ष तथा शोभापुर माहेश्वरी समाज के 10 वर्ष तक अध्यक्ष रहे। विभिन्न सामाजिक संस्थान कृषि उपज मंडी सेमरी, ग्राम पंचायत में उप सरपंच तथा जिला सहकारी बैंक में 15 वर्षों तक संचालक रहे। आप तीन पुत्र जगमोहन, मुरली राजेश तथा सूरत निवासी एक पुत्री आशा-दीपक सिंधी का भरापूरा शोकाकूल परिवार छोड़ गये हैं।

श्रीमती सरजूदेवी चाँडक

हैदराबाद। समाज सदस्य लक्ष्मीकांत चाँडक कोषाध्यक्ष माहेश्वरी समाज विलकुंभनगर की माता श्रीमती सरजूदेवी चाँडक धर्मपत्नी रामनिवास चाँडक का स्वर्गवास गत दिनों पैतृक निवास जिला नागौर, राजस्थान में हो गया। आप अपने पीछे भरापूरा शोकाकुल परिवार छोड़ गई हैं।

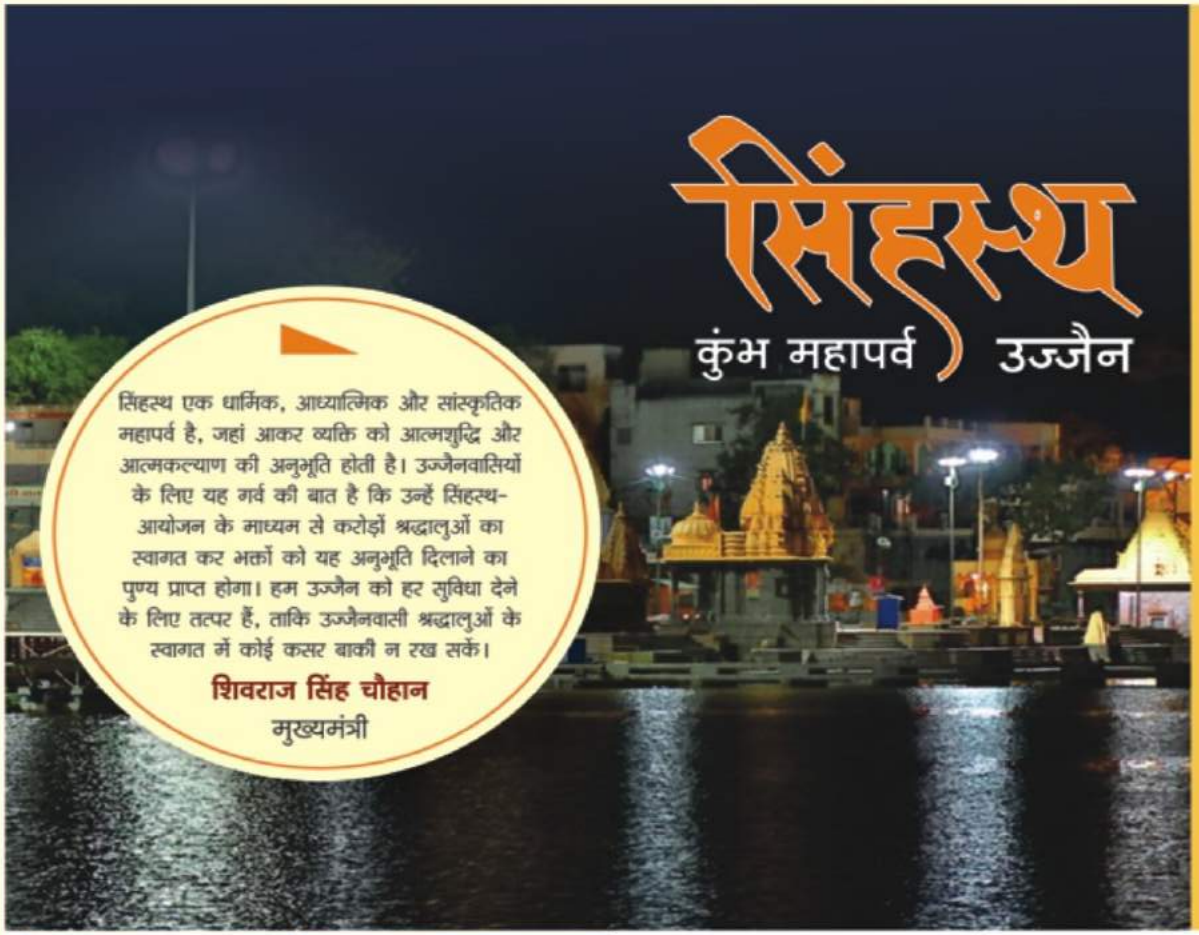

सिंहस्थ कुंभ महापर्व 2016 विक्रम संवत् 2073

सिंहस्थ नगरी उज्जैन

362 करोड़ की सड़कें, मेट्रो सिटी का अहसास

- सिंहस्थ के लिए सौ नई सड़कें तैयार
- 14 कि.मी. लम्बा उज्जैन-पश्चिम बायपास पूर्ण
- उज्जैन-मक्सी मार्ग पूर्ण
- इंजीनियरिंग कॉलेज रोड फोर लेन हुई
- एम.आर. - 10 रोड फोर लेन हुई
- एम.आर. - 5 रोड फोर लेन हुई
- भरतपुरी से नानाखेड़ा मार्ग फोर लेन हुआ
- सभी मार्गों पर सेन्ट्रल लाइटिंग पूर्ण
- सभी सड़कों की इनर रिंग रोड से कनेक्टिविटी पूर्ण

अतिथि देवो भवः
की संस्कृति के साथ
उज्जैन
मध्यप्रदेश

क्षिप्रा के तट पर अमृत का मेला

22 अप्रैल से 21 मई 2016

सिंहस्थ
कुंभ महापर्व 2016
विक्रम संवत् 2073

प्रिय श्रद्धालुगण,

यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे मध्यप्रदेश के साढ़े सात करोड़ नागरिकों की ओर से आपको सिंहस्थ 2016 के पावन अवसर पर आमंत्रित करने का अवसर मिला है। श्रद्धा एवं विश्वास का यह महापर्व पावन नगरी उज्जैन में 22 अप्रैल से 21 मई 2016 तक आयोजित होगा। सिंहस्थ जीवन का वह एकमात्र अवसर है जहाँ स्वयंभू महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग के दर्शन, मोक्षदायी पुण्य सलिला क्षिप्रा में स्नान तथा आनंददायी आध्यात्मिक संगम सब कुछ एक साथ संभव हो पाता है।

सिंहस्थ में अनेक देशों तथा पूरे भारत से श्रद्धालु आते हैं। क्षिप्रा के अमृत से साक्षात्कार आपके लिए एक अविस्मरणीय अनुभव होगा।

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

आस्था एवं अध्यात्म का अदभुत उत्सव

सिंहस्थ

कुंभ महापर्व उज्जैन

22 अप्रैल - 21 मई, 2016

स्नान पर्व

1.	सिंहस्थ प्रथम पर्व स्नान	- 22 अप्रैल, 2016
2.	पंचशनि यात्रा	- 1 से 6 मई, 2016
3.	वरुथिनी एकादशी	- 3 मई, 2016
4.	पर्व स्नान	- 6 मई, 2016
5.	अक्षय तृतीया	- 9 मई, 2016
6.	शंकराचार्य जयंती	- 11 मई, 2016
7.	वृषभ संक्रांति	- 15 मई, 2016
8.	मोहिनी एकादशी	- 17 मई, 2016
9.	प्रदोष पर्व	- 19 मई, 2016
10.	नृसिंह जयंती पर्व	- 20 मई, 2016
11.	शाही स्नान	- 21 मई, 2016

पवित्र पंचक्रोशी यात्रा एक से 6 मई 2016 तक होगी।

D-77999

म.प्र. माध्यम/77822/2015

क्षिप्रा के तट पर अमृत का मेला

विस्तृत जानकारी के लिए वेबसाइट देखें : www.simhasthujjain.in www.mp-tourism.com/simhastha-kumbh

RNI-MPHIN/2005/14721
Po.-Malwa Division/244/2013-2016
Despatch Date - 02 April, 2016

If Undelivered Please Return To
SRI MAHESHWARI TIMES
90, Vidya Nagar (Behind Tedi Khajur Dargah),
Sanwer Road, UJJAIN (M.P.) - 456010
Ph. 0734-2526561, 2526761, Mo. : 94250 91161
E-mail : smt4news@gmail.com

FREE REGISTRATION AT www.srimaheshwarimelapak.com